क्सपियर विश्व-साहित्य के गौरव, अंग्रेजी भाषा के अद्वितीय नाटककार शेक्सपियर का जन्म २६ अप्रैल, १५६४ ई० में स्ट्रैटफ़ोर्ड-ग्रान्-ऐवोन नामक स्थान में हुआ। उसकी बाल्यावस्था के विषय में बहुत कम ज्ञात है। उसका पिता एक किसान का पुत्र था, जिसने अपने पुत्र की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध भी नहीं किया। १५८२ ई० में शेक्सपियर का विवाह अपने से आठ वर्ष बड़ी ऐनहैथवे से हुआ और सम्भवतः उसका पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक नहीं था। महारानी ऐलिज़ावेथ के शासनकाल में १५८७ ई० में शेक्सपियर लन्दन जाकर नाटक कम्पनियों में काम करने लगा। हमारे जायसी, सूर और तुलसी का प्रायः समकालीन यह कवि यहीं आकर यशस्वी हुआ और उसने अनेक नाटक लिखे, जिनसे उसने धन और यश दोनों कमाये। १६१२ ई० में उसने लिखना छोड़ दिया और अपने जन्मस्थान को लौट गया और शेष जीवन उसने समृद्धि तथा सम्मान से विताया। १६१६ ई० में उसका स्वर्गवास हुआ।

इस महान् नाटककार ने जीवन के इतने पहलुओं को इतनी गहराई से चित्रित किया है कि वह विश्व-साहित्य में अपना सानी सहज ही नहीं पाता! मारलो तथा बेन जानसन जैसे उसके समकालीन कवि उसका उपहास करते रहे, किन्तु वे तो लुप्त-प्रायः हो गये, और यह कविकुल-दिवाकर आज भी देदीप्यमान है।

शेक्सपियर ने लगभग ३६ नाटक लिखे हैं, कविताएँ अलग।

उसके कुछ प्रसिद्ध नाटक हैं—जूलियस सीज़र, ऑथेलो, मैकबैथ, हैमलेट, लियर, रोमियो जूलियट (दुःखान्त); ग्रीष्म-मध्यरात्रि का स्वप्न, वेनिस का सौदागर, बारहवीं रात, तिल का ताड़ (मच एडू अबाउट नथिंग), शीतकाल की कथा, तूफ़ान (सुखान्त)। इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक नाटक हैं तथा प्रहसन भी हैं। प्रायः उसके सभी नाटक प्रसिद्ध हैं।

शेक्सपियर ने मानव-जीवन की शाश्वत भावनाओं को बड़े ही कुशल कलाकार की भाँति चित्रित किया है। उसके पात्र आज भी जीवित दिखाई देते हैं। जिस भाषा में शेक्सपियर के नाटकों का अनुवाद नहीं है वह भाषाओं में कभी नहीं गिनी जा सकती।

भूमिका

'जैसा तुम चाहो' शेक्सपियर का एक सुखांत नाटक है। इसे उसने सम्भवत: १५९९ ई० के उत्तरार्द्ध में या १६०० ई० के पूर्वार्द्धकाल में लिखा था। शेक्सपियर के नाट्यजीवन विषयक समय में यह उसके दूसरे काल की रचना है। नाटक का मूलस्रोत एक फ्रांसीसी उपन्यास 'रोज़ालिन्ड इयुफुएस गोल्डेन लिगेसी' (Rosalynde Euphues Golden Legacie) से लिया गया है। जिसमें उपादेशात्मक रूप से बताया गया है कि विपत्ति का अंत सुखमय होता है। यह एक प्रेमकथा है। प्रतिकार से संधि भली है और भलाई की ही अंत में जीत होती है।

कथानक यों हैं—ऑरलेन्डो एक सुंदर युवक, स्वर्गीय सर रोलेन्ड का पुत्र, अपने भाई ओलिवर का संरक्षित, दुर्व्यवहार से रखा गया। उसने विद्रोह किया तो वड़े भाई ने उसके वध की तैयारी की। ऑरलेन्डो का मल्लयुद्ध ड्यूक के दरवारी मल्ल चार्ल्स से हुआ। ड्यूक फ्रैडरिक अपने भाई का राज्य हड़प वैठा था, उसकी पुत्री सीलिया और निर्वासित ड्यूक की पुत्री रोज़ालिन्ड की वड़ी प्रीत थी। उन्होंने ऑरलेन्डो की सुकुमारता देख युद्ध रोकना चाहा। परन्तु ऑरलेन्डो ने चार्ल्स को हरा दिया। रोज़ालिन्ड ने उसे कण्ठहार दिया। दोनों में प्रेम हो गया।

ड्यूक फ्रैडरिक ने रोज़ालिन्ड को देश निकाला दिया। रोज़ालिन्ड चरवाहा वनी, पुरुष-रूप धर लिया, सीलिया देहाती स्त्री वनी। दोनों निर्वासित ड्यूक के वन में चली गईं। इनके साथ विदूषक टचस्टोन भी गया।

उधर ऑरलेन्डो ने भी भाई के कुचक्रों से तंग आ, पिता के पुराने सेवक आदम के साथ घर छोड़ा और दोनों उसी अर्दन वन पहुँचे।

प्रेम में पागल ऑरलेन्डो ने अनेक प्रेमकविताएँ लिखीं। पेड़ों पर कविताएँ लटका दीं। रोज़ालिन्ड ने उन्हें पढ़ा। एक दिन वह अपने पुरुष-वेश में उससे मिली, वह पहँचान न सका। रोज़ालिन्ड ने कहा : 'मुझे प्यार करो तो तुम्हारी प्रिया से मिला दूँगा।'

ड्यूक फ्रैडरिक के दोषारोपण से डरकर बड़ा भाई ओलिवर भी घर छोड़ भागा और वहीं पहुँचा। ड्यूक ने उसकी संपत्ति हड़प ली। वन में वह सो रहा था कि भूखी शेरनी ने आ घेरा। ऑरलेन्डो ने सिंहनी पर हमला कर भाई के प्राण बचा डाले और स्वयं घायल हो गया। अपने रक्त से सना रूमाल उसने चरवाहे को भेज दिया। रोज़ालिन्ड उसे देख मूर्च्छित हो गई।

अंत में दोनों का मिलन हुआ। सीलिया और ओलिवर भी मिल गये। टचस्टोन ने भी एक देहातिन से विवाह कर लिया। गैनीमीड़ यानी रोज़ालिन्ड की प्रसन्नता तब पूर्ण हो गई जब ड्यूक फ्रैडरिक वन में बड़े भाई के पास गया और उसने पश्चात्ताप करते हुए क्षमा माँगी।

यों सुख से मिलन सम्पन्न हो गया।

'जैसा तुम चाहो' शेक्सपियर का बहुत ही उत्कृष्ट सुखांत नाटक माना जाता है। इसमें हास्य भी है और मस्ती भी। सौंदर्य तो बिखरा पड़ा है। शेक्सपियर ने अपने समय के सुखांत

नाटकों की परम्परा के आगे बढ़कर ही अपनी रचना को उत्कृष्ट बनाया। प्रस्तुत नाटक में नायक से अधिक महत्त्व इसकी नायिका को दिया गया है। कहना उचित होगा कि नारी-चित्रण नाटककार ने अधिक सफलता से किया है।

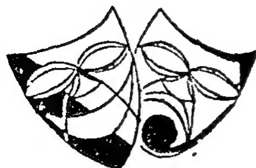
विदूषक का पात्र इस नाटक में बहुत ही महत्त्वपूर्ण है क्योंकि वह वास्तव में बड़ा चतुर व्यक्ति है। प्रस्तुत नाटक में प्रकृति का बहुत सामीप्य है।

इस नाटक का अनुवाद करना बहुत कठिन कार्य्य रहा है। एक तो हास्य में शेक्सपियर ने अंगरेज़ी भाषा के दो अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग किया है, जिसे दूसरी भाषा में उतारना असम्भव-सा बन जाता है। दूसरे गीतों में कुछ ऐसे 'आनन्द-सूचक' शब्दों का या ध्वनियों का प्रयोग किया गया है, जिनका हिन्दी में पर्य्याय है ही नहीं। इसलिये मैंने मूलार्थ दे दिया है—गद्य में, ताकि पाठक नाटककार के मूल से जानकारी प्राप्त कर ले, और वैसे उसी भावार्थ को लेकर गीत भी लिख दिये हैं ताकि वैसे नाटक पढ़ते समय कोई व्याघात उपस्थित नहीं हो।

इस नाटक के गीतों में बहुत-से ऐसे संदर्भ भी आते हैं जो काव्य के दृष्टिकोण से हिन्दी में अनुवाद कर देने पर पाठक को आनन्द नहीं दे सकते, जैसे क्लियोपैट्रा इत्यादि के उल्लेख ऐसे ही हैं, अतः उन्हें केवल मूलार्थ में दे दिया गया है।

मेरी अत्यन्त सावधानी के बाद भी अवश्य अभाव रह गये होंगे जिनके लिये मैं शेक्सपियर के प्रेमियों से यही चाहूँगा कि मुझे भविष्य के लिये और भी सावधान कर दें।

—रांगेय राघव



पात्र-परिचय

ड्यूक : निर्वासित

फ्रैडरिक : उसका भाई, जिसने उसका राज्य हड़पा है ।

अमीन्स, जेक्स } निर्वासित ड्यूक के सेवक लॉर्ड

लेब्यू : फ्रैडरिक का दरबारी

चार्ल्स : फ्रैडरिक का मल्ल

ओलिवर, जेक्स, ऑरलेन्डो } सर रोलेन्ड दे बोयस के पुत्र

आदम, डेन्निस } ओलिवर के नौकर

टचस्टोन : विदूपक

सर ऑलीवर मारटेक्सट : एक पादरी

कोरिन, सिल्वियस } चरवाहे

विलियम : एक ग्रामीण, ऑड्री का प्रेमी

रोज़ालिन्ड : ड्यूक की पुत्री

सीलिया : फ्रैडरिक की पुत्री

फीबी : एक चरवाहिन

ऑड्री : एक ग्रामीण कुलटा

[लॉर्ड, पेज तथा सेवक इत्यादि ।]

लॉर्ड—सामंत; पेज—विशेष सेवक लड़के ।

पहला अंक

दृश्य १

[ऑरलेन्डो और आदम का प्रवेश]

ऑरलेन्डो: जहाँ तक मुझे याद आता है, आदम ! मेरे पिता ने मेरे लिये सिर्फ़ एक हज़ार की छोटी-सी संपत्ति छोड़ी थी और जैसा कि तुम कहते हो उन्होंने मेरे भाई को मेरे उचित पालन-पोषण का उत्तरदायित्व दिया था। यही तो मेरे दुख और चिंताओं का कारण है। खबर आई है कि जेक्स़ को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये विश्वविद्यालय में भर्त्ती करवा दिया गया है और वह वहाँ बड़ी उन्नति भी कर रहा है। लेकिन जहाँ तक मेरा सवाल है, मुझे घर पर ही रखा जा रहा है और देखते ही हो कि मुझसे व्यवहार भी अच्छा नहीं किया जा रहा। मुझे कितना असंतोष है जानते हो ? मुझ जैसे संभ्रांत कुलीन व्यक्ति को क्या बैलों की भाँति पाला जाना चाहिये ? उसके घोड़े भी मुझसे अधिक अच्छी तरह रखे जाते हैं। उनको तो समय पर न केवल अच्छा खाना दिया जाता है, बल्कि अच्छे-अच्छे सवार उनकी देखभाल करते हैं, उन्हें सिखाते हैं और एक मैं उसका भाई हूँ, जिसका समय रसहीन बेकारी में बीतता है, मैं तो कहता हूँ कि मेरी हालत एक जानवर से भी गई-बीती है। न तो वह मुझे अपने मन से कोई चीज़ देता है कि मेरा मन भर जाये, वरन् उल्टे लगता है, उसका व्यवहार ही ऐसा है कि मेरी प्राकृतिक वृत्तियों तक को मुझसे छीनने में प्रवृत्त-सा प्रतीत होता है। उसका वस चले तो वह

क्या न कर डाले ? खेतिहर मजूर का-सा तो मुझे भोजन दिया जाता है। क्या मैं उसका ऐसा ही भाई हूँ ? मुझे वह अशिक्षित रखता है इसका भी कारण अवश्य है। वह चाहता है कि मेरे भीतर जो अच्छे गुण हैं, वे विकास प्राप्त ही नहीं कर पायें। आदम ! मुझे इससे बहुत दुख होता है। मेरे पिता की आत्मा मेरे भीतर जाग्रत है और वह इस दासत्व के विरुद्ध विद्रोह कर उठती है। मैं इस सबको अब और नहीं सह सकता, मैं समझ रहा हूँ कि अभी इस सबसे दूर जाने का मेरे पास कोई उपाय नहीं है, फिर भी इसको सहते रहना मेरे लिये बहुत ही दुश्कर है।

आदम : यह लो। वह देखो। तुम्हारा भाई—मेरा मालिक आ रहा है।

ऑरलेन्डो : आदम ! तुम हट जाओ ज़रा यहाँ से। और देखना मुझसे वह कैसा बुरा व्यवहार करता है।

[ओलिवर का प्रवेश]

ओलिवर : कहिये जनाब ! यहाँ क्या हो रहा है ?

ऑरलेन्डो : कुछ नहीं। मुझे सिखाया ही क्या गया है जो कुछ कर भी सकूं ?

ओलिवर : अच्छा ! आपको हो क्या गया है ज़रा बताइये न ?

ऑरलेन्डो : मुझे परमात्मा ने आपका अयोग्य भाई बनाया है किंतु मैं निठल्ला हूँ। और आपके कारण।

ओलिवर : वाह क्या खूब ! जाओ, जाओ ! कुछ करो-धरो। मेरी आँखों से परे हो जाओ।

ऑरलेन्डो : क्या मैं तुम्हारे सूहरों की देखभाल करूँ और उनके साथ मुँह डाल कर भूसा चबाऊँ ? आखिर मैंने कौन-सा पैतृक धन फूंक डाला है कि मुझे इतनी दरिद्रता का प्रसाद मिला है ?

ओलिवर : तुम जानते हो, तुम कहाँ हो ?

ऑरलेन्डो : आपके बाग़ में श्रीमान् ! खूब जानता हूँ ।

ओलिवर : यह भी मालूम है तुम किससे बातें कर रहे हो ?

ऑरलेन्डो : खूब जानता हूँ कि आपके सामने हूँ । और यह भी जानता हूँ कि आप मेरे बड़े भाई हैं । लेकिन आपको भी तो मुझसे भाई जैसा व्यवहार करना चाहिये ? संसार की सभ्य जातियों के नियम से आप मेरे आदर के पात्र हैं, क्योंकि आपने मुझसे पहले जन्म लिया है, किंतु यही परम्परा क्या मुझ पर, मेरे खून पर लागू नहीं होती ? भले ही हम बीस भाई होते, लेकिन होता तो फिर भी मेरी रगों में उसी बाप का खून ! और यह क्या मैं नहीं मानता कि बड़े होने के नाते आपका दरजा मेरे लिये पिता के ही समान है ?

ओलिवर : अरे लड़के ! इतनी बातें ?

ऑरलेन्डो : वाह-वाह ! बड़े भाई हैं, मगर बातें तो बालकों जैसी करते हैं !

ओलिवर : ओ बदमाश ! क्या तू मुझ पर हाथ उठायेगा ?

ऑरलेन्डो : मैं बदमाश नहीं हूँ, सर रोलेन्ड दे बोयस का कनिष्ठ पुत्र हूँ। वे मेरे पिता थे और जो यह कहता है कि मेरे पिता ने गुण्डों को जन्म दिया, वही असल में तिगुना गुण्डा है । अगर तुम मेरे बड़े भाई न होते तो इस हाथ से तुम्हारा गला पकड़ कर दूसरे से तुम्हारी नापाक जीभ बाहर खींच लेता जिससे तुमने ऐसे शब्द कहे। तुमने मुझे नहीं, अपने आपको गाली दी है । (गला पकड़ता है ।)

आदम : (बढ़ कर) मेरे आदरणीय मालिको ! तनिक शांति रखो ! यह तो याद करो कि आपके पिता कैसे थे, और आप उन्हीं के पुत्र हैं । एक दूसरे से स्नेह करें, प्रेम करें ।

ओलिवर : छोड़ो मुझे !

ऑरलेन्डो : मेरी जब इच्छा होगी तब छोड़ूंगा । मेरे पिता ने वसीयत में

कहा था कि तुम मेरी ज़िम्मेदारी सँभालोगे, पढ़ाओगे, लिखाओगे लेकिन तुमने मुझसे गँवार जैसा वर्ताव किया है ताकि मैं सारे सुसंस्कृत गुणों से दूर रह जाऊँ। आज मेरे स्वर्गीय पिता की आत्मा क्षोभ से व्याकुल हो गई है और मेरा रक्त क्रोध से खौल रहा है। मैं कभी ऐसा दुर्व्यवहार सहन नहीं कर सकूँगा। अब और सहना असंभव है। यही उचित है कि तुम मुझे उन्नति करने का अवसर दो ताकि मैं भी समाज में मानवीय गुणों का अर्जन कर सकूँ, सुसंस्कृत बन सकूँ। या फिर मुझे मेरे लिये पिता द्वारा वसीयत किये गये १००० सिक्कों का वह थोड़ा-सा धन ही दे दो, जिससे मैं विदेशों में चला जाऊँ और अपने भाग्य की परीक्षा करूँ।

ओलिवर : और जब वह धन चुक जायेगा तब क्या करोगे ? मैं कहता हूँ घर चलो। मैं स्वयं तुमसे छूटना चाहता हूँ, जो परेशानी तुम्हारे कारण है उससे बचने का पक्का इरादा कर चुका हूँ। पिता की वसीयत में जो धन कहा गया है उसका हिस्सा तुम्हें मिल जायेगा। कृपा करो ! मुझे छोड़ दो !

ऑरलेन्डो : अब और तुम्हें रोकने की मेरी इच्छा नहीं है। रोका भी इसीलिये था कि अपना हिस्सा ले सकूँ। (छोड़ता है।)

ओलिवर : (आदम से) ओ बुड्ढे कुत्ते ! तू भी इसके साथ ही निकल जा।

आदम : क्या यही 'बुड्ढा कुत्ता' मेरी इतनी सेवाओं का इनाम है ? ठीक ही है, एक तरह से मैं हूँ भी बुड्ढा कुत्ता, क्योंकि इतनी ईमानदारी से तुम्हारी सेवा करते हुए ही मेरे दाँत गिर चुके हैं। मेरे स्वर्गीय स्वामी ! भगवान तुम्हारा साथ दें। तुम्हारी आत्मा को शांति दें। तुमने तो कभी मुझसे ऐसे नहीं कहा था !

[ऑरलेन्डो और आदम का प्रस्थान]

ओलिवर : अच्छा ! तुम इतने बढ़ गये ? अच्छी बात है। ले भी लेगा। मैं इस गुस्ताखी का इलाज कर के रहूँगा और हज़ार सिक्के भी नहीं दूंगा। डेन्निस !

[डेन्निस का प्रवेश]

डेन्निस : सरकार ने मुझे बुलाया ?

ओलिवर : क्या ड्यूक का पहलवान चार्ल्स ही न मुझसे मिलने आया था ?

डेन्निस : हाँ सरकार ! वह दरवाज़े पर खड़ा बाट जोह रहा है। वह आपसे मिलने की आज्ञा चाहता है।

ओलिवर : बुलाओ उसे। (डेन्निस का प्रस्थान) यही तरीका सबसे अच्छा रहेगा। कल ही कुश्ती रखनी चाहिये।

[चार्ल्स का प्रवेश]

चार्ल्स : श्रीमान् को प्रणाम करता हूँ।

ओलिवर : आइये श्रीमान् चार्ल्स ! नये ड्यूक के दरबार की नयी खबर क्या है ?

चार्ल्स : वैसे तो कोई विशेष नहीं। वही चर्चा कि नये ड्यूक ने अपने बड़े भाई पुराने ड्यूक को निर्वासित कर दिया और पुराने ड्यूक के साथ उसके तीन-चार खास सामंत अपने आप निर्वासन में चले गये हैं। नये ड्यूक ने उनकी सम्पत्ति को भी ज़ब्त कर लिया है और इस तरह सदा ही घूमते रहने का उसने उन्हें मौका दे दिया है।

ओलिवर : क्या आप बता सकते हैं कि बड़े ड्यूक की लड़की रोज़ालिन्ड भी अपने पिता के साथ ही निर्वासित कर दी गई है ?

चार्ल्स : नहीं-नहीं। सीलिया है न ? नये ड्यूक की पुत्री ! वह उसे प्यार करती है। उनका पालन-पोषण एक साथ ही हुआ है। अगर रोज़ालिन्ड को देश-निकाला होता तो सीलिया अवश्य उसके पीछे

चल देती या जान दे देती। रोज़ालिन्ड तो घर पर ही है और उसका चाचा नया ड्यूक उसे उतना ही चाहता है जितना अपनी पुत्री को। आज तक शायद कभी दो लड़कियों में इतना स्नेह नहीं रहा, जितना रोज़ालिन्ड और सीलिया में है।

ओलिवर : पुराने ड्यूक कहाँ रहेंगे ?

चार्ल्स : कुछ तो कहते हैं कि वह अर्दन के जंगल में बस भी गया है। उसके साथ उसके बहुत-से मसखरे भी हैं। जैसे पहले इंगलैंड का रोबिनहुड रहता था न ? कहा जाता है रोज़ उसके पास कई नौजवान इकट्ठे होते हैं और अपना समय ऐसे ही व्यतीत करते हैं जैसे कभी मनुष्य चिंताहीन स्वर्ण युग में किया करते थे।

ओलिवर : क्या तुम कल नये ड्यूक के सामने कुश्ती लड़ोगे ?

चार्ल्स : माता मेरी की सौगन्ध ! श्रीमान् ! मैं बिल्कुल तैयार हूँ। मैं तो आपको कुछ बताने आया था। मुझसे गुप्त रूप में ही कहा गया है कि आपका छोटा भाई ऑरलेन्डो मुझे कुश्ती लड़ने की चुनौती देना चाहता है ताकि मुझे हरा सके। सच कहता हूँ श्रीमान् ! कल मैं अपनी प्रतिज्ञा रखने के लिये मल्लयुद्ध करूँगा और इसलिये अपने सामने आने वाले की हड्डी-पसली चूर किये बिना नहीं छोड़ूंगा। आपका भाई छोटा है, नाज़ुक है और आपके प्रेम के बस में होकर मैं उसे हराना भी नहीं चाहता। लेकिन अगर वह सामने आ जायेगा तो अपनी इज्जत रखने के लिये मुझे उसे हराना ही होगा। मुमकिन है वह चोट खा जाये। इसी दाक्षिण्य के कारण मैं सीधा आपके पास आया हूँ ताकि सारी परिस्थिति आपको समझा दूं। कृपा करके आप उसके इरादे को बदल दें और समझा दें कि इसमें उसकी कोई मानहानि नहीं है क्योंकि यह सब उसका ही काम है, जो मेरी इच्छा के बिल्कुल विरुद्ध है।

ओलिवर : चार्ल्स ! तुम्हारे स्नेह का यह उपकार मैं स्वीकार करता हूँ। और समय इसका फल भी दिखायेगा। मैं अपने भाई का इरादा समझता हूँ और मैंने तो जहाँ तक बन सका उसे इस रास्ते से हटाने की भी कोशिश की, तरकीबें भी कीं। लेकिन वह तो बड़ा पक्का है। चार्ल्स ! वह फ्रांस का सबसे हठी युवक है। उसका हृदय बड़ा ही महत्त्वाकांक्षी है और हर आदमी की उन्नति और गुणों को देख कर वह मन ही मन जलता है। क्या बताऊँ तुम्हें ? वह तो छिपे-छिपे मेरे विरुद्ध भी षड्यंत्र रचता रहता है। मैं तो खास भाई हूँ। उसके विषय में जैसे तुम ठीक समझो वैसा करो। उसकी गर्दन तोड़ो या उँगली, मेरी बला से। लेकिन एक बात याद रखो। अगर वह कहीं चोट खाये बिना निकल गया और पराजित भी होने का अपमान पा गया तो समझ लेना वह छोड़ेगा नहीं। ज़हर देगा, किसी चालबाज़ी से तुम्हें घेरेगा, यहाँ तक कि किसी न किसी तरह से तुम्हारी जान लिये बिना न छोड़ेगा। यह कहते हुए मेरा हृदय टूक-टूक होता है कि आज उसके बराबर का बदमाश और उसका-सा तन्दुरुस्त गुण्डा कोई जीवित ही नहीं है। इसमें कोई शक नहीं कि वह मेरा भाई है, लेकिन अगर उसका वास्तविक रूप में तुम्हारे सामने प्रस्तुत करूँ तो मुझे शर्म से रोना पड़ेगा और तुम आश्चर्य्य से चकित रह जाओगे।

चार्ल्स : तब तो यह बहुत ही अच्छा हुआ कि मैं आपके पास सीधा आ गया। अगर कल ऑरलेन्डो मुझसे कुश्ती लड़ने आता है तो मैं उसे अच्छी सज़ा दूंगा। अगर वह अखाड़े से ज़िंदा निकल गया तो मैं फिर लड़ना ही छोड़ दूंगा। भगवान आपका भला करें।

ओलिवर : विदा ! भाई चार्ल्स विदा !

[चार्ल्स का प्रस्थान]

ओलिवर : अब मैं ऑरलेन्डो के दुस्साहसी यौवन को उभारूँगा कि वह चार्ल्स से भिड़ जाये। कल वह मरेगा, मुझे पूरी आशा है। मैं नहीं जानता कि क्यों सबसे अधिक घृणा मुझे उसी से है, जब कि अशिक्षित होते हुए भी वह इतना सुसंस्कृत है। सभी उसे प्यार करते हैं, ताज्जुब होता है, उसमें एक संभ्रांत व्यक्ति के सारे गुण हैं। यहाँ तक कि मेरे ही आदमी उसे इतना चाहते हैं कि मैं तो दिखाई भी नहीं देता ! लेकिन चार्ल्स निश्चय ही उसे मार डालेगा और मेरे रास्ते की सारी बाधाएँ भी दूर हो जायेंगी। अब मैं चलता हूँ ताकि ऑरलेन्डो को भड़का सकूँ और वह चार्ल्स से कुश्ती लड़ना स्वीकार कर ले।

दृश्य २

[सीलिया और रोज़ालिन्ड का प्रवेश]

सीलिया : मानो बहन, विनती करती हूँ, मेरी रोज़ालिन्ड ! तुम प्रसन्न क्यों नहीं होतीं ?

रोज़ालिन्ड : सीलिया, मेरी प्यारी ! जितनी प्रसन्नता मुझमें है, मैं तो उससे भी अधिक दिखाने का प्रयत्न करती हूँ। पर तुम कहती हो कि मैं और भी हर्षित होऊँ। अपने निर्वासित पिता को भूल जाऊँ। जब तक कोई ऐसी तरकीब नहीं बताओगे, कहो न, तब तक कैसे मैं इतनी अधिक प्रसन्न हो सकती हूँ ?

सीलिया : तो क्या तुम यही नहीं कहती हो कि मैं तुम्हें जितना प्यार करती हूँ, उतना तुम मुझे नहीं करते ? यदि तुम्हारे पिता—ताऊ ने तुम्हारे चाचा—मेरे पिता ड्यूक को निर्वासित किया होता तो मैं तुम्हारे पिता को ही अपना पिता समझती। यदि मेरे प्रति तुम्हारा प्यार सच्चा है तो तुम्हें मेरे पिता को ही अपना पिता समझना चाहिये।

रोज़ालिन्ड : अच्छी बात है, मैं अपना दुख भूल जाऊँगी और तुम्हारे आनंद में ही अपना सुख समझूंगी।

सीलिया : तुम जानती हो कि मैं अपने पिता की इकलौती संतान हूँ और अब यह भी आशा नहीं कि उनके और संतान होगी। जब मेरे पिता नहीं रहेंगे तब मेरे स्थान पर तुम ही उनकी उत्तराधिकारिणी बनना क्योंकि इस प्रकार जो कुछ मेरे पिता ने तुम्हारे पिता से छीन लिया है वह मेरे स्नेह के कारण तुम्हें वापिस मिल जायेगा। मैं वचन देती हूँ। यदि मैं अपना वचन तोड़ दूं तो राक्षसी हो जाऊँ। इसलिये मेरी प्रिय रोज़ालिन्ड, प्रसन्न हो जाओ।

रोज़ालिन्ड : प्रिय बहिन ! मैं आयंदा सदैव खुश रहने का वादा करती हूँ। और नये-नये आनंद खोजा करूँगी। अच्छा बताओ तो ! प्रेम के सम्बन्ध में तुम्हारे क्या विचार हैं ?

सीलिया : मैं निश्चय ही यह मानती हूँ कि समय व्यतीत करने का यह सर्वश्रेष्ठ साधन है, किन्तु किसी पुरुष को सच्चे हृदय से प्यार न कर बैठना। यहाँ तक कि क्रीडामिस भी सीमा का उल्लंघन न कर जाना ताकि एक अबोध लज्जा से ही तुम ससम्मान सदैव अपनी रक्षा कर सको।

रोज़ा० : तो फिर अब मन कैसे लगे ?

सीलिया : आओ ! यहाँ बैठ कर हम सद्गृहिणी भाग्य की देवी[1] का उपहास करें और उसको उसके चक्र के पास से भगा दें, ताकि भविष्य में मनुष्यों को जब दान दे तब अधिक ईमानदारी और पक्षपातहीनता से काम कर सके।

रोज़ा० : आह ! यदि हम इतना ही कर सकतीं ! उसकी देन में तो

१. भाग्य की देवी सद्गृहिणी मानी जाती थी, और वह एक चक्र निरन्तर घुमाती रहती थी। वह अंधी थी।

बहुत बड़ा पक्षपात और अन्याय भरा है। और उस महादान करने वाली अंधी ने स्त्रियों के विषय में बहुत ही अधिक पक्षपात दिखाया है।

सीलिया : यह तो बिल्कुल सच है क्योंकि जिसे उसने सुंदरता दी उसे गुण नहीं दिये और जो गुणवती बनी वह सुंदरी नहीं बनी।

रोजालिन्ड : नहीं ! अब तो तुमने भाग्य और प्रकृति के कार्यों में गड़-बड़ कर दी। भाग्य की देवी केवल उपहार देती है जब कि आकार-प्रकार देना प्रकृति का कार्य्य है।

[टचस्टोन का प्रवेश]

सीलिया : नहीं ! जब प्रकृति किसी प्राणी को सुंदर बनाती है तब किस्मत ऐसी निकम्मी हो जाती है कि उसे आग में जला कर कुरूप कर देती है। प्रकृति ने हमें भाग्य का उपहास करने के लिये बुद्धि दी है, परंतु क्या भाग्य ने विदूषक को भेज कर हमारी बातचीत को एकदम विराम नहीं लगा दिया ?

रोजालिन्ड : निस्संदेह भाग्य की देवी प्रकृति से अधिक सबल है। यहीं देखो न ? उसने विदूषक भेज कर हमारे वाक्चातुर्य्य को रोक लगा दी है।

सीलिया : संभवतः यह प्रकृति ही है, भाग्य की देवी नहीं, जिसने उसे हमारे पास भेजा है। यह देख कर कि हमारा जन्मजात ज्ञान अल्प है प्रकृति ने विदूषक भेजा है। ताकि उसकी कसौटी पर हम अपनी बुद्धि को निखार लें। मनुष्य की बुद्धि वास्तव में विदूषक के उपहासों से ही तीव्र होती है। ऐ परम बुद्धिमान मित्र ! इधर कहाँ विचरण कर रहे हो ?

टचस्टोन : देवी ! तुम्हारे पिता तुम्हें बुलाते हैं।

सीलिया : क्या तुम्हें हरकारा बनाया गया है ?

टचस्टोन : नहीं, कसम से कहता हूँ, लेकिन मुझे तुम्हें बुलाने को भेजा गया है।

रोज़ा० : यह कसम किसने सिखाई तुम्हें ?

टचस्टोन : एक सामंत से, जिसने सौगंध खाते हुए कहा कि केक[1] तो अच्छा है किन्तु राई का साग अच्छा नहीं है, परंतु बात थी उल्टी, मैं सच कहता हूँ। केक किसी काम का नहीं था, और साग उत्तम था, किन्तु सामंत की शपथ भी झूठी नहीं थी।

सीलिया : अपनी अगाध ज्ञान-राशि से इसे तुम कैसे प्रमाणित कर सकते हो ?

रोज़ा० : अब अपने बुद्धि-कौशल का भार उतारना प्रारम्भ करो।

टचस्टोन : अच्छी बात है। दोनों खड़ी होकर अपनी ठुड्डी मलो और अपनी दाढ़ियों की कसम खाकर कहो कि मैं बदमाश हूँ।

सीलिया : दाढ़ियों की कसम, अगर वे हमारे होतीं, तो तुम ज़रूर बदमाश हो !

टचस्टोन : मेरी बदमाशी की सौगंध, यदि मेरे होती तो मैं ज़रूर बदमाश होता। किंतु अगर तुम उसकी सौगंध खाती हो, जो है ही नहीं, तो झूठी तो तुम भी नहीं हो। सामंत भी अपने सम्मान की शपथ खा रहा था, और उसका सम्मान ही नहीं था। और यदि होता भी तो वह केक और साग के पास पहुँचने के पहले ही कसमें खा-खा कर उसे समाप्त कर चुका होता !

सीलिया : सुनूँ बताओ तो ! तुम्हारा मतलब किससे है ?

टचस्टोन : मैं तो तुम्हारे पिता के प्रिय पात्र की बात कर रहा हूँ।

सीलिया : मेरे पिता उसका समर्थन करते हैं, यह तो उसके सम्मान की बड़ी साक्षी है। उसकी अधिक बात मत करो। कहीं दूसरे के दोष

---

१. खाने का सामान।

निकालने में तुम्हें संकट में न पड़ना पड़ जाये।

टचस्टोन : हाय ! क्या ही दुख का विषय है कि विदूषकों को बुद्धिमानों की मूर्खता पर बुद्धिमानी की बातें भी नहीं करने दी जातीं।

सीलिया : वास्तव में जो तुम कहते हो वह सत्य ही है। विदूषकों को यों दबाया जाता है कि वे अपने थोड़े-से ज्ञान से बुद्धिमान् व्यक्तियों की मूर्खताओं का ढिंढोरा न पीटें। लो। श्रीमान् लेव्यू आ रहे हैं।

रोज़ालिन्ड : उनका मुँह समाचारों से ठुँसा पड़ा है।

सीलिया : अब वे उन सबको हमें ऐसे खिलायेंगे जैसे कबूतरी अपने बच्चे को।

रोज़ालिन्ड : तब तो हम समाचारों के बोझ से दब जायेंगे।

सीलिया : यह तो और भी अच्छा है। इससे हमारी कीमत ही बढ़ेगी।

[लेव्यू का प्रवेश]

नमस्कार श्रीमान् लेव्यू ! क्या समाचार हैं ?

लेव्यू : सुन्दर राजकुमारी ! तुमने एक बड़ा अच्छा खेल नहीं देखा !

सीलिया : कैसा खेल !

लेव्यू : कैसे कहूँ ! कैसा था वह खेल !

रोज़ा० : जैसी भी सूझ हो, जैसे भी विचार तुम्हें घेर लें, वैसे ही बना दो।

टचस्टोन : या जो भाग्य कहलवाता है वही कह दो।

सीलिया : शाबाश ! कितनी चापलूसी और कितने भद्दे ढंग से तुमने यह बात कही है।

टचस्टोन : तो क्या मैं अपने पद की रक्षा न करता।

रोज़ा० : तो तुम्हारा पुराना आचरण ही लुप्त हो जाता।

लेव्यू : देवियो ! आपकी बातचीत तो मुझे चकित किये दे रही है। मैं

तो एक सुंदर मल्लयुद्ध की बात आपको सुनाना चाहता था, जिसे देखने से आप चूक गईं।

रोज़ा० : तो अब बताइये न ?

लेब्यू : मैं आपको प्रारंभ सुना दूं। और देवियो ! यदि आप चाहें तो अंत भी सुना दूंगा क्योंकि बाकी तो, जो सबसे श्रेष्ठ है, वह यहीं, इसी जगह, जहाँ आप खड़ी हैं, घटेगा।

सीलिया : तो हम पहले प्रारम्भ को ही सुन लें जो कि हो चुका है।

लेब्यू : एक बुड्ढा और उसके तीन पुत्र···।

सीलिया : ऐसी ही एक पुरानी कहानी और शुरू होती है···।

लेब्यू : तीनों युवक अत्यंत स्वस्थ, सुंदर और आकर्षक···।

रोज़ा० : उनके गलों में विज्ञापन लटक रहे थे ताकि सब उनसे परिचित हो जायें···।

लेब्यू : सबसे बड़े लड़के ने दरबारी पहलवान चार्ल्स से कुश्ती लड़ी और पलक झपकते उसे उठा के ऐसा नीचे पटका गया कि उसकी तीन पसलियाँ तोड़ दीं। वह तो शायद ही बचे। यही हाल दूसरे और तीसरे लड़के का भी हुआ। वे वहीं पड़े हैं। उनका बुड्ढा बाप बिचारा ऐसा करुण विलाप कर रहा है कि सुनने वालों की आँखें भर-भर आती हैं।

रोज़ालिन्ड : हाय !

टचस्टोन : लेकिन भला इसमें ऐसा कौन-सा मज़ाक था जिसे देखने से महिलायें वंचित रह गईं ?

लेब्यू : वही जिसके बारे में मैंने अभी कहा है।

टचस्टोन : इसी तरह से तो हमारा अनुभव दिन-प्रति दिन बढ़ता है। जीवन में मुझे पहली बार ही यह मालूम हुआ कि मनुष्य की

हड्डियाँ तोड़ना भी सुकुमारियों के लिये एक मज़ाक की बात हो सकती है।

सीलिया : न मैं ही पहले यह जानती थी।

रोज़ा० : लेकिन क्या ऐसा कोई दूसरा भी अभागा है जो अपनी हड्डियाँ तुड़वाने के लिये उत्सुक हो रहा है ? क्यों बहिन, हम यह कुश्ती देखें न ?

लेब्यू : अवश्य ! अगर तुम ठहरो तो अवश्य देखो। यही स्थान कुश्ती के लिये निश्चित हुआ है और अब वे आने ही वाले हैं।

सीलिया : लो, निश्चय ही वे आ रहे हैं। मेरा ख़याल है कि हम यहीं खड़ी रहकर कुश्ती देखें।

[फ्रैड्रिक, सरदार, ऑरलेन्डो, चार्ल्स और दूसरे सभासदों का प्रवेश]

ड्यूक : आओ, आओ, अगर यह नवयुवक ऑरलेन्डो अपने इरादे से नहीं हटता है तो इसे अपने उतावलेपन का मज़ा भी चख लेने दो।

रोज़ा० : क्या यह वही आदमी है जिसने चार्ल्स को चुनौती दी है ?

लेब्यू : हाँ राजकुमारी, यह वही है।

सीलिया : हाय ! कितना सुकुमार है पर मुझे तो इसे देखने से ऐसा लगता है कि यह जीतेगा।

ड्यूक फ्रै० : अच्छा ! मेरी बेटी और मेरी भतीजी भी ! क्या तुम छिपकर यहाँ कुश्ती देखने आई हो ?

रोज़ा० : जी हाँ, अगर आप मेहरबानी करके हमें यह देख लेने दें तो।

ड्यूक फ्रै० : हाँ-हाँ, पर मैं इतना अवश्य कहता हूँ कि तुम्हें इसमें कोई विशेष आनन्द नहीं आयेगा। चार्ल्स ऑरलेन्डो से कहीं ज्यादा ताक़तवर है। मैंने तरस खाकर इस भोले नवयुवक को इस दुस्साहस-भरे इरादे से बहुत हटाना चाहा पर वह मानता ही नहीं।

मेरी बच्चियो ! ज़रा तुम भी उससे कह कर देखो, अगर वह यह हठ छोड़ दे तो।

सीलिया : भद्र लेब्यू ! कृपया उसे यहाँ बुलाइये तो ।

ड्यूक फ्रै० : हाँ-हाँ, कोशिश करो । मैं अभी कुछ समय के लिये यहाँ से चला जाता हूँ ।

लेब्यू : चुनौती देने वाले महानुभाव, राजकुमारियाँ आपको याद कर रही हैं ।

ऑरलेन्डो : मैं अभी सादर उनकी सेवा में उपस्थित होता हूँ ।

रोज़ा० : नवयुवक ! क्या तुमने चार्ल्स को कुश्ती लड़ने की चुनौती दी है ?

ऑरलेन्डो : नहीं सुन्दर राजकुमारी, उसी ने सबको चुनौती दे रखी है । दूसरों की तरह मैं भी सिर्फ़ अपनी ताक़त आज़माने के लिये अखाड़े में आया हूँ ।

सीलिया : ऐ नवयुवक ! जैसी तुम्हारी मासूम उम्र मालूम होती है उससे तुम्हारा साहस कहीं अधिक है । मैं इसकी सराहना करती हूँ पर क्या तुमने अभी नहीं देखा कि इस आदमी ने किस निर्दयता के साथ अपने बल का प्रदर्शन किया है ? अगर तुम्हारा अपने बल के बारे में वही अनुमान होता जो दूसरों का है या तुम थोड़ी दूरदर्शिता से ही काम लेते तो तुम अवश्य यह जान जाते कि तुम दोनों के बल में कोई बराबरी ही नहीं है । मैं तो तुमसे यही कहूँगी कि अपने बराबरी का जोड़ ढूंढ़ो और इसीलिये हम तुम्हारी भलाई के लिये ही तुमसे यह प्रार्थना करती हैं कि तुम यह मौक़ा पाकर इस कुश्ती से पीछे हट जाओ ।

रोज़ा० : ऐ नवयुवक, महरबानी करके ऐसा ही करो । इससे तुम्हारे सम्मान पर कोई धब्बा नहीं आयेगा । हम ड्यूक से प्रार्थना करेंगी

कि वे इस कुश्ती को न होने दें।

ऑरलेन्डो : मुझे अफ़सोस है कि मैं आप जैसी सुन्दर और प्रिय महिलाओं की बात को स्वीकार नहीं कर सकता पर आपसे मेरी यह प्रार्थना है कि इस अपराध के बदले में आप मेरे लिये अपने मस्तिष्क में कठोर विचार न लायें। आपकी सुन्दर कृपा-दृष्टि और सद्भावना इस संघर्ष में सदैव मेरे साथ रहेंगी। अगर मैं हार गया तो मेरी बदनामी होगी, पर इससे क्या, मुझे तो कोई पहले भी इतना नहीं चाहता और अगर मैं मारा गया तो ठीक ही है। मैं ऐसा चाहता ही हूँ। इससे मेरे दोस्तों को कोई दुःख नहीं होगा, क्योंकि इस धरती पर मेरा कोई ऐसा सहृदय साथी नहीं है जो मेरी मौत पर आँसू बहाये। इस दुनिया में मेरा कोई नहीं है जिसे मेरे लिये दुःख होगा। जब मैं चल बसूंगा तो मेरे स्थान की पूर्ति मुझसे कोई अच्छा आदमी ही करेगा।

रोज़ा० : काश ! जो कुछ थोड़ी बहुत मुझमें ताक़त है वह भी तुम्हारे साथ जुड़ जाये।

सीलिया : और मेरी भी।

रोज़ा० : अच्छा तो अब चलें, भगवान करे तुम्हारी ताक़त के बारे में हमारा जो अनुमान है वह ग़लत साबित हो।

सीलिया : मेरी भी भगवान से यही प्रार्थना है कि वह तुम्हारी मनोकामना पूरी करे।

चार्ल्स : कहाँ है वह नौजवान जो मरने के लिये इतना उतावला हो रहा है ?

ऑरलेन्डो : आइये, मैं तैय्यार बैठा हूँ जनाब, अपनी महत्वाकांक्षा में मेरा यह हल्का-सा प्रयास है।

ड्यूक फ्रे० : तुम्हें सिर्फ़ एक बार ही कुश्ती लड़ने का मौका दिया जायेगा।

चार्ल्स : नहीं श्रीमान् ! मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि दूसरी वार कुश्ती से उसे रोकने का मौक़ा ही नहीं आयेगा। आपने तो पहली वार उसे रोकने की बेकार कोशिश की।

ऑरलेन्डो : आप कुश्ती खत्म होने के बाद मेरा मज़ाक उड़ा सकते हैं पर उससे पहले आपको ऐसा नहीं करना चाहिये। अच्छा तो अब दो-दो हाथ हो जायें। आइये।

रोज़ा० : हे नवयुवक ! देव हरक्यूलिस तुम्हारी ताक़त बढ़ाये।

सीलिया : काश ! मैं किसी दूसरे को दिखाई न देती हुई इस भारी पहलवान (चार्ल्स) की टाँग पकड़ लेती।

रोज़ा० : (ऑरलेन्डो को सम्बोधित करती हुई) ओह, कैसा सुंदर नवयुवक है !

सीलिया : काश ! अगर मेरी आँखों से फटकर बिजली निकल पड़ती तो जानती हो वह किस पर गिरती ?

[भीषण कोलाहल : चार्ल्स धराशायी होता है।]

ड्यूक फ्रै० : बस-बस, अब और अधिक नहीं।

ऑरलेन्डो : ज़रा और, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ। मेरी साँस अभी तक पूरी तरह से फूली नहीं है।

ड्यूक फ्रै० : तुम क्या चाहते हो चार्ल्स ?

लेव्यू : उसका तो बोल बंद हो गया मेरे स्वामी !

ड्यूक फ्रै० : ले जाओ उसे यहाँ से। नवयुवक ! क्या नाम है तुम्हारा ?

ऑरलेन्डो : ऑरलेन्डो, मेरे स्वामी ! मैं सर रोलैन्ड डी बोयस का छोटा लड़का हूँ।

ड्यूक फ्रै० : काश ! तुम किसी दूसरे पिता के पुत्र होते। यद्यपि तुम्हारे पिता को सारी जनता अत्यंत आदर की दृष्टि से देखती थी पर मैं उसे अपना शत्रु ही समझता था। वीर नवयुवक !

तुम्हारी इस जीत से मुझे कितनी अधिक खुशी होती अगर तुम किसी दूसरे परिवार के व्यक्ति होते। अच्छा, अब विदा। तुम एक वीर नवयुवक हो। काश ! तुम किसी अन्य बाप की सन्तान होते।

[ड्यूक फ्रैडिक तथा उसके कर्मचारियों का प्रस्थान]

सीलिया : ओ बहिन, अगर मैं अपने पिता के स्थान पर होती तो क्या इस वीर नवयुवक के साथ ऐसा ही व्यवहार करती ?

ऑरलेन्डो : मुझे इस बात का और भी अधिक गर्व है कि मैं सर रोलैन्ड का छोटा लड़का हूँ। अगर एक बार ड्यूक फ्रैडिक मुझे अपना उत्तराधिकारी भी बनाना चाहे तो भी मैं अपने इस अधिकार को नहीं छोडूंगा।

रोज़ा० : मेरे पिता को सर रोलैन्ड अपने प्राणों की तरह प्यारे थे और अन्य सभी व्यक्तियों को भी वे ऐसे ही प्यारे थे। काश ! अगर मुझे यह पहले पता चल जाता कि यह वीर नवयुवक उन्हीं का पुत्र है तो अपनी आँखों से आँसू बहाकर उससे प्रार्थना करती और इस तरह उसे अपने जीवन का दाँव न लगाने देती।

सीलिया : मेरी अच्छी बहिन ! चलो, चल कर उसे धन्यवाद तो दें और उसके उत्साह को भी बढ़ायें। मेरे पिता का कठोर और ईर्ष्यापूर्ण व्यवहार उसके हृदय को काट रहा होगा। (ऑरलेन्डो को सम्बोधित करती हुई) वीर युवक ! तुमने जो विजय पाई है उसके तुम निश्चित ही अधिकारी हो। जिस तरह तुमने आशाओं के परे यह विजय पाई है यदि उसी तरह तुमने अपना प्रेम-वचन निभाया तो तुम्हारी प्रेयसी निश्चित ही अत्यंत प्रसन्न होगी।

रोज़ा० : महाशय ! (अपना कण्ठहार देती हुई) मुझ भाग्यहीना

के लिये ही इसे लेकर पहनो। मैं कितना अधिक तुम्हें दे सकती थी पर क्या करूँ इस समय ग़रीब होने के कारण मजबूर हूँ। चलो वहिन, अब चलें।

सीलिया : हे सुन्दर नवयुवक ! विदा।

ऑरलेन्डो : ओह, ऐसा लगता है कि आपको धन्यवाद देने के लिये मुझे शब्द नहीं मिल रहे हैं। मेरी सद्बुद्धि मानो पूरी तरह खो-सी गई है और मैं एक मूर्त्ति-सा बना हुआ निर्जीव प्राणी की भाँति आपके सामने खड़ा हूँ।

रोज़ा० : वह हमें वापिस बुला रहा है। क्या करूँ, जब से दुर्भाग्य की कुटिल दृष्टि मेरे ऊपर हुई है तभी से मेरा सारा गौरव धूल में मिल गया। फिर भी चलो पूछती हूँ कि वह नवयुवक क्या चाहता है ? (**ऑरलेन्डो को सम्बोधित करती हुई**) क्या श्रीमान् कुछ कहना चाहते हैं ? आपको आज कैसी अच्छी विजय है कि अपने प्रतिद्वन्दी को जीतने के साथ-साथ दूसरों को भी आपने जीत लिया है।

सीलिया : चलो वहिन !

रोज़ा० : हाँ चलो। अच्छा, अलविदा।

[**रोज़ालिन्ड और सीलिया का प्रस्थान**]

ऑरलेन्डो : कौन-सी वह प्रवल भावना थी जिसने मेरी जीभ से शब्दों को नहीं निकलने दिया। उसने कितना चाहा कि मैं कुछ वोलूं पर मैं नहीं वोल सका। अफसोस ! ऐ अभागे ऑरलेन्डो ! तू विजेता नहीं है। ऐसा लगता है कि यह तो चार्ल्स ने या उससे भी कमज़ोर किसी वस्तु ने तेरी शक्ति पर क़ाबू पा लिया है।

[**लेव्यू का पुनरागमन**]

लेव्यू : महाशय ! मैं दोस्ती के नाते तुम्हें सलाह देता हूँ कि तुम फ़ौरन

इस जगह से चले जाओ। निस्सन्देह, तुमने अपने काम से खूब नाम पाया है और सभी तुम्हारी प्रशंसा कर रहे हैं पर ड्यूक के हृदय में तुम्हारे इस सब काम के बारे में एक ग़लत धारणा बन गई है। ड्यूक चिड़चिड़े स्वभाव का है ही और फिर वह क्या है और क्या करेगा यह तुम मुझसे अच्छी तरह सोच-समझ सकते ही हो।

ऑरलेन्डो : इस चेतावनी के लिये मैं आपका विशेष आभारी हूँ पर क्या आप मुझे इतना बतायेंगे कि दोनों राजकुमारियाँ जो यहाँ उपस्थित थीं उनमें कौन-सी ड्यूक की पुत्री है ?

लेब्यू : चरित्र और स्वभाव से तो कोई भी उसकी लड़की नहीं कही जा सकती। लेकिन फिर भी छोटी राजकुमारी ही ड्यूक की पुत्री है। दूसरी निर्वासित ड्यूक की पुत्री है। जब इसके चाचा ने अपने भाई का राज्य हड़पा था तभी इसको अपनी पुत्री सीलिया के लिये सहेली की तरह रख लिया था। वे दोनों एक दूसरी को बहिनों से भी अधिक प्यार करती हैं लेकिन मैं तुमसे यह भी कह देता हूँ कि अभी कुछ दिनों से ड्यूक अपनी भतीजी से नाराज़ है। कारण भी कोई विशेष नहीं है, केवल इतना ही कि लोग उसके सद्गुणों के लिये उसकी प्रशंसा करते हैं और उसके अच्छे निर्वासित पिता के कारण उससे सहानुभूति रखते हैं। मैं निश्चित कहता हूँ कि बेचारी रोजालिन्ड के विरुद्ध उसकी ये कुत्सित भावनायें शीघ्र ही सबके सामने आ जायेंगी।

अच्छा महाशय, अब मैं चलता हूँ। आशा है किन्हीं अच्छी परिस्थितियों में फिर हम मिलेंगे और एक दूसरे को और भी अच्छी तरह समझ सकेंगे।

ऑरलेन्डो : मैं हमेशा आपका अहसानमन्द रहूँगा। अच्छा, अलविदा।

[लेब्यू का प्रस्थान]

ओह ! मेरी ठीक वही हालत है जैसे कि कोई जलती कढ़ाई से निकल कर चूल्हे में गिरे। इस निर्दयी ड्यूक के यहाँ से और कहाँ जाऊँगा, फिर उसी अत्याचारी भाई के पास जाना होगा। लेकिन आह ! कैसा अलौकिक माधुर्य था रोज़ालिन्ड में !

दृश्य ३

[महल का प्रकोष्ठ]

[सीलिया और रोज़ालिन्ड का प्रवेश]

सीलिया : क्यों बहिन ! मेरी प्यारी रोज़ालिन्ड ! यह तुम्हें क्या हो गया है ? भगवान कामदेव (क्यूपिड) तुम पर कृपा करें। तुम एक भी शब्द बोलती क्यों नहीं ?

रोज़ा० : मेरे शब्द व्यर्थ गँवाने के लिये नहीं हैं।

सीलिया : नहीं, मेरी प्यारी ! तुम्हारे शब्द इतने कीमती हैं कि वे व्यर्थ नहीं जा सकते। कुछ मुझसे कहो न ? देखो, आओ अपने तर्कपूर्ण शब्दों से मुझे आहत कर दो।

रोज़ा० : तब तो हम दोनों ही निस्सहाय-सी हो जायेंगी। तुम्हारी तो किन्हीं कारणों से यह अवस्था होगी पर मैं तो बिना किसी कारण ही पागल हूँ।

सीलिया : पर क्या तुम अपने पिता के बारे में सोचती हुई इतनी उदास हो गई हो बहिन ?

रोज़ा : नहीं, कुछ उस नवयुवक के लिये भी। ओह ! हमारा यह दैनिक जीवन भी कितने काँटों से भरा हुआ है।

सीलिया : काँटे नहीं, ये तो कोमल फूल हैं मेरी प्यारी बहिन ! जो अवकाश के क्षणों में क्रीड़ा करने के लिये तुम्हें दिये गये हैं। सोचो तो, यदि हम स्त्रियाँ लौकिक व्यवहार पर न चलें तो समझ लो

हमारे वस्त्र तक इन काँटों से बुरी तरह छिद जायें।

रोज़ा० : लेकिन यदि ये मेरे वस्त्रों तक ही होते तो मैं इन्हें निकाल बाहर कर देती पर अब क्या करूँ? ये फूल तो मेरे हृदय में बैठ गये हैं।

सीलिया : उन्हें खाँस कर निकाल डालो।

रोज़ा० : मैं यह भी करती, यदि मेरे खाँसने से ये निकल आते और काश! वह मुझे मिल जाता।

सीलिया : तुम तो भावावेश में पूरी तरह खो-सी रही हो, सँभलो बहिन, अपनी इस कमज़ोरी पर क़ाबू पाओ।

रोज़ा० : मैं इन पर क्या क़ाबू पाऊँ। इन पर तो उस नवयुवक पहलवान (ऑरलेन्डो) ने क़ाबू पा लिया है।

सीलिया : ओह, मैं तुम्हारे सौभाग्य के लिये कामना करती हूँ। प्रयत्न करो बहिन! क्या हुआ एक-दो बार असफल भी रहीं तो अन्त में अवश्य सफलता प्राप्त करोगी। लेकिन अब यह मज़ाक छोड़ो और कुछ संजीदा होकर बात करो। क्या सच तुम यकायक सर रोलैन्ड के कनिष्ठ पुत्र से इतना अगाध प्रेम करने लग गई हो?

रोज़ा० : मेरे पिता उसके पिता को बहुत प्यार करते थे।

सीलिया : तो क्या इसीलिये तुम उसके पुत्र ऑरलेन्डो से इतना प्यार करने लगी हो? अगर ऐसी ही बात है तो फिर मुझे तो उससे घृणा करनी चाहिये क्योंकि मेरे पिता उसके पिता से उतनी ही बुरी तरह घृणा करते हैं पर फिर भी मैं ऑरलेन्डो से घृणा नहीं करती।

रोज़ा० : नहीं, मेरे लिये ही सही पर उससे कभी घृणा मत करना।

सीलिया : क्यों नहीं? क्या वह घृणा के योग्य नहीं है?

रोज़ा० : कुछ भी हो प्यारी सीलिया, मुझे उससे प्यार कर लेने दो

और इसीलिये ही तुम भी उसे प्यार करो। लो, देखो वे ड्यूक आ रहे हैं।

सीलिया : अरे, उनकी आँखें तो क्रोध से भरी हुई हैं ?

[ड्यूक फ्रेड्रिक का सरदारों के साथ प्रवेश]

ड्यूक फ्रै० : अच्छा भद्रे ! बस जितनी जल्दी हो सके उतनी ही जल्दी तुम हमारे यहाँ से चली जाओ।

रोज़ा : मुझसे कह रहे हैं चाचा जी, आप यह सब कुछ ?

ड्यूक फ्रै० : हाँ तुमसे ही रोज़ालिन्ड, समझ लो अगर आज से दस दिन के बाद तुम हमारे यहाँ से बीस मील के अन्दर कहीं पर भी मिलीं तो जानती हो ? उसके लिये तुम्हें मृत्यु-दण्ड दिया जायेगा !

रोज़ा० : पर, क्या मैं आपसे प्रार्थना करूँ कि जाने से पहले मेरा अपराध तो आप बता दीजिये ? चाचा जी, अगर मैं अपने आप को भूली नहीं हूँ और किसी स्वप्नावस्था में अपने आपको पूरी तरह खो नहीं बैठी हूँ तो सच मैं अपनी स्वाभाविक स्थिति में रह कर ही आपसे कहती हूँ कि मैंने तो कभी आपका बुरा सोचने की कल्पना तक नहीं की।

ड्यूक फ्रै० : सभी ग़द्दार ऐसा ही कहा करते हैं। अगर उन्हें निर्दोष सिद्ध करने के लिये शब्द ही पर्याप्त हों तो मैं कहता हूँ कि फिर तो वे ऐसे पवित्र हैं मानो दोष उन्हें छू तक नहीं गया। खैर छोड़ो, इस सबके लिये इतना ही पर्याप्त है कि मैं तुम पर विश्वास नहीं करता।

रोज़ा० : फिर भी आपका मेरे प्रति अविश्वास मुझे ग़द्दार कैसे साबित कर सकता है। आप मुझे वह कारण बताइये जिससे आपकी मेरे प्रति ऐसी धारणा बन गई है।

ड्यूक फ्रै० : क्या इतना पर्याप्त नहीं कि तुम अपने पिता की पुत्री हो ?

रोज़ा० : लेकिन उनकी पुत्री तो उस समय भी थी जब आपने उनका राज्यापहरण किया था और उस समय भी थी जब आपने उन्हें निर्वासित किया था। विश्वासघात परम्परागत नहीं होता मेरे स्वामी ! और मान लो अपने सम्बन्धियों से एक संस्कार के रूप में हम इसे पाते हैं तो भी मैं कैसे दोषी हूँ ? मेरे पिता तो कभी ग़द्दार नहीं थे। इसलिये मेरे स्वामी ! मुझे ग़द्दार कह कर मेरे साथ अन्याय न कीजिये। पहले ही मैं एक निस्सहाय ग़रीब दुखिया हूँ।

सीलिया : श्रीमान्, मुझे कुछ बोलने की आज्ञा देंगे ?

ड्यूक फ्रै० : सीलिया ! हमने तुम्हारे लिये ही इसे ठहराया था, नहीं तो यह भी अपने पिता के साथ वन-वन भटकती फिरती।

सीलिया : लेकिन मैंने तो तब इसके लिये आपसे प्रार्थना नहीं की थी। आपने ही अपनी खुशी से और न जाने किस पश्चात्तापस्वरूप इसे यहाँ रखा। मैं तो उस समय इतनी छोटी थी कि इसका महत्त्व समझती ही क्या थी लेकिन अब मैं रोज़ालिन्ड को पूरी तरह समझ गई हूँ। पिता जी, अगर यह ग़द्दार है तो फिर मैं क्यों नहीं। हम दोनों तो एक साथ ही सोती और उठती हैं और पढ़ती और खेलती भी हैं तो एक ही साथ। जहाँ कहीं भी गई हैं वहाँ 'जूनो' के हंसों की जोड़ी की तरह साथ-साथ ही गई हैं। पिता जी, हम तो दोनों ऐसी मिल-जुल कर रहती हैं मानो एक दूसरे से अभिन्न हों।

ड्यूक फ्रै० : वह तुमसे कहीं ज्यादा चालाक है और वह अपने इस बना-वटी सौजन्य, शान्ति और सन्तोष के कारण लोगों में प्रेम और सहा-नुभूति प्राप्त करती है। तू बेवकूफ़ है सीलिया ! जो इतना भी नहीं समझती कि इसके कारण तेरा कोई नाम भी नहीं जानता ! जब

वह यहाँ से चली जायेगी तब लोगों की निगाह में तू अधिक सुन्दरी और गुणवती होगी। इसलिये अब इस बीच में कुछ मत बोल। मैंने जो भी आज्ञा दी है वह अटल है। मैं उसको निर्वासित करता हूँ।

सीलिया : तब पिता जी वही दण्ड मुझे भी दीजिये। मैं इसके बिना जीवित नहीं रह सकती।

ड्यूक फ्रै०: तुम्हारी तो सारी अक्ल मारी गई है। अच्छा रोज़ालिन्ड, तुम जाने की तैय्यारी करो। अगर तुम दस दिन से ज़्यादा यहाँ रहीं तो समझ लो जैसा मैंने कहा है उसके अनुसार तुम्हें मृत्यु-दण्ड मिलेगा।

सीलिया : ओ रोज़ालिन्ड ! मेरी असहाय बहिन ! कहाँ जाओगी तुम ? आओ, हम एक दूसरी का स्थान बदल लें। मैं मेरे पिता की पुत्री का स्थान तुम्हें देती हूँ। दुःखी मत हो बहिन, मैं तुमसे विनय करती हूँ। तुमसे अधिक दुःखी तो मैं हूँ।

रोज़ा० : मेरे दुःखी होने का तुमसे अधिक कारण है सीलिया !

सीलिया: नहीं बहिन, कोई कारण नहीं है। ज़रा हँसो और प्रसन्न होओ। क्या तुम नहीं जानतीं कि मेरे पिता ड्यूक ने मुझे भी तो निर्वासित कर दिया है।

रोज़ा० : नहीं, ऐसा नहीं है।

सीलिया : नहीं ? क्या ऐसा नहीं है ? तब मेरी बहिन रोज़ालिन्ड ! क्या तुम्हारा मुझसे वह अभिन्न प्रेम नहीं है जिससे तुम यह अनुभव कर सको कि तुम और मैं एक ही हैं ? क्या हम कभी अलग हो सकती हैं ? मेरी प्यारी बहिन, क्या कभी यह सम्भव है ? कभी नहीं। तब मेरे पिता अपना कोई और उत्तराधिकारी ढूंढ़ लेंगे। आओ, हम यहाँ से भाग निकलने की योजना बनायें कि कहाँ चलेंगी

और क्या अपने साथ ले चलेंगी। भाग्य के विपरीत होने से जो भी दुःख और चिन्ताएँ तुम्हारे जीवन को घेरे हुए हैं उनमें मुझे भी हाथ बँटाने दो। मैं इस आकाश की, जो हमारे दुःख से स्वयं पीला पड़ गया है, सौगंध खाकर कहती हूँ कि चाहे तुम कुछ भी कहो मैं तुम्हारे साथ अवश्य चलूँगी।

रोज़ा० : तो फिर हम किधर चलें ?

सीलिया : चलो 'अर्दन वन' चल कर चाचा जी को ढूँढ़ें।

रोज़ा०: हाय ! हम तो लड़कियाँ हैं। इतनी दूर जाना हमारे लिये ख़तरे की बात होगी। जानती हो ? स्त्री के सौन्दर्य्य के लिये चोर सुवर्ण से भी अधिक लालायित रहते हैं।

सीलिया : तो उसके लिये मैं स्वयं फटे-पुराने कपड़े पहन लूँगी और अपने मुँह पर हल्का-सा काला रंग पोत लूँगी। ऐसा ही तुम करना। तब हम विना किसी ख़तरे के निकल चलेंगी।

रोज़ा० : इसमें क्या यह अच्छा नहीं रहेगा कि मैं पुरुष का वेश बना लूँ क्योंकि मैं साधारण स्त्रियों से तो अधिक लम्बी हूँ। एक लम्बी तलवार तो मैं अपनी कमर में लटका लूँगी और एक हाथ में बर्छी ले लूँगी। इस तरह चाहे मेरे में हृदय में स्त्रियोचित भीरुता हो पर बाहर से तो मैं एक वीर सेनानी के ही रूप में ही दिखूँगी। पुरुषों में भी तो ऐसे बहुत-से कायर होते हैं, जो इस तरह बाहरी दिखावे से अपनी कायरता छुपाये रहते हैं।

सीलिया : लेकिन जब तुम ऐसा वेश बना लोगी तो मैं तुम्हें क्या कह कर पुकारूँगी।

रोज़ा० : मैं अपना इतना सुन्दर नाम रखूँगी जैसा स्वयं इन्द्र (जोव) के प्रतिहार का है। इसलिये तुम मुझे गैनीमीड़ कह कर पुकारना। पर तुम अपनी तो बताओ कि तुम्हारा क्या नाम होगा ?

सीलिया : कोई ऐसा ही नाम जो मेरी परिस्थिति का भास करा सके। सीलिया के स्थान पर मेरा नाम ऐलीना होगा।

रोज़ा० : लेकिन वहिन ! क्या ख़याल है, अगर हम तुम्हारे पिता के दरबारी विदूषक टचस्टोन को भी अपने साथ ले चलें तो क्या हमारी यात्रा आराम से नहीं कट जायेगी ?

सीलिया : वह तो मेरे साथ दुनिया में कहीं भी जा सकता है। अच्छा, इसे तैय्यार करना मेरे ऊपर छोड़ दो। आओ, चलकर अपने रुपये और जवाहरात इकट्ठे कर लें। इसके अलावा यहाँ से भागने का ठीक समय और कोई सबसे सुरक्षित रास्ता तय कर लें, जिससे अगर हमारा पीछा भी हो, जो कि अवश्य होगा, तो हम छिपकर निकल सकें। अब हम कितनी सन्तुष्ट हैं। सच, हम निर्वासिता नहीं हैं वरन् हम तो स्वतंत्रता की खोज में जा रही हैं।

[प्रस्थान]

दूसरा अंक

दृश्य १

[ज्येष्ठ ड्यूक, अमीन्स तथा दो-तीन सरदारों का प्रवेश]

[सभी वनवासियों की तरह]

ज्येष्ठ ड्यूक : मेरे निर्वास-काल के साथियो और भाइयो ! क्या तुम यह अनुभव नहीं करते कि हमारा यह जीवन हमारे पुराने स्वभाव के कारण उस दिखावे, बनावट और कृत्रिमता के जीवन की अपेक्षा कितना अधिक सुखमय और मधुर हो गया है ? क्या इन वनों को वह ईर्ष्या और विश्वासघात से भरा दरबारी जीवन छू तक गया है ? यहाँ तो सिर्फ़ प्रकृति (आदम) ही हमें दण्ड दे सकती है, जैसे ऋतुओं का परिवर्त्तन, जाड़े की वह ठंडी और बर्फ़ीली हवा जो जब चलने लगती है तो मेरे शरीर को छू कर गलाती और काटती-सी मालूम होती है। पर फिर भी मैं मुस्कराता हुआ कहता हूँ कि ये सर्द वायु के झोंके तो मेरे सलाहकार मित्रों की तरह आते हैं जो मुझे सही रूप में भास कराते हैं कि मैं कौन हूं। यह कोई झूठी बड़ाई की बात नहीं है। निरन्तर दुःख और आपत्तियों के जीवन में भी क्या अपूर्व माधुर्य और आनन्द है ! जैसे कि जहरीले और कुरूप मणि-सर्प के सिर में कैसी अमूल्य मणि होती है। यह हमारा वन का जीवन उस दुनियादारी के द्वेष और विद्वेष भरे हुए जीवन से कितना दूर है। इसमें ऐसा माधुर्य है कि लगता है कि इन पेड़ों के पास हमसे बातें करने को वाणी है और इन झरनों को बहता देखने में ऐसा आनन्द आता है जैसे मानो हम

स्वयं कोई पुस्तक पढ़ रहे हों। उन निर्जीव पत्थरों तक में मुझे ऐसा लगता है जैसे कि मानो ये हमें कोई उपदेश दे रहे हैं। सच, मुझे तो चारों तरफ प्रत्येक वस्तु में अच्छा ही अच्छा मालूम होता है। कैसा प्रिय और सुन्दर जीवन है ! मैं इसे नहीं बदलूंगा।

अमीन्स : आपमें भी कैसा सराहनीय गुण है कि आपने तो अपने दुर्भाग्य की कठोरता को शांति और माधुर्य्य-भरे सन्तोष के रूप में बदल डाला।

ज्येष्ठ ड्यूक : आओ चलो, शिकार के लिये चलें। कोई हरिण मारकर लायें। पर मुझे यह देखकर भी कितना दुःख होता है कि बेचारे वे भोलेभाले सुन्दर हरिण भी जिनके मुड़े हुए सींग और शरीर पर काले और भूरे धव्वे अत्यंत सुन्दर मालूम होते हैं, अपने वन-प्रान्त में भी सुख और शान्ति से विचरण नहीं कर सकते। उनके निवास-स्थान में भी हमारे तीर जाकर उनके शरीर को वेधते हैं।

पहला सरदार : निस्सन्देह, मेरे स्वामी ! दुःखी जेक्स इस पर और भी दुःखी हो रहा था और सौगन्ध खाकर कहता था कि आप अपने भाई से भी अधिक किसी की वस्तु का अपहरण करने वाले हैं। आज जैसे ही वह ओक के पेड़ के नीचे, जिसकी जड़ें जंगल में कल-कल करते हुए बहते झरने के ऊपर झुक रही थीं, बैठा था तो मैं और सरदार अमीन्स चुपके से उसके पीछे जा बैठे। उसी स्थान पर बेचारा एक हरिण आया जिसको किसी शिकारी के बाण ने छेद रखा था। वह वहाँ मरने के लिये ही आया था। मेरे स्वामी, क्या बताऊँ, वहाँ एक बार उस गरीब जानवर ने ऐसा करुण क्रन्दन किया कि मालूम होता था कि इस असह्य पीड़ा से इसका शरीर फट जायेगा। आँसुओं की मोटी-मोटी बूंदें उसके भोले चेहरे से एक के बाद एक ऐसे गिर रही थीं कि उन्हें देख कर जी भर-भर

आता था। इस तरह वह बेचारा ग़रीब हरिण उस द्रुतगामी झरने के किनारे खड़ा था और उसके आँसू टप-टप करके बहते जल में गिर रहे थे। दुःखी जेक्स यह सब कुछ देखता जा रहा था।

ज्येष्ठ ड्यूक : लेकिन जेक्स ने कहा क्या ? क्या उसे इस दृश्य से कुछ शिक्षा मिली ?

पहला सरदार : निश्चित ही मेरे स्वामी ! अनेकों रूपों में उसने इस दृश्य को देखा। सर्वप्रथम यह देख कर कि हरिण अपने आँसू उस झरने में बहा रहा है जिसमें पहले ही काफ़ी पानी है उसने कहा—हे निरीह पशु ! तू अन्य दुनियादारों की तरह ही एक वसीयत लिख रहा है। जिनके पास इतना अधिक है कि कोई कमी है ही नहीं उन्हीं को तू और अधिक दे रहा है। इसके उपरान्त उस अकेले उपेक्षित हरिण की अवस्था पर द्रवित हो कर वह बोला—ठीक ही है, आपत्तियों में कौन किसका मित्र है। सभी साथ छोड़ जाते हैं। इस बीच में स्वस्थ हरिणों का एक टोल निश्चिन्त गति से कूदता-फाँदता वहाँ आया और उसमें से किसी ने भी उस बेचारे मरणासन्न घायल हरिण की तरफ़ मुड़कर नहीं देखा तब जेक्स के मुँह से ये शब्द निकल पड़े—ओ सुखी और सम्पन्न नागरिक रूपी हरिणो ! चले जाओ। यही संसार की रीति है। तुम्हें क्या पड़ी कि तुम अपने इस अभागे और बर्बाद साथी की ओर देखो भी। इस तरह जेक्स ने ग्राम, नगर और दरबारी जीवन पर एक कटु व्यंग कसा है। यहाँ तक कि हमें भी उस व्यंग में कसते हुए उसने सौगन्ध खाकर कहा कि हम अत्याचारी हैं, दूसरों के जीवन का अपहरण करने वाले हैं और सच पूछो तो उनसे भी गिरे हुए हैं जो बेचारे निरीह पशुओं को उनके निवासस्थान पर जा कर भयभीत करते हैं और मार डालते हैं।

ज्येष्ठ ड्यूक : क्या तुमने उसे इसी तरह के विचार में डूबा हुआ छोड़ा था ?

दूसरा सरदार : हाँ स्वामी ! वह घायल मृग की ओर देख-देख कर रो रहा था और इसी तरह बार-बार कुछ कह उठता था।

ज्येष्ठ ड्यूक : चलो मुझे वह स्थान दिखाओ। जब जेक्स इस तरह दुःखी होता है तो मुझे उससे बातें करने में एक विशेष आनन्द मिलता है। उस समय उसकी बातें बड़ी गम्भीर और रहस्य-भरी होती हैं।

पहला सरदार : चलिये, मैं अभी आपको सीधे उसके पास ले चलता हूँ।

दृश्य २

[महल का एक प्रकोष्ठ]

[ड्यूक फ्रेड्रिक का अपने सरदारों के साथ प्रवेश]

ड्यूक फ्रै० : यह कैसे सम्भव हो सकता है कि महल छोड़ते समय सीलिया और रोज़ालिन्ड को किसी ने न देखा हो ? ऐसा कभी नहीं हो सकता। इसमें अवश्य हमारे राजदरबार के कुछ बदमाशों का हाथ है।

पहला सरदार : स्वामी ! जहाँ तक मुझे मालूम है किसी ने उन्हें नहीं देखा। रात्रि को उनकी दासियों ने उन्हें अपनी शैय्या पर विश्राम करने जाते हुए देखा और फिर प्रातःकाल पाया कि शैय्या सूनी पड़ी थी और वह महल छोड़ कर कहीं चली गई थीं।

दूसरा सरदार : मेरे स्वामी ! अपका वह विदूषक भी जो राजदरबार में अपका मनोरंजन किया करता था, लापता है। राजकुमारी सीलिया की प्रमुख दासी हिस्पीरिया यह अवश्य कह रही है कि उसने आपकी पुत्री और रोज़ालिन्ड को उसी पहलवान ऑरलेन्डो

आता था। इस तरह वह बेचारा ग़रीब हरिण उस द्रुतगामी झरने के किनारे खड़ा था और उसके आँसू टप-टप करके बहते जल में गिर रहे थे। दु:खी जेक्स यह सब कुछ देखता जा रहा था।

ज्येष्ठ ड्यूक : लेकिन जेक्स ने कहा क्या ? क्या उसे इस दृश्य से कुछ शिक्षा मिली ?

पहला सरदार : निश्चित ही मेरे स्वामी ! अनेकों रूपों में उसने इस दृश्य को देखा। सर्वप्रथम यह देख कर कि हरिण अपने आँसू उस झरने में बहा रहा है जिसमें पहले ही काफ़ी पानी है उसने कहा—हे निरीह पशु ! तू अन्य दुनियादारों की तरह ही एक वसीयत लिख रहा है। जिनके पास इतना अधिक है कि कोई कमी है ही नहीं उन्हीं को तू और अधिक दे रहा है। इसके उपरान्त उस अकेले उपेक्षित हरिण की अवस्था पर द्रवित हो कर वह बोला—ठीक ही है, आपत्तियों में कौन किसका मित्र है। सभी साथ छोड़ जाते हैं। इस बीच में स्वस्थ हरिणों का एक टोल निश्चिन्त गति से कूदता-फाँदता वहाँ आया और उसमें से किसी ने भी उस बेचारे मरणासन्न घायल हरिण की तरफ़ मुड़कर नहीं देखा तब जेक्स के मुँह से ये शब्द निकल पडे—ओ सुखी और सम्पन्न नागरिक रूपी हरिणो ! चले जाओ। यही संसार की रीति है। तुम्हें क्या पड़ी कि तुम अपने इस अभागे और बर्बाद साथी की ओर देखो भी। इस तरह जेक्स ने ग्राम, नगर और दरबारी जीवन पर एक कटु व्यंग कसा है। यहाँ तक कि हमें भी इस व्यंग में कसते हुए उसने सौगन्ध खाकर कहा कि हम अत्याचारी हैं, दूसरों के जीवन का अपहरण करने वाले हैं और सच पूछो तो उससे भी गिरे हुए हैं जो बेचारे निरीह पशुओं को उनके निवासस्थान पर जा कर भयभीत करते हैं और मार डालते हैं।

ज्येष्ठ ड्यूक : क्या तुमने उसे इसी तरह के विचार में डूबा हुआ छोड़ा था ?

दूसरा सरदार : हाँ स्वामी ! वह घायल मृग की ओर देख-देख कर रो रहा था और इसी तरह बार-बार कुछ कह उठता था।

ज्येष्ठ ड्यूक : चलो मुझे वह स्थान दिखाओ। जब जेक्स इस तरह दुःखी होता है तो मुझे उससे बातें करने में एक विशेष आनन्द मिलता है। उस समय उसकी बातें बड़ी गम्भीर और रहस्य-भरी होती हैं।

पहला सरदार : चलिये, मैं अभी आपको सीधे उसके पास ले चलता हूँ।

दृश्य २

[महल का एक प्रकोष्ठ]

[ड्यूक फ्रेड्रिक का अपने सरदारों के साथ प्रवेश]

ड्यूक फ्रै० : यह कैसे सम्भव हो सकता है कि महल छोड़ते समय सीलिया और रोज़ालिन्ड को किसी ने न देखा हो ? ऐसा कभी नहीं हो सकता। इसमें अवश्य हमारे राजदरबार के कुछ बदमाशों का हाथ है।

पहला सरदार : स्वामी ! जहाँ तक मुझे मालूम है किसी ने उन्हें नहीं देखा। रात्रि को उनकी दासियों ने उन्हें अपनी शैय्या पर विश्राम करने जाते हुए देखा और फिर प्रातःकाल पाया कि शैय्या सूनी पड़ी थी और वह महल छोड़ कर कहीं चली गई थीं।

दूसरा सरदार : मेरे स्वामी ! अपका वह विदूषक भी जो राजदरबार में अपका मनोरंजन किया करता था, लापता है। राजकुमारी सीलिया की प्रमुख दासी हिस्पीरिया यह अवश्य कह रही है कि उसने आपकी पुत्री और रोज़ालिन्ड को उसी पहलवान ऑरलेन्डो

के सौन्दर्य्य और गुणों की, जिसने कि चार्ल्स को कुश्ती में पछाड़ दिया था, अत्यधिक प्रशंसा करते हुए सुना है। इसीलिये उसका यह विश्वाश है कि राजकुमारियाँ चाहे कहीं भी गई हों वह नवयुवक अवश्य उनके साथ होगा।

ड्यूक फ्रै० : तो उसके भाई के पास यह संदेश लेकर किसी को भेजो कि वह ऑरलेन्डो को पकड़ कर हमारे सामने उपस्थित करे और अगर वह वहाँ न मिले तो उसके भाई को ही हमारे सामने ले आओ। मैं उससे किसी भी तरह ऑरलेन्डो का पता लगवा लूंगा, लेकिन शीघ्रता से यह सब काम करो और खोज में तब तक कोई कसर न छोड़ो जब तक इन भगोड़ों को तुम फिर हमारे सामने लाकर उपस्थित न कर दो।

दृश्य ३

[ओलिवर के घर के सामने]

[ऑरलेन्डो और आदम का प्रवेश : मिलन]

ऑरलेन्डो : कौन है वहाँ ?

आदम : कौन, ओ मेरे युवक स्वामी ! मेरे सुहृद और अच्छे सरकार ! ओ मेरे स्वर्गीय स्वामी की अनुपम स्मृति ! आप यहाँ कैसे ? क्या बताऊँ स्वामी। कहा नहीं जाता आप इतने गुणशील क्यों हैं ? जनता आपसे इतना प्रेम क्यों करती है ? क्यों ही आप इतने उदार, वीर और साहसी हैं ? आपने उस चंचल और बदलते स्वभाव वाले ड्यूक के दरबारी पहलवान चार्ल्स को पराजित करने की भूल क्यों की ? इसी से बड़ी शीघ्रता के साथ आपका यश चारों ओर फैल गया है पर कैसे नादान हैं मेरे स्वामी जो इतना भी नहीं समझते कि कभी मनुष्य के सद्गुण ही उसके शत्रु बन

जाते हैं। वही स्थिति आपके साथ है मेरे मालिक! आपके वे सराहनीय सद्‌गुण ही आपके साथ विश्वासघात कर रहे हैं। हाय! यह संसार भी कैसा विचित्र है कि मनुष्य के सद्‌गुणों से जब कि दूसरों को प्रसन्न होना चाहिये उसकी अपेक्षा उनके हृदय में उसके प्रति एक ज़हरीली ईर्ष्या पैदा हो जाती है।

ऑरलेन्डो : लेकिन, इस सबका तात्पर्य्य क्या है?

आदम : ओ अभागे दुःखी नवयुवक! इस घर के अन्दर पैर मत रखना। इसी घर में तुम्हारे सद्‌गुणों का एक शत्रु रहता है जानते हो कौन? तुम्हारा भाई; पर नहीं, वह तुम्हारा भाई कहलाने योग्य नहीं है और सर रोलैन्ड का पुत्र होते हुए भी मैं उसे उनका पुत्र नहीं मानूंगा। उसने तुम्हारे इस बढ़ते हुए यश के बारे में सुन लिया है और वह इसी रात को तुम समेत तुम्हारे शयनागार को जलाने का षड्यन्त्र कर रहा है। अगर इसमें वह किसी तरह असफल रहा तो वह किसी न किसी तरह तुम्हें अवश्य मरवा देगा। मैंने छिप कर उसके सारे षड्यन्त्रों को सुना है। अब यह स्थान तुम्हारे लिये घर नहीं है मेरे स्वामी! बल्कि तुम्हारे वध करने के लिये निश्चित किया हुआ स्थान है। इससे घृणा करो और भय खाकर कदापि इसमें न घुसो।

ऑरलेन्डो : लेकिन फिर मैं कहाँ जाऊँ आदम!

आदम : कहीं भी चले जाओ पर इस घर के पास मत रहो।

ऑरलेन्डो : क्या अभिप्राय है तुम्हारा आदम? क्या तुम चाहते हो कि मैं एक भिखारी की तरह अपना पेट भरने के लिये भीख माँगता फिरूँ या अपनी तलवार के ज़ोर से बेचारे रास्ता चलते राहगीरों को लूटन का घृणित डाकू का पेशा अपना लूं? यही

में कर सकता हूँ नहीं तो तुम्हीं बताओ और क्या करूँ, पर यह निश्चित समझ लो कि चाहे मेरा कुछ भी हो मैं यह सब काम कभी नहीं कर सकता। इसकी बजाय तो मैं अपने आपको उस खूंख्वार भाई के हाथों में दे दूंगा जिसकी रगों में सच, इन कुटिल भावनाओं के कारण मेरे पिता का रक्त पूरी तरह बदल चुका है।

आदम : नहीं, ऐसा कभी मत करना। लो मेरे पास ये पाँच सौ सिक्के (क्राउन्स) हैं जिन्हें मैंने तुम्हारे पिता की सेवा करते हुए यह सोच कर बचाया था कि जब बुढ़ापा आ जायेगा और शिथिलता के कारण मेरे अंग-प्रत्यंग कार्य करने के सर्वथा अयोग्य हो जायेंगे तो उस उपेक्षा भरे हुए समय में यह रकम मेरी सहायक होगी। ले जाओ, इस रकम को ले जाओ, वह ईश्वर जो बेचारे निस्सहाय पथिकों का पेट भरता है, वही मेरे बुढ़ापे में मेरी देखभाल करेगा। यह सब रकम रखी हुई है, इसे तुम ले जाओ और मैं तुम्हारा सेवक बन कर तुम्हारे साथ चलूंगा। वैसे मैं बूढ़ा दीखता हूँ पर मेरे शरीर में अब भी शक्ति है और वह इस कारण कि मैंने अपनी जवानी में कभी भी वे गरम और खून को जलाने वाली मदिरायें नहीं पीयीं और न किन्हीं बुरी आदतों में फँस कर अपने स्वास्थ्य को बिगड़ने दिया, इसीलिये तो मेरे बुढ़ापे के ये दिन शीत काल के उन स्वास्थ्यप्रद चमकीले और धुंधले दिनों की तरह हैं जो समय आने पर सबके जीवन में ही आते हैं। इसलिये कृपया मुझे अपने साथ चलने की अनुमति दीजिये। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि एक युवक सेवक की भाँति ही मैं आपकी हर तरह से सेवा करूँगा।

ऑरलेन्डो : ओ मेरे अच्छे वृद्ध पुरुष! तुम प्राचीन काल के विश्वसनीय

सेवकों के एक ज्वलंत उदाहरण हो जो किसी धन के लोभ में अपने स्वामी के लिये खून-पसीना नहीं बहाते थे बल्कि यह सब अपना एक पवित्र कर्त्तव्य समझ कर करते थे। आदम ! तुम इस वर्त्तमान समय के लिये नहीं हो जब कि कोई भी बिना व्यक्तिगत स्वार्थ और धन के प्रलोभन के किसी के लिये पसीना नहीं बहाता और उस पर भी जब उसका स्वार्थ पूरा हो जाता है तो उन स्वामियों के साथ भी उसका सेवा-भाव नष्टप्रायः हो जाता है। तुम तनिक भी ऐसे नहीं हो लेकिन मेरे वृद्ध आदम ! तुम अपना यह सारा स्नेह किस सूखे वृक्ष पर उँडेल रहे हो जो तुम्हारे कितने भी कष्ट उठाने के फलस्वरूप भी फिर से पत्र-पुष्पों के साथ नव जीवन नहीं प्राप्त कर सकता। लेकिन खैर, चलो मेरे साथ। हम साथ-साथ ही चलेंगे और इससे पहले कि तुम्हारा यह उपार्जित धन खर्च हो जाय हम कहीं बस कर थोड़ी-बहुत जीविकोपार्जन की व्यवस्था अवश्य करेंगे।

आदम : अच्छा तो चलो मेरे स्वामी ! अब चलें। मैं अपनी अन्तिम श्वासों तक सच्चाई के साथ तुम्हारी सेवा करता रहूँगा। अपनी सत्रह वर्ष की आयु से आज अस्सी वर्ष की आयु तक मैं इस घर में रहा हूँ पर आज इसे छोड़ता हूँ। सत्रह वर्ष की आयु में तो प्रायः लोग अपने भाग्य-निर्माण के लिये प्रयत्नशील रहते हैं पर अस्सी वर्ष की उम्र में तो कोई क्या भाग्य-वृद्धि की आशा करेगा ? भाग्य की इससे भी बढ़कर मेरे लिये क्या देन होगी कि मैं अपने स्वामी की सेवा के ऋण से उऋण होकर प्रसन्नतापूर्वक मर सकूँगा।

दृश्य ४

[अर्दन वन]

[रोजालिन्ड का गैनीमीड़ तथा सीलिया का ऐलीना के वेश में विदूषक के साथ प्रवेश]

रोज़ा० : हे भगवान (जूपीटर) मेरा हृदय कितना दुःखी है।

टचस्टोन : मुझे हृदय की तो कोई परवाह नहीं है वशर्त्ते मेरे पैर न थकें।

रोज़ा० : मेरे इस तरह दुःखी होने तथा स्त्रियों की तरह रोने से तो मेरे पुरुष-वेश पर कलंक आता है और फिर मुझे तो अपनी दुर्बल वहिन सीलिया को भी तो धैर्य्य और सन्तोष वन्धाना है फिर पुरुष का-सा यह वीर वेश पहन कर स्त्रियों की तरह क्यों मैं अपना साहस खोऊँ। मेरी प्यारी ऐलीना ! थोड़ी हिम्मत रखो।

सीलिया : मैं तुमसे विनती करती हूँ प्यारी वहिन ! मुझसे अप्रसन्न न होओ। मैं अव तनिक भी आगे चलने से असमर्थ हूँ।

टचस्टोन : अगर मेरी वात पूछो तो मैं तो वजाय तुम्हें उठा कर आगे ले जाने[1] के तुम्हारी वात ही मान जाता और यदि उठा ले भी जाता तो भी मुझे क्या मिलता ? तुम्हारी जेव तो पैसे-धेलों से विलकुल खाली है।

रोज़ा० : अरे, यह तो अर्दन वन है।

टचस्टोन : अरे हाँ, मैं तो अव अर्दन वन में हूँ। ओह, घर पर मैं

---

१. यहाँ विदूषक ने 'वीअर' (Bear) शब्द के दो भिन्न अर्थ लिये हैं। पहले 'वीअर' का अर्थ है 'सहन करना', दूसरे स्थान पर अर्थ है 'उठाकर ले जाना'। शेक्सपियर अपने नाटक के पात्रों के मुंह से इस तरह के 'पन्स' (Puns) का प्रयोग प्रायः कराते हैं जिनकी भाषागत सुन्दरता को हिन्दी अनुवाद में लाना कुछ कठिन अवश्य है।

कितने अधिक मज़े में था ! थोड़ा बेवकूफ अवश्य था पर यहाँ तो उससे भी अधिक बन गया हूँ लेकिन ख़ैर, यात्रियों को तो मार्ग की कठिनाइयों को सहते हुए संतोष ही रखना चाहिये।

रोज़ा० : क्या अच्छी बात है, ऐसी ही अच्छी धारणा रखो टचस्टोन !

[कोरिन और सिल्वियस का प्रवेश]

वह देखो, कौन आ रहे हैं यहाँ ? एक नवयुवक और एक वृद्ध कोई गम्भीर वार्ता करते हुए आ रहे हैं।

कोरिन : तुम्हारे व्यवहार के कारण ही तो वह तुमसे अभी तक घृणा करती है।

सिल्वियस : पर ओ कोरिन ! काश, तुम इतना समझ पाते कि मैं उससे कितना अधिक प्रेम करता हूँ।

कोरिन : हाँ-हाँ, मैंने भी प्रेम किया है, इसलिये इसका थोड़ा-बहुत अनुमान अवश्य लगा सकता हूँ।

सिल्वियस : नहीं कोरिन ! तुम बूढ़े हो इसलिये सही रूप से यह अनुमान नहीं लगा सकते हो कि मैं उसे कितना प्यार करता हूँ। हो सकता है कि तुम अपनी जवानी के दिनों में एक सच्चे प्रेमी रहे हो और यह भी सम्भव है कि तुमने अपनी प्रेयसी की याद में पूरी रात निश्वास छोड़ते-छोड़ते ही बिता दी हो पर यह समझ लो कि अगर तुम्हारा प्रेम मेरे प्रेम जैसा होता तो तुम उस प्रेम के उन्माद में न जाने कितने विचित्र पागलपन के काम कर गये होते। इसी लिये तो मैं कहता हूँ कि निश्चित ही आज तक कभी किसी ने मेरे जैसा प्रेम नहीं किया।

कोरिन : ऐसे विचित्र तो हज़ारों काम किये हैं पर अब मैं भूल गया हूँ।

सिल्वियस : भूल गये हो ? तब तो तुमने निश्चित ही किसी से इतना

अगाध प्रेम नहीं किया, नहीं तो तुम्हें अपने पागलपन की छोटी से छोटी घटना भी, जो उस प्रेमोन्माद में घटी है, अवश्य याद रहती। तुमने प्रेम नहीं किया है कोरिन! बताओ, क्या तुमने मेरी तरह कभी अपनी प्रेयसी की प्रशंसा करते हुए श्रोताओं के हृदय को लुभाया है? नहीं, निश्चित ही तुमने प्रेम नहीं किया है। बताओ, क्या तुम्हारा भी उस समय तुम्हारे सारे मित्रों ने साथ छोड़ दिया था? यदि नहीं तो मैं दावे से कहता हूँ कि तुम प्रेम करना जानते तक नहीं। ओ फीबी! फीबी! फीबी!!

[प्रस्थान]

रोज़ा० : ओह! ग़रीब चरवाहे, कैसी बात है कि तुम्हारी हृदय-व्यथा की अनुभूति करते हुए मेरी स्वयं की व्यथा उभर आई है।

टचस्टोन : और इधर मेरी भी। मुझे खूब याद है जब मैं प्रेम में पूरी तरह खोया हुआ था तो एक दिन मैंने अपनी नंगी तलवार से उस पत्थर पर, जो रात्रि को प्रायः 'जेन स्माइल' को अपने ऊपर बैठाया करता था, ऐसा भीषण वार किया कि मेरी तलवार ही टूट गई और क्या-क्या नहीं किया। मैं आज तक नहीं भूला हूँ कि अपनी प्यार की मस्ती में मैंने उसकी छड़ी को और यहाँ तक कि उसकी गाय के थनों को जिन्हें पकड़ कर वह अपने कोमल हाथों से दूध दोहती थी, बार-बार चूमा है। कहाँ तक याद करूँ। उसकी याद में मैंने शकुन रूप में मटर के पौधे को भी प्रेम किया है। उसी से मैंने वे दो पौधे लिये थे और जब वह आई तो मैंने अपने आँसू बहाकर उन्हें उसे देते हुए कहा—मेरे लिये ही मेरी प्यारी, इन्हें पहन लो। क्या कहा जाये हम तो सच्चे प्रेमी हैं इसी तरह की विचित्र पागलपन की बात करने लगते हैं लेकिन छोड़ो यह सब कुछ, जब सारे प्राणी नाशवान हैं और हम एक न एक दिन

अवश्य मर जायेंगे तो प्रेम करने से बढ़कर और मूर्खता क्या होगी ?

रोज़ा० : जितना तुम जानते हो उससे तो कहीं अधिक बुद्धिमानी की बातें करने लगते हो ।

टचस्टोन : नहीं, मुझे तो तब तक अपनी योग्यता का ज्ञान ही नहीं होता जब तक इसके लिये मेरी एक न एक हड्डी-पसली टूट न जाये और इसके लिये मुझे कुछ आपत्ति सहनी पड़े ।

रोज़ा० : हे ईश्वर ! इस चरवाहे के मनोभाव तो मुझसे बहुत कुछ मिलते-जुलते हैं ।

टचस्टोन : और मेरे भी यही मनोभाव हैं पर सच, मैं तो इनसे परेशान हो गया हूँ ।

सीलिया : मेरी तुमसे यह प्रार्थना है कि जाकर उस आदमी से यह पूछो कि क्यों वह स्वर्ण के बदले में कुछ खाने को देगा ? सच, मैं तो भूख के मारे मरी जा रही हूँ ।

टचस्टोन : कहो, ऐ ग्रामवासी !

रोज़ा० : चुप रहो मूर्ख, क्या वह तुम्हारा कोई सम्बन्धी है जो इस तरह पुकार रहे हो ?

कोरिन : कौन बुला रहा है मुझे ?

टचस्टोन : वृद्ध महाशय ! आपको आपसे ऊँचे पद वाले लोग ही बुला रहे हैं ।

कोरिन : लेकिन अन्य स्थान पर तो वे बहुत बुरी हालत में हैं ।

रोज़ा० : चुप रहो, मैं कहती हूँ । नमस्ते मित्र !

कोरिन : आपको तथा अन्य महानुभावों को मेरी ओर से नमस्ते ।

रोज़ा० : हे कृपालु चरवाहे ! मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या तुम धन के बदले में या हमसे स्नेह करने के फलस्वरूप इस निर्जीव

वन में हमारे रहने तथा भोजन की व्यवस्था कर सकते हो। हमारे साथ एक युवती है जो कि यात्रा में वहुत थक गई है और भूख के मारे मूर्च्छित-सी हो रही है।

कोरिन : मान्यवर महोदय ! मुझे उसकी इस अवस्था पर खेद है और मैं अपने जीवन से भी अधिक उसके जीवन-रक्षा की कामना करता हूँ। काश ! मेरे पास उसकी सेवा करने के लिये पर्याप्त साधन होते। मैं तो स्वयं एक मज़दूर हूँ और ये भेडें जिनको मैं चरा रहा हूँ, मेरी नहीं हैं। मेरे स्वामी वहुत ही कंजूस और नीच प्रकृति के आदमी हैं। उन्होंने कभी कोई ऐसा उदारतापूर्ण सत्कार्य नहीं किया जिससे उन्हें मृत्युपर्यन्त स्वर्ग का सुख मिल सके। इसके अतिरिक्त उसकी कुटिया, यह भेड़ों का झुण्ड और जो कुछ भी चारा है सव विक्रय के लिये तैयार हैं। चूँकि वह यहाँ उपस्थित नहीं है इसलिये हमारे इस वाड़े में कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिससे हम आपकी भूख मिटा सकें। लेकिन इसमें क्या, आप स्वयं आकर देख लीजिये। आइये, मैं आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ।

रोज़ा० : कौन है वह, जो भेड़ों के इस झुण्ड को और चरागाह को खरीदेगा ?

कोरिन : वही नौजवान ग्रामवासी जिसे आपने यहाँ अभी-अभी देखा है लेकिन वह कोई वस्तु इसी समय खरीदना नहीं चाहता।

रोज़ा० : अगर यह ईमानदारी का सौदा है तो मैं आपसे सविनय निवेदन करता हूँ कि आप यह झोंपड़ी, चरागाह, और भेड़ों का झुण्ड खरीद लीजिये। इसकी कीमत हम आपको अपने पास से दे देंगे।

सीलिया : और हम तुम्हारा वेतन भी वढ़ा देंगे। मुझे यह स्थान वहुत पसन्द है और मैं यहीं रहना चाहती हूँ।

कोरिन : निश्चित ही यह सब कुछ विकने वाला है। मेरे साथ चलो। यदि दूसरों के कथानुसार यह स्थान, ये वस्तुएँ और यहाँ का जीवन-आपको अच्छा लगे तो अवश्य मैं एक वफ़ादार चरवाहे की तरह आपकी सेवा करूँगा और आपके पैसे से मैं तुरन्त ही इस सबको खरीद लूंगा।

[प्रस्थान]

दृश्य ५

[वन-प्रान्त]

[अमीन्स, जेक्स तथा अन्य लोगों का प्रवेश]

अमीन्स : —गीत—

हरे वृक्ष की मृदु छाया में।
सघन सघन इस चल छाया में॥
मेरे साथ लेटना किस को,
भाता है मुझ को वतला दो!
तान मिला मृदु-खग-कलरव में,
गाना भाता है वतला दो?
हरे वृक्ष की मृदु छाया में,
सघन चपल चल दल छाया में॥
आओ आओ हे प्रिय आओ,
आओ मेरे प्राण यहाँ पर।
केवल कठिन शीत को तज कर,
कोई भी है रिपु न यहाँ पर॥
हरे वृक्ष की मृदु छाया में,
सघन चपल मीठी छाया में॥

जेक्स : और गाओ, मैं तुमसे विनय करता हूँ और गाओ।

अमीन्स : लेकिन इस गीत से तुम उदास हो जाओगे जेक्स!

जेक्स : मैं इस गीत के लिये तुम्हें धन्यवाद देता हूँ। कृपया और गाओ जैसे एक नेवला अण्डे को चूसकर अपना भोजन प्राप्त करता है उसी प्रकार इस गीत की दुःखमयी भावनाओं से भोजन की तरह मेरी आत्मा को सन्तोष मिलता है। मैं अभी और गीत सुनना चाहता हूँ।

अमीन्स : लेकिन मेरी आवाज़ तो अजीब खुरदरी और बेसुरी है इसलिये मैं जानता हूँ कि मैं अपने गाने से तुम्हें प्रसन्न नहीं कर सकूंगा।

जेक्स : मुझे आवश्यकता नहीं कि तुम मुझे प्रसन्न करो, मुझे तो गाना चाहिये। गाओ। गाओ, उस गीत का दूसरा छन्द गा कर सुनाओ। अपने गीत में तुम इन्हें छन्द ही कहते हो न ?

अमीन्स : यह तो तुम्हारे ऊपर है जेक्स, जो चाहो कह लो।

जेक्स : नहीं, ख़ैर उनके नाम पूछने की मुझे कोई परवाह नहीं। वे मेरे ऋणी थोड़े ही हैं। कृपया क्या तुम अपना गाना शुरू करोगे ?

अमीन्स : ख़ैर, तुम इतना कहते हो तो गाता हूँ, वैसे मुझे तो अच्छा नहीं लगता है।

जेक्स : तब तो यदि मैं किसी को धन्यवाद दूं भी तो केवल तुम्हें ही दूंगा। वैसे कहा तो यह जाता है कि इस तरह का धन्यवाद लेना-देना दो बन्दरों की लड़ाई और खींचा-तानी के सिवाय और कुछ नहीं है। सच, जब कोई आदमी मुझे हार्दिक धन्यवाद देता है तो मैं तो यही समझता हूँ कि मैंने इसे एकाध पैसा दे दिया है इसी लिये भिखारी की तरह मुझे यह धन्यवाद दे रहा है। अच्छा, छोड़ो। अब तो गाओ और आप लोग जो नहीं गा रहे हैं, कृपया चुप ही रहें।

अमीन्स : अच्छा तो अब मैं अपना गाना शुरू करता हूँ और आप

महानुभाव तब तक यहां कुछ बिछा दें क्योंकि इसी वृक्ष के नीचे भोजन करेंगे। वे सारे दिन तुम्हें ढूंढ़ते रहे हैं।

जेक्स : और मैं सारे दिन उससे मिलना टालता रहा हूँ। वह बहुत तर्क करने वाला और कुछ झगड़ालू प्रकृति का आदमी है इसलिये मैं उसकी सोहबत पसन्द नहीं करता। जितने विषयों पर वह विचार करता है उतने ही विषयों पर मैं भी करता हूँ पर मैं तो उसके लिये ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ, कभी भी एक पशु की दृष्टि से उन्हें नहीं देखता। अच्छा, आओ अब लो कुछ गाओ।

अमीन्स : —गीत—

और अन्य सभी

जिसे नहीं हों आकांक्षाएं, (सभी एक साथ)
जिसे सूर्य्य की मधुर ज्योति प्रिय,
जो मिल जाये वह ही खाकर
मग्न रहे, हो संतोषी प्रिय,

आओ, हे प्रिय आओ!
आओ मेरे प्राण यहाँ पर!
केवल कठिन शीत को तजकर,
कोई भी है रिपु न यहाँ पर;

हरे वृक्ष की मृदु छाया में
सघन सघन इस चल छाया में।

जेक्स : यद्यपि मैं कोई कवि नहीं हूँ लेकिन मैंने कल ही तुम्हारा जैसा एक गीत लिखा है। लो सुनो।

अमीन्स : तब तो मैं उस गीत को अवश्य गाऊँगा।

जेक्स : वह इस तरह है :

यदि कोई हठ के वश होकर
अपने सुख वैभव को तज दे।

खर बन जाये मनुज स्वयं ही
मूर्ख-चक्र में आये फँस के ॥
ड्यूक्डेम, ड्यूक्डेम, ड्यूक्डेम ।
उसे वास्तविक खर पाने को
मेरे निकट यहीं आन दो ।
यहीं मिलेगी उसे आत्मछवि
मूर्ख-चक्र में ही आने दो ॥

अमीन्स : यह ड्यूक्डेम क्या बला है ?

जेक्स : यह ग्रीक निवासियों का मूर्खों को एक घेरे में बुलाने के लिये प्रयोग किये जाने वाला एक शब्द है। खैर, अब मैं सोने जाता हूँ अगर सो सका तो और यदि नहीं तो फिर मैं मिस्र देश में पहले पहल पैदा होने वाले उन धन-सम्पत्ति के मालिकों को खूब गाली दूंगा।

अन्मीस : और मैं ड्यूक को खोजकर लाता हूँ क्योंकि भोजन लग चुका है ।

दृश्य ६

[वन-प्रान्त]

[ऑरलेन्डो और आदम का प्रवेश]

आदम : मेरे प्यारे स्वामी ! अब मुझसे और आगे नहीं चला जाता । देखो तो भूख के मारे मरा जा रहा हूँ । मैं तो यहीं लेटता हूँ स्वामी ! थोड़ी देर बाद मर जाऊँगा तो यही जगह मेरी कब्र होगी। अच्छा अलविदा मेरे कृपालु स्वामी !

ऑरलेन्डो : यह क्या कर रहे हो आदम ? क्या तुममें इससे अधिक साहस नहीं है ? थोड़ा साहस और धैर्य रखो । इस तरह बिलकुल निराश मत होओ । लो, मैं जाता हूँ

और इस भयावने वन में मुझे कोई भी पशु मिल जायेगा तो उसे तुम्हारे लिये मार कर ले आता हूँ और नहीं तो मैं स्वयं उस पशु के हाथों मर जाऊँगा। तुममें अभी से शक्ति बाकी है फिर ऐसा क्यों सोचते हो कि कुछ ही क्षणों में तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी। मेरे लिये आदम ! थोड़ा धैर्य्य रखो और कुछ समय के लिये मृत्यु से संघर्ष करते रहो। मैं अति शीघ्र ही वापिस आ जाऊँगा और यदि मैं तुम्हारे खाने के लिये कुछ नहीं ला पाया तो उस समय कह दूंगा—चले जाओ मेरे आदम, मुझे छोड़कर मृत्यु की गोद में चले जाओ। लेकिन यदि तुम मेरे आने से पहले मुझे छोड़ कर चल वसे तो मैं यही कहूँगा आदम, कि तुम मेरे परिश्रम की हँसी-सी उड़ाकर चले गये। शावास, वहुत अच्छा ! अब तुम्हारा चेहरा कुछ खिलता हुआ मालूम दिया। मैं अभी तुरन्त ही तुम्हारे पास वापिस आ जाऊँगा, लेकिन आओ तुम यहाँ ठंडी हवा में पड़े हुए हो मैं तुम्हें किसी सुरक्षित स्थान में ले चलता हूँ। विश्वास कर लो कि यदि इस वन में एक भी पशु-पक्षी जीवित है तो मैं तुम्हें भूख से तड़प-तड़प कर नहीं मरने दूंगा आदम ! अच्छा, अब विदा। देखो, धैर्य्य न खोना।

दृश्य ७

[वन-प्रान्त]

[एक मेज लगी हुई है। ज्येष्ठ ड्यूक, अमीन्स तथा सरदारों का निर्वासित प्राणियों की भाँति प्रवेश]

ज्येष्ठ ड्यूक : मेरा विचार है कि उसे तो पशु वन जाना चाहिये क्योंकि मनुष्य की-सी तो एक भी वात उसमें नहीं दीखती।

पहला सरदार : मेरे स्वामी ! वह वस अभी-अभी यहाँ से गया है।

यहाँ मधुर गीत सुनता हुआ वह मस्त हो रहा था।

ज्येष्ठ ड्यूक : यदि ऐसा वेतुका आदमी (जेक्स) भी संगीत का शौकीन हो जाये तो निश्चित समझ लो कि संसार में शीघ्र ही कोई न कोई विपत्ति आने वाली है। जाओ, उसे खोज कर तो लाओ। उससे कहना कि मुझे उससे कुछ वातचीत करनी है।

[जेक्स का प्रवेश]

पहला सरदार : लो मेरी मेहनत बची। वह तो स्वयं ही आ गया।

ज्येष्ठ ड्यूक : कहिये जनाव के मिज़ाज कैसे हैं? वाह, यह भी आपका क्या तरीक़ा है कि आपके वेचारे ग़रीव दोस्त आपकी सोहवत के लिये तरसते फिरा करें। अरे, खूव! आपके चेहरे पर तो खुशी की चमक दिखाई दे रही है।

जेक्स : आज इस जंगल में एक मूर्ख मिल गया था। विलकुल बहुरूपिया था, रंग-विरंगे कपड़े पहने था। कैसी अजीव दुनिया है जो जंगल की इस ज़िन्दगी को दुःखदायी कह कर पुकारती है। सच मुझे तो उस मूर्ख से मिलने में वही मजा आया जो खाना खाने में आता है। वह ज़मीन पर लेटा हुआ धूप में गर्मी ले रहा था और बड़े अच्छे रहस्य-भरे हुए शव्दों में अपने भाग्य को कोस रहा था, फिर भी मेरा विश्वास है कि वह मूर्ख ही था। मैंने उसके पास पहुँचते ही उसे मूर्ख ही कहकर नमस्ते की। इस पर उसने कहा—नहीं, जव तक भाग्य मेरे अनुकूल न हो जाय तव तक मुझे मूर्ख न कहो और उसके पश्चात् उसने अपनी जेव से एक घड़ी निकाली और उसकी तरफ शून्य दृष्टि से देखते हुए वड़े वुद्धिमान की-सी मुद्रा वना कर कहा—इस घड़ी में इस समय दस वजे हैं। इस तरह समय की गति के साथ हम यह जान सकते कि जीवन प्रतिक्षण कैसे वदलता रहता है। एक घंटे

ही पहले नौ वजे थे और एक घंटे बाद ग्यारह वज जायेंगे। इस तरह जैसे-जैसे ये घंटे बीतते जाते हैं वैसे-वैसे ही हम अपनी वृद्धावस्था की तरफ़ अग्रसर होते जाते हैं और इसी समय की गति के बीच मृत्यु के पश्चात् हमारी सत्ता पूर्ण रूप से समाप्त हो जाती है। आप सुनें तो मैं इसके बारे एक कहानी कहूँ। इस तरह जब मैंने उस वहुरूपिये मूर्ख को समय की गति पर ऐसी शिक्षाप्रद बातें करते सुना तो सच मेरा हृदय यह सोचते हुए गद्गद् होकर एक मुर्गी की तरह अन्दर ही अन्दर हूँक उठा कि ऐसे मूर्ख भी इतनी गम्भीर और रहस्य-भरी बातें कर सकते हैं और मैं पूरे एक घंटे तक उसकी घड़ी की तरफ़ देखता हुआ हँसता रहा। ओ प्रिय मूर्ख! ओ श्रेष्ठ मूर्ख! सच तुम्हारी यह रंग-बिरंगी पोशाक ही सबको पहननी चाहिये।

ज्येष्ठ ड्यूक : ऐसा कौन-सा मूर्ख है वह ?

जेक्स : वह एक श्रेष्ठ मूर्ख है। वह राजदरबार में भी रह चुका है और कहता है कि यदि स्त्रियों को यौवन और सौन्दर्य्य का उपहार मिला है तो यह भी तो गुण उनमें है कि उसका उन्हें पूरी तरह ज्ञान है और उसके उस सूखे मस्तिष्क में, जो ठीक उसी तरह का है जैसे समुद्री यात्रा के अन्त में कोई सूखा-सा बिस्कुट बच रहता है, न जाने कितनी ऐसी विचित्र बातें भरी हुई हैं। साधारण-सी बातों को देखकर वह एक अद्भुत ढंग से उन्हें प्रगट करता है। काश! मैं भी उस जैसा एक मूर्ख होता और उसी की तरह रंग-बिरंगी पोशाक पहनता।

ज्येष्ठ ड्यूक : तुम्हें भी एक ऐसी पोशाक मिल जायेगी।

जेक्स : बस, यही मेरी एक प्रार्थना है बशर्ते कि आप लोग मेरे बारे में बनाई हुई अपनी यह पूर्व धारणा बदल दें कि मैं कुछ बुद्धि

भी रखता हूँ, क्योंकि इस तरह की रंग-विरंगी पोशाक पहन कर तो मैं बिलकुल मूर्ख दिखूँगा और उस समय आपकी वह धारणा निर्मूल सिद्ध होगी। इसके अतिरिक्त मुझे वायु की तरह ऐसी कहने-सुनने की स्वतंत्रता होनी चाहिये कि मैं किसी पर भी जैसा चाहूँ कटु व्यंग कर सकूँ क्योंकि पेशेवर मूर्खों को ऐसी ही स्वतंत्रता रहती है। जिनके दिल पर भी मेरी बातों की गहरी चोट बैठे उन्हें उतने ही ज़ोर से हँसना चाहिये। आप पूछिये, उन्हें ऐसा क्यों करना चाहिये ? तो इस 'क्यों' का अर्थ भी ऐसा साफ़ है जैसे गाँव के उस गिरजाघर का रास्ता। वह जो एक बार मूर्ख के कटु व्यंग का शिकार बन गया है, चाहे मन में अत्यंत क्रुद्ध हो लेकिन यदि उस पर अपना क्रोध दिखाता है तो उससे बढ़कर कोई मूर्ख न होगा और यदि क्रोध नहीं दिखाता है तो मूर्ख की चतुराई-भरी चालों से और हाव-भावों से बुद्धिमान बने हुए मनुष्य की सारी कमज़ोरियाँ सबके सामने खुल ही जाती हैं। तो लाओ अब मुझे अपनी वह पोशाक दो और मुझे किसी से भी कुछ कहने की स्वतंत्रता दो तब मैं पूरी तरह इस समाज की सारी खराबियों को दूर कर डालूँगा। यदि लोगों ने मेरे इस नुस्खे को स्वीकार किया तो निश्चय से ही उनमें कोई दोप न रह जायेंगे।

ज्येष्ठ ड्यूक : कुछ तो सोच-विचार कर शरम करो। मैं सब समझता हूँ कि तुम क्या करोगे ?

जेक्स : क्या आप समझते हैं कि रास्ते में किसी को कोई हानि पहुँचाऊँगा ?

ज्येष्ठ ड्यूक : हाँ तुम इस तरह समाज के दोपों पर व्यंग कस कर बहुत ही घृणित कार्य्य करोगे क्योंकि थोड़ा अपनी तरफ तो देखो

कि तुमने अपना जीवन कैसे पशुओं की तरह आवारापन, काम-वासना और नीचता के साथ विताया है और यदि तुम्हें इस तरह की स्वतंत्रता दी गई तो जैसे तुम्हारा यह सारा ज्ञान पूरी तरह पाप और दुराचर से भरा हुआ है उसी तरह तुम सारे संसार को पापमय बना डालोगे।

जेक्स : ऐसा क्यों ? यदि कोई भी दुराभिमान की कटु आलोचना करता है तो इससे वह किसी व्यक्ति-विशेष को इस आलोचना का शिकार थोड़े ही वनाता है फिर क्या यह सत्य नहीं है कि मनुष्य के जीवन में दुराभिमान एक ज्वार की तरह चढ़ता है और तव तक वढ़ता ही जाता है जव तक उस मनुष्य का भाग्य पूरी तरह करवट न वदल जाय। आप ही वताइये, जव मैं यह कहता हूँ कि शहर की स्त्री अपनी वेश-भूषा के वेकार के दिखावे में अपनी औकात से ज़्यादा खर्च कर डालती है तो क्या मेरा संकेत शहर की किसी विशेप स्त्री की तरफ है ? कौन कह सकता है कि मैं उस अमुक स्त्री की आलोचना कर रहा हूँ ? क्या उसी तरह उसकी पड़ौसिन नहीं हो सकती ? इसके अतिरिक्त ऐसा कौन नीच मनोवृत्ति का मनुष्य है जो यह कहता है कि इस दुराभिमान से भरी वीरता का मूल्य मुझे नहीं चुकाना पड़ता ? मान लो, यदि कोई यह भी सोच ले कि मेरा संकेत उसी की ओर है तो क्या यह स्पष्ट नहीं हो जाता कि मेरे शव्द सही रूप में उसकी मूर्खता को व्यक्त कर रहे हैं ? वस यही मैं करना चाहता हूँ, तव आप ही वताइये कि मेरे शव्दों से कोई कैसे पापमय हो जायेगा ? यदि मेरे आलोचना भरे हुए शव्द उसके चरित्र और व्यवहार पर ठीक उतरते हैं तो उसे अपने आपको दोप देना चाहिये न कि मुझे और यदि उसे इसका पता ही न चले कि उसके चरित्र पर ही

यह कटु आलोचना की गई है तब तो मेरी आलोचना विस्तृत रूप से इसी तरह सबके लिये है जैसे कोई वन का हंस अपना कोई निश्चित गंतव्य न बनाते हुए निर्बाध गति से चारों ओर फिरता है। किसी व्यक्ति-विशेष से मेरा मतलब हो ही नहीं सकता। अरे यह कौन आ रहा है यहाँ ?

[ऑरलेन्डो का नंगी तलवार लिये हुए प्रवेश]

ऑरलेन्डो : बस, ख़बरदार, अब और अधिक न खाना !

जेक्स : अरे, यह क्या ? मैंने तो अभी तक कुछ खाया ही नहीं है।

ऑरलेन्डो : और न तुम अब खाओगे जब तक मेरी आवश्यकता, जो तुम्हारी से कहीं अधिक है, पूरी न हो जाय।

जेक्स : यह मुर्गा न जाने किस बीज से पैदा हुआ है।

ज्येष्ठ ड्यूक : क्यों भाई, क्या अत्यधिक संकट में होने के कारण तुम्हारा व्यवहार इतना कटु हो गया है या सदाचार से तुम्हें कुछ घृणा है जो तुम इस तरह धृष्टतापूर्ण व्यवहार कर रहे हो मानो सभ्यता तुम्हारे पास तक न फटकी हो ?

ऑरलेन्डो : तुमने अपने पहले शब्दों में ही मेरी पीड़ा समझ ली। सच, इस घोर विपत्तियों के जीवन में छिदा हुआ ही मैं भले लगने वाले सारे शील और सदाचार को भूल-सा गया हूँ; वैसे मैं कोई असभ्य गँवार नहीं हूँ, सुसंस्कृत समाज में मैं पला हूँ लेकिन बस, ख़बरदार, खाने के हाथ मत लगना मैं कहता हूँ ! जब तक मेरी यह कठिनाई-भरी समस्या हल न हो जाय तब तक यदि किसी ने एक भी फल के हाथ लगाया तो मेरे हाथों उसका वध होना निश्चित है।

जेक्स : लेकिन तर्क के साथ तुम्हारे प्रश्न को हल करना तो असम्भव ही है इसलिये ठीक है मेरा वध तो निश्चित है।

ज्येष्ठ ड्यूक : क्या चाहते हो तुम ? लेकिन यह समझ लो कि जो काम तुम नम्रतापूर्ण व्यवहार से निकाल सकोगे वह इस तरह अपना बल दिखाकर न निकाल पाओगे।

ऑरलेन्डो : मुझे भोजन की अत्यधिक आवश्यकता है। मुझे वही चाहिये।

ज्येष्ठ ड्यूक : अच्छा तो आओ और हमारे साथ बैठकर खाओ। हम तुम्हारा स्वागत करते हैं।

ऑरलेन्डो : ओह, आप तो इतनी नम्रता के साथ बोल रहे हैं। मुझे क्षमा करना, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ। मैंने सोचा था कि इस वन में सभी वन के पशुओं की तरह होंगे इसलिये मैंने इतना क्रुद्ध होकर ऐसे कटु शब्दों का प्रयोग किया। लेकिन हे महानुभाव ! आप जो इस उजाड़ निर्जन वन-प्रान्त में अत्यंत दुःख और चिन्ताओं से घिरे हुए अपना समय बिता रहे, कोई भी हों पर यदि आपके जीवन में भी कभी अच्छे दिन आये हैं, या आपने कभी गिरजाघर के प्रांगण में खड़े होकर किसी शव पर बजते हुए उन घंटों को सुना है, या आप कभी किसी सज्जन मनुष्य द्वारा दिये गये भोज में सम्मिलित हुए हैं, या कभी भी आपने अपनी आँखों से निकली एक भी आँसू की बूंद को पोंछा है और किसी पर दया करना या किसी से दया की अपेक्षा करना जानते हैं तो मेरे इस नम्र निवेदन को अवश्य स्वीकार करिये। इसी आशा में मैं अपने इस उच्छृंखल व्यवहार के लिये लज्जित होता हूँ और लीजिये अपनी नंगी तलवार म्यान में डाल लेता हूँ।

ज्येष्ठ ड्यूक : यह सत्य है कि हमने अपने जीवन में अच्छे दिन देखे हैं और गिरजाघर के पवित्र घंटे की ध्वनि को गुंजारित होते

हुए भी सुना है। इसके अतिरिक्त हम सज्जन मनुष्यों द्वारा दिये गये भोजों में भी सम्मिलित हुए हैं और जब कभी करुणा से हृदय भर आता था तो हमने अपनी आँखों से निकली आँसू की बूंदों को भी पोंछा है। इसी लिये कृपया आप यहाँ बैठ जाइये और आपकी कठिनाई में जो भी सहायता करने के योग्य हम हैं, अवश्य करेंगे। आप पूरी तरह विश्वास रखें।

ऑरलेन्डो : तो फिर आप थोडी देर भोजन करने से रुके रहिये। जिस तरह एक हरिणी अपने भूखे-प्यासे बच्चे को लाती है और उसे कुछ खिलाती है उसी तरह मैं भी किसी को लेने जाता हूँ। उधर बेचारा एक ग़रीब बूढ़ा जो सच्चे प्रेम की स्फूर्ति लिये हुए काफ़ी दूर तक मेरे साथ चलता आया है, भूख से तड़प रहा है। इधर तो उतनी तेज़ भूख और उस पर उसकी वृद्धावस्था। इस तरह बेचारा दोनों तरफ़ से पूरी तरह घुट रहा है। जब तक मैं उसका पेट न भर दूं तब तक अन्न का एक दाना मैं नहीं छू सकता।

ज्येष्ठ ड्यूक : तो जाओ, उसे ले आओ और हम तुम्हें विश्वास दिलाते हैं कि तुम्हारे आने तक भोजन के हाथ नहीं लगायेंगे।

ऑरलेन्डो : इस तरह विश्वास देने के लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूँ और भगवान से आपके लिये शुभकामना करता हूँ।

[प्रस्थान]

ज्येष्ठ ड्यूक : देखा ? केवल हमीं इस संसार में दुःखी नहीं हैं। हमारे इस दुःखी जीवन के अतिरिक्त विश्व के इस विशाल रंग-मंच पर न जाने कितने और दुःख से भरे हुए दृश्य हैं जिन्हें हमने अभी तक नहीं देखा है।

जेक्स : सच, यह विश्व एक विशाल रंग-मंच है और सभी स्त्री-पुरुष

नाटक के पात्रों की तरह इस रंग-मंच पर आते हैं और चले जाते हैं। प्रत्येक अपने समय में कई काम करते हैं और उसका सम्पूर्ण जीवन सात अङ्कों में विभाजित होता है। सबसे पहले अङ्क में तो मनुष्य एक बच्चे की स्थिति में अपनी धाय के हाथों में रोता-बिलखता है इसके बाद थोड़ा बड़ा होता है तो प्रातःकाल अपना मुँह धोकर और बगल में किताबों का थैला लटका कर स्कूल के लिये रेंगता हुआ इस तरह जाता है जैसे कि उसके ऊपर कोई बोझा हो। जब इससे भी बड़ा हो जाता है तो किसी के प्रेम-पाश में बँधकर इस तरह विरह-वेदना में निश्वासें छोड़ा करता है जैसे धातु गलाने वाली भट्ठी से धुँआ निकला करता है और फिर अपनी प्रियतमा के लुभावने नेत्रों की प्रशंसा में बैठकर गीत लिखा करता है। इसके पश्चात उस सिपाही की स्थिति में हम उसे देखते हैं,जो विदेशी भाषा में प्रायः सौगन्ध खाया करता है और एक तेन्दुए के बालों की तरह भयावनी दाढ़ी बढ़ा लेता है और जो अपने सम्मान की सबसे अधिक चिन्ता करता है और अपने नाम तथा यश के लिये तोप के मुँह के सामने खड़े होने में तनिक भी भय नहीं खाता। लड़ाई-झगड़े के लिये तो वह हर समय तत्पर रहता है। इसके पश्चात् हम उसे मोटे पेट वाले न्यायाधीश के रूप में देखते हैं, जो स्वादिष्ट भोजन करने का शौकीन है और जिसकी आँखें तेज होती हैं और बहुत ही शानदार ढंग से कटी दाढ़ी होती है। अपनी बातचीत के बीच में वह न जाने कितनी ही रहस्य-भरी पहेलियाँ-सी कहता है और कितने ही उदाहरण देता है। इस तरह इस रंग-मंच पर वह अपना काम करता है। छठवें अङ्क में वह एक पतले विदूषक का काम करता है जो अपने पैरों में तो 'स्लिपर' पहनता है, नाक पर चश्मा रखता है और अपनी बगल

में एक थैला रखता है। वे मोज़े जो उसने आगे के दिनों के लिये बचा कर रख छोड़े थे अब उसकी पतली टाँगों के लिये बहुत बड़े पड़ते हैं और उसका आवाज़ के तो कहने ही क्या हैं। जहाँ पहले थोड़ी मरदानी आवाज़ थी अब तो बिलकुल बच्चों की-सी पतली आवाज़ में ही वह बोलता है। अब सबसे अंतिम दृश्य जिससे यह विचित्र घटना-प्रधान नाटक समाप्त होता है वह है दूसरा बचपन जहाँ पूर्व स्मृतियाँ पूरी तरह मिट-सी जाती हैं। मनुष्य के न तो उस समय दाँत बचते हैं, न आँखों की ज्योति ही और न कोई मुँह का स्वाद। वास्तव में उस समय तो मस्तिष्क तथा शरीर की सारी शक्ति नष्टप्रायः-सी हो जाती है।

[ऑरलेन्डो तथा आदम का पुनः प्रवेश]

ज्येष्ठ ड्यूक : आइये, स्वागत है। वृद्ध पुरुष को बिठा लो और आओ उसे खाना खिला लो।

ऑरलेन्डो : उसके लिये मैं आपको बहुत धन्यवाद देता हूँ।

आदम : वास्तव में आप धन्यवाद के पात्र हैं। मैं अपनी तरफ़ से भी आपको धन्यवाद देता हूँ, यद्यपि मैं बड़ी कठिनाई से बोल पा रहा हूँ।

ज्येष्ठ ड्यूक : तो आओ पहले खाना खाओ। मैं अब तुमसे तुम्हारे जीवन-सम्बन्धी कोई प्रश्न नहीं पूछूंगा। आओ मेरे अच्छे भाई, कोई अच्छा-सा गीत सुनाओ।

अमीन्स :

—गीत—

शीत की वह वह कठिन बयार !
वेग से कर लो मुझ पर वार !

मनुज की कृतघ्नता की भाँति
काटती तू न कभी दुर्दांत,
न तेरा उतना पैना दाँत !
देख जो तुझे न पाती आँख !
भले है तेरा श्वास कृतान्त !!
चलो हे चलो कि गाओ झूम
हरी झाड़ो को , झूमो देख
मिताई बहुत एक छल मात्र,
बहुत कर प्रेम मूर्खता एक
हरी है छविमय धरती बड़ी,
जिन्दगी है मस्ती का नाम !
क्रूर नभ ! जम जा हिम सा वज्र !
किंतु फिर भी तू रहे अकाम ?
भुलाई-कृतज्ञता की भाँति
न तू कर सकता कभी अशांत,
जलों की ले आकृतियां छीन
किन्तु तेरा है डसना दीन।
नहीं उसमें विष-तीव्र कठोर,
मीत के अविश्वास सा घोर
चलो हे चलो कि गाओ झूम।

ज्येष्ठ ड्यूक: यदि तुम सर रोलैन्ड के पुत्र हो, जैसा तुमने अपनी बात-चीत के बीच में सचाई के साथ संकेत किया है, और यदि मेरी आँखें धोखा नहीं दे रही हैं तो तुम शकल-सूरत से बिलकुल वही लगते हो। आओ, मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ। क्या तुम जानते हो कि मैं वही ड्यूक हूँ, जो तुम्हारे पिता से बहुत प्रेम करता था ?

अब चलो और मेरे स्थान पर चलकर मुझे अपने जीवन की अन्य बातें भी बताओ। वृद्ध महानुभाव ! तुम्हारे स्वामी की तरह ही तुम्हारा भी स्वागत है। देखो, थोड़ा उसे हाथ का सहारा दो और मुझे अपना हाथ दो और अब मुझे अपने जीवन की सारी बातें सुनाओ।

तीसरा अंक

दृश्य १

[महल का प्रकोष्ठ]

[ड्यूक फ्रैड्रिक का ओलिवर तथा सरदारों के साथ प्रवेश]

ड्यूक फ्रै० : तब से उसे देखा तक नहीं ? नहीं, नहीं महाशय, यह कभी नहीं हो सकता। क्या बताऊँ मेरे स्वभाव में इतनी अधिक दया है, यदि यह न होती तो मैं अभी बेकार के कारणों में न बँधकर तुम्हें इसका बदला चुकाता ! लेकिन फिर भी कान खोल कर सुन लो। जहाँ कहीं भी हो अपने भाई को खोज कर लाओ। संसार के किसी भी कोने में वह क्यों न छिपा हो उसे मृत या जीवित हमारे सामने उपस्थित करो। इसके लिये हम एक वर्ष की तुम्हें अवधि देते हैं। यदि इस बीच में तुम उसे न ला सके तो समझ लो तुम्हें हमारे राज्य में रहने या जीविकोपार्जन करने की अनुमति नहीं दी जायेगी और तुम्हारी सारी जमीन और इसके अतिरिक्त वे सभी वस्तुएँ, जिन्हें तुम अपनी कहते हो, तुम से छीन ली जायेंगी। वे तुम्हें तब तक वापिस नहीं मिलेंगी जब तक तुम्हारे भाई के मुँह से कुछ सुन कर हमारी तुम्हारे विषय में बनाई धारणा निर्मूल सिद्ध न हो जाय।

ओलिवर : पर हे स्वामी, आप तो मेरे हृदय की बात अच्छी तरह जानते हैं। मैंने तो जीवन में कभी भी मेरे भाई से प्रेम नहीं किया।

ड्यूक फ्रै० : नहीं, तुम तो उससे भी अधिक ढीठ हो। कोई है, इसे

यहाँ से निकाल कर बाहर करो और कुछ कर्मचारियों को भेज कर इसकी जमीन-जायदाद और घर को तुरन्त अपने अधिकार में कर लो और इसे हमारे राज्य से बाहर जाने का रास्ता दिखा दो।

दृश्य २

[ऑरलेन्डो का एक पत्र लिये हुए प्रवेश]

ऑरलेन्डो : हे मेरी कविता ! मेरे हृदय में अपनी प्रेयसी के लिये कितना असीम प्रेम है इसे दूसरों को सही रूप में बताने के लिये तुम यहाँ टँग जाओ और हे तीन मुकुटों से सुशोभित रात्रि की रानी ! तुम ल्यूना की तरह रात्रि में सर्वत्र राज्य करती हो। अपने उस पीले आकाश से अपनी पवित्र दृष्टि घुमाकर मेरी ओर देखो तो या दूसरी स्थिति में 'डाइना' (चन्द्रमा) की तरह तुम जीवन के सभी कार्य्यों में मुझे राह दिखाती हो। ओ रोज़ालिन्ड ! अब ये वृक्ष ही मेरे लिये पुस्तकें होंगी और उन्हीं के वक्षस्थल पर मैं अपने प्रणय की भावनाओं को व्यक्त करूँगा जिससे जो कोई भी इस वन में होकर जायेगा वह चारों ओर तेरे नाम और गुणों को बिखरा हुआ देखेगा। चल ऑरलेन्डो, अब तनिक भी विलम्ब मत कर। प्रत्येक वृक्ष पर उस अकथनीय शील और सौन्दर्य्य की देवी के नाम और गुणों को अंकित कर दे।

[कोरिन तथा टचस्टोन का प्रवेश]

कोरिन : कहो मास्टर टचस्टोन, यह तो बताओ कि तुम्हें इस चरवाहे का जीवन कैसे पसन्द है ?

टचस्टोन : निस्संदेह, जहाँ तक चरवाहे का जीवन अपने आप तक सीमित है, मुझे अच्छा लगता पर चूंकि यह चरवाहे का जीवन

है, इसलिये अच्छा भी नहीं है। जहाँ तक इसमें एकान्त है, मुझे यह वहुत ही पसन्द आता है पर जब सोचता हूँ कि यह तो अपने आप में ही बँधा जीवन है और जीवन के अन्य क्षेत्रों से इसका अधिक सम्बन्ध नहीं है तो मेरी तबियत इससे फिर जाती है। इसके अतिरिक्त जहाँ तक खेतों से इसका सम्बन्ध है तव तो यह जीवन भला मालूम होता है पर राजदरबार से इसका कोई भी सम्बन्ध न होने के कारण यह जीवन मुझे कठिन-सा लगता है। जहाँ तक यह अवकाश और मितव्ययिता का-सा जीवन है तहाँ तक तो मेरी तबियत को अच्छा लगता है पर जब यह सोचता हूँ कि इसमें तो कुछ अधिक मिलता ही नहीं तब ज़रा मेरे पेट के स्वार्थ के विपरीत यह जीवन पड़ता है। लेकिन ऐ चरवाहे, क्या तू कोई दार्शनिक है ?

कोरिन : मैं तो कुछ अधिक नहीं जानता केवल इतना ही जानता हूँ कि जो व्यक्ति जितना अधिक अस्वस्थ रहता है वह उतना ही अधिक दु:खमय जीवन बिताता है। जिसके पास धन, साधन और संतोष नहीं होता तो समझ लो उसने अपने जीवन के तीन अच्छे मित्रों को खो दिया। जैसे कि वर्षा सभी वस्तुओं को भिगो देती है। अग्नि सबको जला देती है। अच्छी चरागाह से भेड़ें खूब खाकर मोटी हो जाती हैं। रात्रि के गहन अन्धकार में सूर्य्य का प्रकाश नहीं होता उसी तरह जिस व्यक्ति में कोई साधारण सूझ-बूझ और चतुराई नहीं होती है वह तो इसके लिये अपने जीवन में अच्छी शिक्षा तथा अच्छे पालन-पोषण के अभाव को ही दोषी ठहरा सकता है।

टचस्टोन : ऐसा व्यक्ति ही तो स्वभाव से दार्शनिक होता है। क्या राजदरबार में ऐसा कोई अभी तक हुआ चरवाहे ?

कोरिन : सच, कोई भी नहीं।

टचस्टोन : तब तो तुम्हें धिक्कार है।

कोरिन : नहीं-नहीं, उसकी मुझे अभी आशा है।

टचस्टोन : सच, तुम तो उस अंडे की तरह हो जो एक तरफ़ से कुछ पकता है और बाकी कच्चा रह जाता है। तुम्हें धिक्कार है।

कोरिन : किसलिये ? तुम्हारा मतलब है, इसलिये कि मैं राजदरबार में नहीं हूँ ?

टचस्टोन : पर यदि तुम राजदरबार में कभी भी नहीं रहे होते तो तुम शिष्टाचार का मुँह तक न देखते और यदि तुममें शिष्टाचार न होता तो तुम्हारा व्यवहार पूरी तरह धृष्टतापूर्ण होता। धृष्टता पाप है और पाप धिक्कारणीय वस्तु है ही। इस तरह तुम ऐसी विचित्र स्थिति में फँस गये हो चरवाहे ! जहाँ से निकलना बड़ा कठिन है।

कोरिन : बिलकुल भी नहीं टचस्टोन ! सुनो, जिनमें राजदरबार का शिष्टाचार होता है वे ग्रामवासियों के बीच बिलकुल हास्यास्पद प्रतीत होते हैं। इसी तरह ग्रामवासियों का व्यवहार राजदरबार में प्रतीत होता है। जैसे तुमने कहा कि तुम दरबार में झुककर अभिवादन नहीं करते हो बल्कि अपने हाथों को चूमते हुए अभिवादन करते हो तो यदि ये सभी दरबारी, मान लो, चरवाहे हों तो तुम्हारा यह व्यवहार उनके बीच बहुत ही भद्दा प्रतीत हो।

टचस्टोन : अच्छा, जरा संक्षेप में इसका उदाहरण तो दो।

कोरिन : लो, जानते हो, हम भेड़ों को लगातार पकड़े ही रहते हैं पर उनके शरीर पर बाल कितने चिकने और लुबलुबे होते हैं ?

टचस्टोन : तो क्या इस तरह तुम्हारे राजदरबारियों के हाथों में

पसीना नहीं आता है और पसीने का लुबलुबापन क्या माँस के लुबलुबापन की तरह नहीं होता ? कुछ नहीं, क्षुद्र उदाहरण है। मैं कहता हूँ कोई अच्छा-सा उदाहरण दो।

कोरिन : इसके अतिरिक्त हमारे हाथ सख्त होते हैं।

टचस्टोन : लेकिन बहुत शीघ्र ही तुम्हारे ओठ इसका अनुभव कर लेंगे। फिर वही क्षुद्र उदाहरण। कोई अधिक उचित लगने वाला उदाहरण दो।

कोरिन : उन ग्रामवासियों के हाथ तो हमारी भेड़ों के घावों की परिचर्य्या करते हुए तार में सने रहते हैं, क्या तुम उनसे यह कहोगे कि जैसे राजदरबारियों के हाथ 'सिवेट'[1] से सुगन्धित रहते हैं वैसे उन्हीं की तरह उन्हें भी अपने तार से सने हाथों को चूम लेना चाहिये ?

टचस्टोन : अरे तुम तो बहुत ही छिछले आदमी हो। तुम तो अच्छे माँस की तुलना में ऐसे सड़े-गले माँस हो, जिसे केवल कीड़े ही खा सकते हैं। बुद्धिमानों से कुछ सीख कर सारमय बातें करो। 'सिवेट' तो 'तार' से कहीं नीचे किस्म की वस्तु होती है। अपने उदाहरण में कुछ सुधार करो चरवाहे !

कोरिन : तो तुम्हारी राजदरबार की समझ-बूझ से मेरी पार नहीं पड़ सकती। मैं तो अब आराम करूँगा।

टचस्टोन : क्या तुम आराम करोगे क्षुद्र मूर्ख ? धिक्कार है तुम्हें ! ईश्वर तुम्हारी सहायता करे और तुममें खोद कर कुछ बुद्धि भर दे। तुम तो निरे मूर्ख हो।

---

१. सिवेट (civet)—जैसे हरिण की नाभि से कस्तूरी प्राप्त होती है, उसी तरह की सुगन्धित वस्तु 'सिवेट' किस्म की बिल्ली के शरीर से प्राप्त होती है, जिसे पुराने समय में लोग काफी प्रयोग में लाते थे।

कोरिन : महाशय, मैं तो एक सच्चा मजदूर हूँ। जो मैं खाता हूँ और पहनता हूँ उसके लिये स्वयं मेहनत करके कमाता हूँ। न तो मैं किसी से घृणा करता हूँ और न किसी के भाग्य से ईर्ष्या करता हूँ बल्कि दूसरों की अच्छाई से तो मुझे स्वयं प्रसन्नता होती है। यदि मुझे कोई हानि सहनी पड़ती है तो मैं अपने आप उसके लिये संतोष कर लेता हूँ। जब मैं अपनी भेड़ों को चरता हुआ और उनके मैमनों को उनका दूध पीता हुआ देखता हूँ तो सबसे अधिक गर्व से मेरा हृदय फूल उठता है। लो, मेरी नई स्वामिनी का भाई गैनीमीड़ यहाँ आ रहा है।

[रोज़ालिन्ड का एक पत्र पढ़ते हुए प्रवेश]

रोज़ालिन्ड :

—गीत—

सकल चराचर में उस जैसा
रत्न नहीं रे,
भार वहन कर उसके यश का
पवन वही रे,
उसकी छवि को अंकित कर दे
ऐसा कहाँ चितेरा,
उसके मुख को भूल जाये जो
ऐसा कहीं नहीं रे !

[मूल गीत का अर्थः पूर्व से पश्चिम हिंद तक रोज़ालिन्ड-सा कोई रत्न नहीं। उसका नाम पवन पर चढ़ कर सकल लोक में व्याप्त हो रहा है। समस्त चित्र भी उसकी छवि के सामने असुन्दर हैं। रोज़ालिन्ड के अतिरिक्त कोई और मुख स्मृति में नहीं रखा जा सकता।]

टचस्टोन : क्या हुआ, ऐसी कविताएँ तो मैं केवल भोजन और सोने के समय को छोड़कर आठ साल तक लगातार बनाता रहूँ।

इसकी पंक्तियाँ एक के वाद एक इस मामूली ढंग से जुड़ती हैं जैसे मक्खन वेचने वाली गुजरियाँ वाज़ार में एक के वाद एक पंक्ति-सी वनाकर आती हैं।

रोज़ा० : चुप मूर्ख, चला जा यहाँ से !

टचस्टोन : लो, न मानो तो मैं तुम्हें एक नमूना सुना देता हूँ :

—गीत—

यदि एक तरुण को साथिन चाहिये
तो वह रोज़ालिन्ड को ढूंढे,
वह विल्ली की तरह अपनी स्त्री जाति की
सहेलियाँ ही पसन्द करती है। वह तन्वी है,
फ़सल काटने वालों को पहले
गाड़ियों में वालें वाँध कर रखनी होंगी,
तभी वे रोज़ालिन्ड के साथ जा सकती हैं,
वह वाहर से कठोर है, पर भीतर से दयालु
जैसे होता है अखरोट ।
वह सुन्दर गुलाव है, जो उसे चाहता है
वह उसके काँटों के लिये भी तैयार रहे।

ये पंक्तियाँ तो ऐसी वेजोड़ और ऊवड़-खावड़ हैं जैसे किसी घोड़ेकी छलाँगें। तुम्हें इसमें इतना अधिक आनन्द कैसे आ रहा है ?

रोज़ा० : चुप रह ओ मूर्ख, मुझे तो ये पंक्तियाँ एक वृक्ष पर टँगी हुई मिली हैं।

टचस्टोन : निस्संदेह, तव तो वृक्ष वहुत वुरे फल देता है।

रोज़ा० : पर सच पूछो तो उस वुरे फल की तुलना में तुमसे ही करूँगी और तुम्हारे रूप में ही मैं उसकी तुलना उस फल से करूँगी जो सड़ने पर खाया जाता है। लेकिन हाँ, तव वह फल वन में सवसे पहले आने वाला फल होगा क्योंकि तुम्हारी वात तो यह है कि तुम

आधे पकने भी न पाओगे उससे पहले ही सड़ने लगोगे क्योंकि 'मैडलर' नाम के फल का, जिससे तुम्हारी तुलना की गई है, यही गुण होता है।

टचस्टोन : तुमने जो कहना था कह लिया लेकिन यह तो वह वन ही निर्णय करेगा कि तुम्हारे इन शब्दों में कितनी बुद्धिमत्ता या कितनी मूर्खता है।

[सीलिया का कुछ पढ़ते हुए प्रवेश]

रोज़ा : थोड़ा शान्त रहो, देखो मेरी बहिन कुछ पढ़ती हुई आ रही है। थोड़ा हट कर खड़े हो जाओ।

सीलिया : —गीत—

इस वन में निर्जनता है, तो क्या
ऐसा ही ये उदास लगे ?
नहीं । मैं पेड़ों को बोलने की शक्ति दूंगा,
ताकि वे सभ्य समाज में प्रयुक्त वचनों को बोल सकें,
कुछ बतायेंगे मनुष्य-जीवन-यात्रा के पथ की
नश्वरता को,
कि वह कितना अल्प और सीमित है।
कुछ बतायेंगे उस मित्रता को
जिसमें वचन नहीं रखे जाते,
किन्तु पत्तों के सुन्दरतम भागों पर मैं
सुंदरी रोज़ालिन्ड का नाम लिखूंगा।
सबको उसे पढ़ाऊंगा—
आत्मा की वास्तविकता
दिखाने को जो कि
परमात्मा ने छोटी से छोटी वस्तु में
प्रगट की है।

इसी लिये उसने प्रकृति को आज्ञा दी
कि एक ही स्त्री में सारा सौंदर्य्य भर दिया जाये।
तुरंत उसने आज्ञा का पालन किया
और ट्रॉय की हेलेन का सुन्दर मुख बनाया,
परन्तु उसकी अस्थिर और प्रतारक प्रकृति
उसमें नहीं रखी।
उसमें क्लियोपैट्रा का गौरव मिलाया,
ऐटलान्टा की चपलता और ल्यूक्रीशिया
का गांभीर्य्य और लज्जा।
इस प्रकार देवताओं की सभा ने रोज़ालिन्ड का
निर्माण किया।
समस्त प्रिय मूल्यों का वह आगार बनी
और परमात्मा की इच्छा हुई कि मैं उसका आमरण
दास बन कर रहूँ।

रोज़ा० : ओ मेरे अत्यधिक नम्र उपदेशक! ऐसा प्रेम का कौन-सा कठिन उपदेश तुमने लोगों को दिया है जिससे वे ऊब गये हैं और तुम अभी तक कुछ नहीं पुकारे! सब्र रखो, मेरे अच्छे लोगो।

सीलिया : अच्छा तो मेरे मित्रो, अब वापिस जाओ। चरवाहे! तुम थोड़ी दूर चले जाओ और इसके साथ तुम भी चले जाओ टचस्टोन!

टचस्टोन : आओ चरवाहे, चलो सम्मानपूर्वक पीछे लौट चलें। चाहे पूरे बोरिये-बिस्तर के साथ न चलें तो भी अपने साथ यह हस्तलिखित पत्र तो ले ही चलें।

[कोरिन तथा टचस्टोन का प्रस्थान]

सीलिया : क्या तुमने ये गीत सुने ?

रोज़ा० : हाँ अवश्य बहिन, मैंने ये सभी सुने और कुछ अधिक भी, क्योंकि इनमें साधारण गीतों से कुछ अधिक चरण थे।

सीलिया : यह कोई विशेष बात नहीं है। इन चरणों पर गीत स्थित भी हो सकते हैं।

रोज़ा० : नहीं ये चरण लँगड़े थे और यदि यह इन्हें न सँभालता तो ये स्वयं अपने आपको नहीं सँभाल पाते। इसलिये गीत में ये बेतुके-लँगड़े दीखते हैं।

सीलिया : लेकिन क्या तुमने यह सुनकर आश्चर्य्य नहीं किया कि तुम्हारा नाम किस तरह चारों ओर पेड़ों पर टँगा हुआ और खुदा हुआ है ?

रोज़ा० : क्यों नहीं, तुम्हारे आने से पूर्व मैं नौ दिनों में से सात दिनों तक यही आश्चर्य्य करती रही कि यह सब कुछ क्या है, क्योंकि देखो मैंने यह पत्र पाम वृक्ष के ऊपर टँगा हुआ पाया। सच 'पाइथॉगोरस' के समय से अब तक मेरे ऊपर किसी ने ऐसे गीत नहीं लिखे। हाँ, उस समय मुझे 'आइरिश चुहिया' कह कर अवश्य पुकारा जाता था। पर उसकी मुझे कुछ भी याद नहीं है।

सीलिया : तुम क्या सोचती हो बहिन, यह सब किसने किया है ?

रोज़ा० : क्या यह कोई पुरुष है ?

सीलिया : अवश्य, वही, याद करो जिसके गले में तुमने अपनी वह जञ्जीर पहनाई थी जिसे तुम स्वयं पहने हुई थीं। क्यों, तुम्हारे चेहरे का रंग यह सुन कर एक साथ कैसे बदल गया !

रोज़ा० : मैं विनय करती हूँ बहिन, बताओ वह कौन है ?

सीलिया : हे ईश्वर ! बिछुड़े मित्रों का पुर्नमिलन भी कैसा कठिन है, पर क्यों ? जब पर्वत तक भूकम्प के कारण अपना स्थान छोड़कर एक दूसरे से टकरा जाते हैं तो यह क्यों नहीं हो सकता ?

रोज़ा० नहीं-नहीं, मुझे बताओ तो वह कौन है ?

सीलिया : क्या यह सम्भव है कि तुम उसे नहीं जानतीं ?

रोज़ा० : मैं तुमसे अत्यन्त नम्रतापूर्वक निवेदन करती हूँ बहिन, मुझे बता दो कि वह कौन है ?

सीलिया : ओह आश्चर्य्यजनक, आश्चर्य्यजनक, अत्यधिक आश्चर्य्य-जनक ! फिर आश्चर्य्यजनक और यहाँ तक कि उसके भी परे !

रोज़ा० : यह मेरा पुरुष-वेश भी कैसा विचित्र है ! पर यह समझ लो कि चाहे मैंने यह वेश बना लिया है पर उसके नीचे छिपा मेरा स्त्रियो-चित स्वभाव कभी नहीं मिट सकता। यदि तुम एक पल भी बताने में देरी करोगी तो समझ लो विशाल दक्षिण-सागर की तरह इसी बीच न जाने कितने अनगिनती प्रश्न मैं तुमसे कर डालूंगी। मुझे शीघ्र बताओ कि वह कौन है, मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ, बोलो ! जिस तरह छोटे मुँह वाली शराब की बोतल से शराब कभी एक साथ अधिक निकल पड़ती है और कभी बिलकुल नहीं आती है इसी तरह अपने मुँह से कह कर मुझे बताओ कि वह कौन है ? मैं इसके लिये अत्यधिक आतुर हूँ। शीघ्र अपना मुँह खोलो और उस-से निकले शब्दों का मुझे पान करने दो। क्या वह कोई दिव्य मूर्त्ति है ? किस प्रकार का मनुष्य है वह ? क्या वह सिर पर टोप पहनता है और क्या उसके दाढ़ी भी है ?

सीलिया : नहीं, उसके केवल एक छोटी-सी दाढ़ी है।

रोज़ा० : खैर, यदि उस मनुष्य में कृतज्ञता का भाव होगा तो ईश्वर की कृपा से दाढ़ी भी बढ़ जायेगी पर मुझे इसकी कोई विशेष चिन्ता नहीं कि वह कब तक बड़ी होगी, मुझे तो यह बताओ कि वह कौन है। विलम्ब न करो बहिन।

सीलिया : वही नवयुवक ऑरलेन्डो जिसने एक ही क्षण में उस पहलवान पर और तुम्हारे हृदय पर विजय प्राप्त की थी।

रोज़ा० : क्या ? नहीं-नहीं, यह हँसी-मज़ाक छोड़ो और सच-सच

गम्भीर होकर बताओ बहिन।

सीलिया: विश्वास करो, सच, वही है।

रोज़ा०: ऑरलेन्डो ?

सीलिया: हाँ, ऑरलेन्डो !

रोज़ा०: हाय ! कैसी आपत्ति का समय है ! अब मेरे इस पुरुष-वेश का क्या होगा ? पर यह बताओ सीलिया, कि जब तुमने उसे देखा था उस समय वह क्या कर रहा था ? क्या कहा था उसने ? वह कैसा दिखता था ? कहाँ चला गया वह ? ऐसी क्या बात हुई कि वह यहाँ आया ? यह बताओ बहिन, कि क्या वह मेरे बारे में कुछ पूछ रहा था ? कहाँ रहता है वह ? तुमसे मिलकर किस तरह वह अलग हुआ ? बताओ तो कि अब वह तुम्हें कहाँ मिल सकेगा ? मेरी बहिन, इन सब प्रश्नों का एक शब्द में मुझे उत्तर दे दो।

सीलिया: इसके लिये तो मुझे 'गरगैंचुआ' नामक दैत्य का-सा विशाल मुख कहीं से माँग कर ला दो क्योंकि साधारण मनुष्य के मुख से तो इतना बड़ा शब्द निकल ही न सकेगा। इसके अतिरिक्त इन प्रश्नों के उत्तर में हाँ या न कहना भी तो इतना ही कठिन है जैसे इंजील (बाइबिल) के कथन पर कोई प्रश्न करना।

रोज़ा०: पर यह तो बताओ कि क्या उसे यह मालूम है कि मैं पुरुष-वेश में इसी वन में हूँ ? और क्या अब वह उतना ही स्वस्थ और सुन्दर दीखता है जैसा कि उस दिन था जब उसने चार्ल्स पर विजय प्राप्त की थी ?

सीलिया: सच, छोटे से छोटे कणों को गिनना कहीं अधिक आसान है पर किसी प्रेमी के बारे में किये गये प्रश्नों को गिनना उतना आसान नहीं है। लो, मैं तुम्हें यह बताती हूँ कि वह मुझे कैसे

मिला और इसी का मीठा स्वाद लेकर तुम अपनी भूख को मिटा लेना। मैंने उसे एक वृक्ष के नीचे टूट कर गिरे हुए फल की तरह पड़े हुए पाया।

रोज़ा० : ओह, तब तो अवश्य ही वह स्वर्ग का कोई वृक्ष है जिसमें से ऐसा फल टूट कर गिरा।

सीलिया : अच्छा श्रीमती जी, अब थोड़ी मेरी बात सुनो।

रोज़ा० : हाँ-हाँ, कहो।

सीलिया : वहाँ पर वह किसी घावों से जर्जरित सैनिक की भाँति पड़ा हुआ था।

रोज़ा० : ओह, यद्यपि उसे इस तरह पड़ा देखकर हृदय में करुणा उमड़ आती है पर ठीक ही है, उसकी वह दशा इस स्थान के उपयुक्त ही है।

सीलिया : थोड़ी अपनी जीभ को थाम कर बोलो। देखो, इससे वे सिर-पैर की अनर्गल बातें निकल रही हैं। उसकी एक शिकारी की-सी वेश-भूषा थी।

रोज़ा० : हाय ! तब तो वह मेरे हृदय का शिकार करने आया है।

सीलिया : मैं तो यह सारा गीत बिना कोई बोझ अनुभव किये गाना चाहती थी पर तुम बार-बार बीच में बोल कर मुझे रोक देती है।

रोज़ा० : हाँ, पर मेरी प्यारी, क्या तुम जानती नहीं कि मैं एक स्त्री हूँ ? जब भी मेरे मस्तिष्क में कोई बात आती है तभी मैं बोल पड़ती हूँ। इसलिये आगे कहो।

सीलिया : मेरी प्यारी बहिन, तुम मुझसे कुछ कहलवाना चाहती हो तो देखो क्या वही यहाँ नहीं आ रहा है ?

[ऑरलेन्डो तथा जेक्स का प्रवेश]

रोजा० : यह तो वही है। आओ थोड़ा छिपकर उसे देखें।

जेक्स : तुम्हारे साथ रहने के लिये मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ पर वैसे तो यदि मैं अकेला भी रहता तो भी उतना ही प्रसन्न रहता।

ऑरलेन्डो : और उसी तरह मैं भी, लेकिन फिर भी शिष्टाचार के नाते मैं तुम्हारे संग-साथ के लिये तुम्हें धन्यवाद देता हूँ।

जेक्स : ईश्वर तुम्हारी सहायता करे। जब कभी भी सम्भव होगा फिर मिलेंगे।

ऑरलेन्डो : मैं तो यह चाहता हूँ कि हम और भी अच्छे (अधिक) अपरिचित हो जायें।

जेक्स : मेरी तुमसे बस एक प्रार्थना है कि अब इन पेड़ों की छालों को अपने प्रणय-गीत लिखकर न विगाड़ो।

ऑरलेन्डो : मेरी तुमसे यह प्रार्थना है कि इस तरह अपनी उपेक्षा भरी हुई दृष्टि लेकर मेरे इन गीतों को पढ़ते हुए इनका सारा सौन्दर्य्य और माधुर्य्य नष्ट न करो।

जेक्स : तुम्हारी प्रेयसी का नाम रोजालिन्ड है न ?

ऑरलेन्डो : हाँ, वही।

जेक्स : मुझे उसका यह नाम पसन्द नहीं है।

ऑरलेन्डो : पर जब उसका नामकरण-संस्कार हुआ था उस समय उसके सामने यह कोई प्रश्न नहीं था कि तुम्हें उस नाम से प्रसन्न किया ही जाय।

जेक्स : कैसा डीलडौल है उसका ?

ऑरलेन्डो : ठीक उतनी ही ऊँची जैसा मेरा हृदय है।

जेक्स : उत्तर तो तुम बहुत सुन्दर देते हो। क्या उसके लिये तुमने स्वर्णकारों की सजी-धजी स्त्रियों को देखा है और क्या उन्हीं की

सुन्दर फूल-पत्तियों से सजी अंगूठियों से तुमने अपने इन उत्तरों को सीखा है ?

ऑरलेन्डो : नहीं यह बात नहीं है । मैं तो उस रंग-बिरंगे चित्रों से चित्रित कपड़े से जिससे तुमने अपने प्रश्नों को सीखा है, सीखकर ही अपने उत्तर देता हूँ ।

जेक्स : तुम्हारी बुद्धि तो बड़ी तीव्र है । मेरा विचार है कि शायद अटलान्टिक महासागर की एड़ियों से तुम्हारी यह बुद्धि बनी है । आओ, क्या तुम मेरे साथ बैठोगे ? और हम अपनी प्रियतमा की तुलना में सारे संसार को तथा अपने सारे दुःख को बुरा कहेंगे ।

ऑरलेन्डो : मैं अपने सिवाय किसी भी प्राणी के विरुद्ध बुरा नहीं कहूँगा क्योंकि मैं जानता हूँ कि मुझमें ही बहुत दोष हैं ।

जेक्स : सबसे बड़ा दोष तो यह है कि तुम प्रेम करते हो ।

ऑरलेन्डो : यह दोष है तो इसके बदले में मुझे तुम्हारा बड़े से बड़ा गुण नहीं चाहिये । मैं तुम्हारे साथ रहने से पूरी तरह ऊब गया हूँ ।

जेक्स : लेकिन सच पूछो तो जब मैंने तुम्हें पाया उस समय मैं किसी मूर्ख की खोज में था ।

ऑरलेन्डो : वह तो इस झरने में डूब गया है । थोड़ा इसके ऊपर झुक कर देखो तो तुम्हें उसकी शक्ल दीख जायेगी ।

जेक्स : उसमें तो मुझे अपनी शक्ल दीखेगी ।

ऑरलेन्डो : वही तो । उसे चाहे मूर्ख कह लो या कोई नाकारा आदमी ।

जेक्स : मैं तुम्हारे साथ अधिक देर तक नहीं ठहरूँगा । अच्छा प्रेममय श्रीमान् जी ! अब विदा ।

ऑरलेन्डो : इससे मुझे बड़ी प्रसन्नता है । अच्छा दुःखमय श्रीमान् जी अलविदा ।

[जेक्स का प्रस्थान]

रोज़ा० : (सीलिया से) मैं थोड़ी खिचकर इससे बातें करूँगी और अपने इस पुरुष-वेश के कारण मैं इसे देखो, अभी मूर्ख बनाती हूँ। ऐ वनवासी ! सुनो।

ऑरलेन्डो : जी कहिये।

रोज़ा० : क्या तुम कृपा करके बताओगे कि इस समय घड़ी में क्या बजा होगा ?

ऑरलेन्डो : इस वन में घड़ी कहाँ है, यह पूछो कि दिन का क्या समय हुआ है अब।

रोज़ा० : तब तो ऐसा मालूम होता है कि इस वन में कोई भी सच्चा प्रेमी नहीं है नहीं तो उसके प्रत्येक मिनट निश्वास भरने से और प्रत्येक घंटा अपनी प्रेयसी के लिये आहें भरकर कराहने से क्या समय की यह मन्द गति एक घड़ी की तरह ही मालूम नहीं होती रहती ?

ऑरलेन्डो : लेकिन समय की तीव्र गति क्यों नहीं ? क्या यह कहना उतना ही उचित नहीं होता ?

रोज़ा० : किसी तरह नहीं श्रीमान् ! समय विभिन्न मनुष्यों के साथ विभिन्न ही गति से चलता है। मैं तुम्हें बताऊँगा कि किसके साथ तो यह तीव्र गति से चलता है, किसके साथ मन्द गति से चलता है, किसके साथ इतनी तीव्र गति से चलता है जैसे घोड़े की लम्बी छलांगें और किसके साथ यह मानो चलता ही नहीं।

ऑरलेन्डो : तो मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ। बताइये कि किसके साथ यह मन्द गति से चलता है ?

रोज़ा० : एक नवयुवती के जीवन में उसके विवाह के निश्चित होने से विवाह होने के दिन तक यह अति मन्द गति से चलता है। यदि यह बीच की अवधि केवल सात रातों की ही हो तो भी समय की

इस मन्द गति के कारण यह सात वर्षों के समान मालूम होती है।

आॅरलेन्डो : किसके साथ समय तीव्र गति से चलता है ?

रोज़ा० : उस पादरी के साथ जो लेटिन भाषा नहीं जानता है और उस धनी मनुष्य के साथ जिसके चित्त को कोई व्याधियाँ नहीं होतीं क्योंकि पादरी तो इसलिये चैन से सोता है कि वह कुछ लिख-पढ़ नहीं सकता और धनी मनुष्य इसलिये सुख-चैन का जीवन विताता है क्योंकि उसके जीवन में कोई दु:ख और चिन्ता नहीं होती। इधर पादरी तो वेकार की मनुष्य का खून सुखाने वाली पढ़ाई-लिखाई की आफ़त से बच गया और उधर धनी मनुष्य किसी तरह धनाभाव-सम्बन्धी परेशानी से बच गया। इस तरह इनके साथ समय तीव्र गति से चलता है।

आॅरलेन्डो : किसके साथ समय घोड़े की लम्वी-लम्वी छलांगों की तरह अति तीव्र गति से चलता है ?

रोज़ा० : कारागार की ओर जाते हुए चोर के साथ क्योंकि चाहे वह भारी पैरों से धीरे-धीरे चलता हुआ उधर जाता है पर चित्त में तो वह अत्यंत शीघ्र ही वहाँ पहुँच जाता है।

आॅरलेन्डो : किसके साथ इसकी गति मानो होती ही नहीं ?

रोज़ा० : अवकाश के समय में वकीलों के साथ क्योंकि उस अवकाश में वे ऐसी गहरी नींद सोते हैं कि उन्हें पता ही नहीं रहता कि समय की कोई गति है भी या नहीं।

आॅरलेन्डो : सुन्दर नवयुवक ! कहाँ रहते हो तुम ?

रोज़ा० : जैसे 'पेटीकोट' की किनार होती है उसी तरह इस वन के किनारे पर मेरी इस भेड़ चराने वाली वहिन के साथ रहता हूँ।

आॅरलेन्डो : क्या तुम यहीं के रहने वाले हो ?

रोज़ा० : (सीलिया से) मैं थोड़ी खिचकर इससे बातें करूँगी और अपने इस पुरुष-वेश के कारण मैं इसे देखो, अभी मूर्ख बनाती हूँ। ऐ वनवासी ! सुनो।

ऑरलेन्डो : जी कहिये।

रोज़ा० : क्या तुम कृपा करके बताओगे कि इस समय घड़ी में क्या बजा होगा ?

ऑरलेन्डो : इस वन में घड़ी कहाँ है, यह पूछो कि दिन का क्या समय हुआ है अब।

रोज़ा० : तब तो ऐसा मालूम होता है कि इस वन में कोई भी सच्चा प्रेमी नहीं है नहीं तो उसके प्रत्येक मिनट निश्वास भरने से और प्रत्येक घंटा अपनी प्रेयसी के लिये आहें भरकर कराहने से क्या समय की यह मन्द गति एक घड़ी की तरह ही मालूम नहीं होती रहती ?

ऑरलेन्डो : लेकिन समय की तीव्र गति क्यों नहीं ? क्या यह कहना उतना ही उचित नहीं होता ?

रोज़ा० : किसी तरह नहीं श्रीमान् ! समय विभिन्न मनुष्यों के साथ विभिन्न ही गति से चलता है। मैं तुम्हें बताऊँगा कि किसके साथ तो यह तीव्र गति से चलता है, किसके साथ मन्द गति से चलता है, किसके साथ इतनी तीव्र गति से चलता है जैसे घोड़े की लम्बी छलाँगें और किसके साथ यह मानो चलता ही नहीं।

ऑरलेन्डो : तो मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ। बताइये कि किसके साथ यह मन्द गति से चलता है ?

रोज़ा० : एक नवयुवती के जीवन में उसके विवाह के निश्चित होने से विवाह होने के दिन तक यह अति मन्द गति से चलता है। यदि यह बीच की अवधि केवल सात रातों की ही हो तो भी समय की

इस मन्द गति के कारण यह सात वर्षों के समान मालूम होती है।

ऑरलेन्डो : किसके साथ समय तीव्र गति से चलता है ?

रोज़ा० : उस पादरी के साथ जो लेटिन भाषा नहीं जानता है और उस धनी मनुष्य के साथ जिसके चित्त को कोई व्याधियाँ नहीं होतीं क्योंकि पादरी तो इसलिये चैन से सोता है कि वह कुछ लिख-पढ़ नहीं सकता और धनी मनुष्य इसलिये सुख-चैन का जीवन बिताता है क्योंकि उसके जीवन में कोई दुःख और चिन्ता नहीं होती। इधर पादरी तो बेकार की मनुष्य का खून सुखाने वाली पढ़ाई-लिखाई की आफ़त से बच गया और उधर धनी मनुष्य किसी तरह धनाभाव-सम्बन्धी परेशानी से बच गया। इस तरह इनके साथ समय तीव्र गति से चलता है।

ऑरलेन्डो : किसके साथ समय घोड़े की लम्बी-लम्बी छलांगों की तरह अति तीव्र गति से चलता है ?

रोज़ा० : कारागार की ओर जाते हुए चोर के साथ क्योंकि चाहे वह भारी पैरों से धीरे-धीरे चलता हुआ उधर जाता है पर चित्त में तो वह अत्यंत शीघ्र ही वहाँ पहुँच जाता है।

ऑरलेन्डो : किसके साथ इसकी गति मानो होती ही नहीं ?

रोज़ा० : अवकाश के समय में वकीलों के साथ क्योंकि उस अवकाश में वे ऐसी गहरी नींद सोते हैं कि उन्हें पता ही नहीं रहता कि समय की कोई गति है भी या नहीं।

ऑरलेन्डो : सुन्दर नवयुवक ! कहाँ रहते हो तुम ?

रोज़ा० : जैसे 'पेटीकोट' की किनार होती है उसी तरह इस वन के किनारे पर मेरी इस भेड़ चराने वाली बहिन के साथ रहता हूँ।

ऑरलेन्डो : क्या तुम यहीं के रहने वाले हो ?

रोज़ा० : हाँ, ठीक उसी तरह जैसे कोई खरगोश जहाँ पलता है वहीं रहता है।

ऑरलेन्डो : ऐसे निर्जन वन को देखते हुए तो तुम्हारी वाणी अत्यधिक मधुर मालूम होती है।

रोज़ा० : कई एक से मेरे बारे में यही कही जाती है पर निस्संदेह यह मुझे मेरे एक बूढ़े धार्मिक वृत्ति वाले चाचा ने ही ऐसा बोलना सिखाया था। वे अपनी जवानी में सुसंस्कृत समाज में पले थे और प्रेम-विवाह करना अच्छी तरह जानते थे क्योंकि वहाँ उन्होंने प्रेम किया था। मैंने प्रेम के विरुद्ध उनके बहुत-से भाषण सुने हैं और यह तो ईश्वर ने अच्छा किया कि मैं स्त्री नहीं हूँ नहीं तो जो स्त्री-जाति पर बुरे-बुरे लांछन उन्होंने लगाये हैं उन्हें सुन कर मेरा हृदय अत्यंत दुःखी होता।

ऑरलेन्डो : स्त्री-जाति के प्रति उन्होंने कौन-से विशेष दोष बताये, क्या तुम्हें कुछ याद हैं ?

रोज़ा० : ऐसे विशेष कोई नहीं थे। वे सब दोष तो 'अर्द्धपैन्स' की तरह एक दूसरे के समान ही थे। प्रत्येक भयभीत कर देने वाला था और फिर एक के बाद एक इसी तरह थे।

ऑरलेन्डो : कृपा करके कुछ तो उनमें से सुनाइये।

रोज़ा० : नहीं, मेरी औषधि तो केवल उन्हीं के लिये है जो वास्तव में रोगी हैं। कोई एक मनुष्य है, जो इस वन में भटकता फिरता है। वह 'रोज़ालिन्ड' नाम खोदकर नये-नये पौधों की छालों को बिगाड़ता फिरता है। कहीं झाडियों पर प्रशंसा-भरे गीत लिखकर लगाता है तो कहीं दूसरी झाड़ियों पर दुःख-भरे गीत लिखकर टाँगता फिरता है। इस तरह इस सबसे रोज़ालिन्ड के नाम की बदनामी कर रहा है। यदि मैं उस दीवाने प्रेमी से मिल पाता तो

अवश्य कोई अच्छी सलाह उसे देता क्योंकि मालूम होता है कि प्रेम-रोग ने उसे ग्रस रखा है।

ऑरलेन्डो : मैं ही वह प्रेम का रोगी हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ। मुझे अपनी औषधि बताइये।

रोज़ा० : लेकिन मेरे चाचा के-से चिन्ह तो तुम पर एक भी नहीं है। उन्होंने मुझे सिखाया था कि किस तरह प्रेम करने वाले को पहचानना चाहिये। इस तरह मुझे पूरा विश्वास है कि तुम उस प्रेम के पिंजड़े के बन्दी नहीं हो जिसमें से कोई भी आसानी से निकल नहीं सकता है।

ऑरलेन्डो : क्या चिन्ह थे उसके ?

रोज़ा० : बैठा हुआ गाल जो तुम्हारा नहीं है। नीली और धँसी हुई आँखें जो तुम्हारे नहीं हैं। एक चिन्ता भरी हुई चित्तवृत्ति तुम में नहीं है। तितरी-बितरी दाढ़ी जैसी तुम्हारी नहीं है। लेकिन ख़ैर, उसके लिये मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ क्योंकि केवल एक दाढ़ी होना तो कोई विशेष बात नहीं है। इसके अतिरिक्त तुम्हारे मोज़ों में फीते नहीं कसे रहने चाहियें। तुम्हारे टोप में भी कोई फीता नहीं बँधा होना चाहिये। और न तुम्हारी बाहों में बटन होने चाहियें। तुम्हारे जूते भी ठीक तरह बँधे नहीं होने चाहियें और इस तरह तुम्हारे साथ कोई भी वस्तु व्यवस्थित नहीं होनी चाहिये। लेकिन तुम इस तरह के मनुष्य नहीं हो। तुम तो अपनी वेश-भूषा तथा अन्य सभी वस्तुओं के बारे में इस तरह चौकन्ना मालूम होते हो कि मुझे तो लगता है कि तुम किसी दूसरे को प्रेम करने की अपेक्षा अपने आपसे ही अधिक प्रेम करते हो।

ऑरलेन्डो : ओ सुन्दर नवयुवक ! काश, मैं तुम्हें विश्वास करा सकता कि मैं प्रेम करता हूँ।

रोज़ा० : मैं विश्वास करता हूँ और अब तुम जिससे प्रेम करते हो उसे जाकर विश्वास दिलाओ। उसके लिये भी मैं यह निश्चय से कहता हूँ कि वह और भी शीघ्र विश्वास कर लेगी पर इतना शीघ्र मुंह से नहीं कहेगी। स्त्रियों में प्रायः यह एक बात पाई जाती है कि इस तरह वे अपनी अन्तरात्मा की बात को झुंठा जाती हैं। लेकिन कृपा करके मुझे यह बताओ कि क्या तुम्हीं वह हो जो वृक्षों पर वे गीत टाँगते फिरते हो जिनमें रोज़ालिन्ड के गुणों की प्रशंसा की गई है ?

ऑरलेन्डो : मैं रोज़ालिन्ड के गोरे हाथ की सौगन्ध खाकर कहता हूँ, नवयुवक ! मैं वही हूँ। वही एक अभाग्यशाली मनुष्य।

रोज़ा० : लेकिन जितना तुम्हारे गीतों से मालूम होता है क्या उतना प्रेम तुम्हें तुम्हारी प्रियतमा से नहीं है ?

ऑरलेन्डो : ओह, न कोई गीत और न ही बुद्धि यह बता सकती है कि मैं उससे कितना प्रेम करता हूँ।

रोज़ा० : प्रेम तो निरा पागलपन है और मैं तो यह कहूँगा जैसे पागलों के लिये अंधेरी कोठरी और एक कोड़ा चाहिये उसी तरह प्रेम करने वालों को भी चाहियें। लेकिन क्यों उन्हें इस तरह का दण्ड देकर ठीक नहीं किया जाता है उसका कारण यह है कि यह पागलपन इतना आम और साधारण है कि कोड़े मारने वाले भी तो प्रेम करते हैं। लेकिन फिर भी मैं कहूँगा कि सलाह देकर प्रेमियों को इस पागलपन से बचाना चाहिये।

ऑरलेन्डो : क्या तुमने कभी किसी को इस तरह बचाया ?

रोज़ा० : हाँ, एक को और इसी तरह से। उसे मुझे अपनी कल्पित प्रेयसी मानना था। इस पर मैंने उसे प्रत्येक दिन अपने से प्रेमालाप करने के लिये आने दिया और उस समय मैं चन्द्रमा की तरह प्रतिक्षण

वदलने वाली नवयुवती की तरह व्यवहार करता। कभी दुखी होता, कभी विलकुल स्त्री का-सा व्यवहार करता, फिर वदल जाता। कभी मिलन के लिये आतुर हो जाता फिर कभी अपने अभिमान को जगा लेता। कभी विचित्र हास्यास्पद दीखता तो कभी बिलकुल क्षुद्र,अस्थायी मालूम होता। कभी खूब मुस्कराता। प्रत्येक प्रवल भावना का थोड़ा-थोड़ा अंश मुझमें था लेकिन कोई भी प्रवल भावना पूरी तरह नहीं थी। प्रायः अधिकतर स्त्री-पुरुष इसी रंग में रँगे होते हैं कि अभी तो उससे प्रेम करेंगे और दूसरे ही क्षण उससे घृणा करने लगेंगे। फिर उसे मना कर प्रसन्न करेंगे पर तत्पश्चात ही उसे छोड़ देंगे। अभी उसके लिये आँसू वहायेंगे और अभी उसकी तरफ़ थूकने लगेंगे। इस तरह मैंने अपने उस कल्पित प्रेमी को इस प्रेम के पागलपन से हटा कर दूसरी तरह के अच्छे पागलपन में ला दिया। वह पागलपन है, इस कोलाहल-भरे संसार को छोड़ना और अकेले किसी मठ में जाकर रहना। इस तरह मैंने उसकी चिकित्सा की और ऐसे ही मैं तुम्हारी चिकित्सा करके तुम्हारे हृदय को ऐसा स्वस्थ बना दूंगा, जैसे एक स्वस्थ भेड़ का हृदय, जिसमें प्रेम का एक धव्वा भी शेष नहीं रह जायेगा।

ऑरलेन्डो : ओ नवयुवक, मेरी चिकित्सा इस तरह न हो सकेगी।

रोज़ा० : मैं अवश्य करूँगा यदि तुम मुझे रोज़ालिन्ड कह कर पुकारोगे और प्रत्येक दिन मेरी कुटिया पर आ कर मुझसे प्रेम करने लगोगे।

ऑरलेन्डो : मैं अपनी प्रेयसी की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मैं ऐसा करूँगा। मुझे वताओ कि तुम्हारी कुटिया कहाँ है ?

रोज़ा० : आओ मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें वताता हूँ और वैसे क्या

तुम मुझे यह बताओगे कि इस वन में तुम कहाँ रहते हो ? आओ, क्या अब मेरे साथ चलोगे ?

ऑरलेन्डो : मेरे सम्पूर्ण हृदय के साथ नवयुवक !

रोज़ा० : तो अब मुझे रोज़ालिन्ड कह कर पुकारना । आओ बहिन, क्या तुम चलोगी ?

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[वन-प्रान्त]

[टचस्टोन और औड्री का प्रवेश । जेक्स पीछे]

टचस्टोन : शीघ्र आओ, अच्छी औड्री । तुम्हारी बकरियों को पकड़ कर ले आऊँगा औड्री । और यह बताओ औड्री, कि अभी तक मैं वही मनुष्य क्यों हूँ ? क्या मेरी सीधी-सादी मुखमुद्रा से तुम्हें सन्तोष होता है ?

औड्री : तुम्हारी मुखमुद्रा ! ईश्वर बचाये ! कैसी मुखमुद्रा ?

टचस्टोन : मैं तुम्हारे और तुम्हारी बकरियों के साथ इसी तरह हूँ जैसे कि अत्यन्त महान ईमानदार कवि 'ओविड' 'गोथ' लोगों के साथ थे ।

जेक्स : [बगल से] ओह, ज्ञान कैसे अनुचित स्थान पर आकर पड़ा है । इन्द्र किसी छप्पर वाले मकान में आकर रहें उससे भी अधिक अनुचित स्थान पर ।

टचस्टोन : जब किसी मनुष्य की कविताओं को कोई न समझे और किसी की अच्छी सूझ-बूझ को कोई न समझे और न उस पर काफ़ी आगे बढ़े हुए बच्चे तक कोई दाद दें तो उससे वह मनुष्य एक छोटे-से होटल में ऊँची कीमत का बिल देखने से भी अधिक

मानो मर-सा जाता है। सच, काश ! ईश्वर तुम्हें कवियित्री वना देता।

औड्री : मैं नहीं जानती कि यह कवियित्री होना क्या वला है। क्या वचन और कार्य्य में यह ईमानदारी का काम है ? क्या यह कोई सच्ची वस्तु है ?

टचस्टोन : विलकुल नहीं क्योंकि सच्ची से सच्ची कविता सवसे अधिक झूठ और बनावट से भरी होती है और कविता के विषय होते हैं प्रेमी। वे कविता में जो कुछ भी सौगन्ध खाते हैं वह ठीक उसी तरह वनावट और झूठ से भरा होता है जैसे उनके काम।

औड्री : फिर भी क्या तुम यही चाहते हो कि ईश्वर ने मुझे कवियित्री वनाया होता ?

टचस्टोन : निस्संदेह मैं यही चाहता हूँ क्योंकि तुम सौगन्ध खाकर अपनी ईमानदारी का दावा करती हो। अब यदि तुम कवियित्री होतीं तो मुझे यह कहने की तो आशा रहती कि तुम्हारे इस दावे में झूठ और वनावट है।

औड्री : क्या तुम मुझे ईमानदार देखना नहीं चाहते ?

टचस्टोन : वास्तव में नहीं, जब तक तुम कुछ कठोर मुद्रा वाली नहीं होतीं क्योंकि ईमानदारी सुन्दरता के साथ मिलकर और भी ऐसी अच्छी होती है जैसे शकर के साथ शहद।

जेक्स : (बगल से) निरा मूर्ख।

औड्री : पर मैं तो सुन्दर नहीं हूँ इसी लिये मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि वह मुझे ईमानदार वना दे।

टचस्टोन : सच, और एक गन्दी तथा अल्हड़ स्त्री पर तो ईमानदारी थोपना इसी तरह है जैसे किसी गन्दी तश्तरी में अच्छा मांस रखा हुआ हो।

औड्री : मैं कोई अल्हड़ स्त्री नहीं हूँ। हाँ, गन्दी अवश्य हूँ। इसके लिये मैं ईश्वर को धन्यवाद देती हूँ।

टचस्टोन : तेरी इस गन्दगी के लिये ईश्वर प्रशंसा और धन्यवाद का पात्र है। कोई वात नहीं, अल्हड़पन इसके वाद आ जायेगा। लेकिन यह सव कुछ भी हो, मैं तुमसे अवश्य विवाह करूँगा और इस सम्वन्ध में मैं अगले गाँव के 'विकार'[1] सर ऑलीवर मारटैक्स्ट के पास हो आया हूँ। उसने मुझसे वन में इसी स्थान पर मिलने का वायदा किया है और कहा है कि वह हम दोनों का विवाह करा देगा।

जेक्स : (वगल से) तो मैं अवश्य प्रसन्न होकर इस विवाहोत्सव को देखूंगा।

औड्री : ठीक है, ईश्वर हमें प्रसन्नता प्रदान करे।

टचस्टोन : ऐसा ही हो। यदि कोई मनुष्य भयभीत हृदय का हो तो अवश्य ऐसे कार्य्य में हिचकिचा कर पीछे हट जाय क्योंकि यहाँ तो कोई मन्दिर भी नहीं है, केवल वन है और न सींग वाले वन-पशुओं को छोड़कर कोई भी समुदाय है। लेकिन इससे क्या? साहस! सींग जैसे बुरे लगते हैं वैसे लाभदायक भी तो हैं। यह कहा जाता है कि कई एक मनुष्य तो ऐसे होते हैं जो अपनी धन-सम्पत्ति की गणना ही नहीं कर सकते हैं। ठीक है। कई एक मनुष्य ऐसे भी होते हैं जिनके अच्छे सींगों की गणना वे स्वयं नहीं कर पाते हैं। लेकिन ये सींग तो उन्हें अपनी स्त्री के साथ दहेज़ के रूप में मिले हैं, कोई उनके स्वयं के पैदा

---

१. Vicar (विकार)—पादरी जिसको गांव की फ़सल का $\frac{1}{10}$ हिस्सा धर्म-कर्म के लिये दिया जाता है और जो एक हैसियतदार जमीदार-सा ही होता है।

किये थोड़े ही हैं। सींग ? ऐसा ही सही। केवल निर्धन मनुष्य ? नहीं, नहीं, सबसे अधिक सीधे हरिण के भी उतने ही बड़े होते हैं जितने किसी बदमाश के। तो क्या इस तरह कोई एक मनुष्य यश का अधिकारी है ? नहीं, जिस तरह चारों ओर प्राकार से घिरा नगर किसी गाँव से अच्छा होता है उसी तरह विवाहित मनुष्य का मस्तक एक कँवारे की खाली भौंहों से कहीं अधिक सम्माननीय वस्तु होती है। जिस तरह अपनी रक्षा करना मूर्ख बने रह कर खड़े रहने से अच्छा है उसी तरह धन-सम्पन्नता का द्योतक सींग अभाव के जीवन से कहीं अधिक अच्छा है। लो सर ऑलीवर यहाँ आ रहे हैं।

[सर ऑलीवर मारटेक्स्ट का प्रवेश]

सर ऑलीवर मारटेक्स्ट, आप अच्छे मिले। अब बताइये कि आप हमारा विवाह इसी वृक्ष के नीचे करा देंगे या कि तुम्हारे गिरजाघर तक हम चलें ?

सर ऑलीवर मा० : क्या यहाँ स्त्री को समर्पित करने के लिये कोई भी नहीं है ?

टचस्टोन : किसी के समर्पित किये जाने पर मैं उसे नहीं लूँगा।

सर ऑलीवर मा० : पर समर्पित तो वह की ही जानी चाहिये नहीं तो विवाह वैध घोषित नहीं किया जा सकता।

जेक्स : (आगे बढ़कर) आगे आओ, आओ, मैं उसे समर्पित करूँगा।

टचस्टोन : बहुत अच्छे, वाह मेरे अच्छे मास्टर, क्या कहोगे तुम इसे ? पर हाँ आपकी तबियत कैसी है श्रीमान् ? तुम अच्छे मिले। हम पहले अन्तिम बार मिले थे उसके लिये ईश्वर तुम्हें सुखी रखे। तुमसे मिलकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। यह विवाह

तो बच्चों के खिलौनों का-सा खेल है। तुम अपने सिर पर अपना टोप पहन लो।

जेक्स : क्या तुम्हारा विवाह होगा बहुरूपिये ?

टचस्टोन : श्रीमान्, जैसे बैल की गरदन पर जुआ रखने के लिये एक कमान होती है, घोड़े के मुँह में लगाम होती है और बाज के गले में घंटियाँ होती हैं इसी तरह मनुष्य अपनी इच्छाएँ रखता है और जैसे कबूतर की कुटकुट एक जोड़े में होती है उसी तरह स्त्री-पुरुष का जोड़ा विवाह-सूत्र में बँधता है।

जेक्स : अरे, क्या आप जैसे उच्चकुलीन एक भिखारी की तरह इस झाड़ी के नीचे विवाह करेंगे ? चलिये गिरजाघर चलें और वहाँ कोई अच्छा पादरी लीजिये जो कि यह समझता हो कि विवाह का क्या महत्त्व है। नहीं यह आदमी तो आपका इस तरह गठ-बन्धन करायेगा जैसे किसी लकड़ी की तख्ती को कमरे के फ़र्श से जोड़ दे। कुछ दिन बाद तुममें से एक मुड़ी हुई तख्ती की तरह हो जाओगे और तब गीली लकड़ी की तरह मुड़कर तुम्हारे सब जोड़ खुल जायेंगे और तुम एक दूसरे से अलग हो जाओगे।

टचस्टोन : (बगल से) मैं नहीं सोचता कि कोई दूसरा पादरी इससे अच्छी तरह विवाह करायेगा क्योंकि ठीक है कि वह मेरा अच्छी तरह विवाह सम्पन्न कराने के अयोग्य है पर इस तरह उचित रीति से विवाह सम्पन्न न होने के कारण तो मुझे बाद में अपनी स्त्री को छोड़ने का अच्छा बहाना मिल जायेगा।

जेक्स : आओ, मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें अच्छी सलाह दूंगा।

टचस्टोन :

आओ, प्यारी औड्री !

अच्छा, मेरे अच्छे मास्टर ऑलीवर, अलविदा।

ओ प्यारे ऑलीवर !

ओ वीर ऑलीवर !

मुझे पीछे न छोड़ जाओ !

लेकिन,—

दूर चले जाओ

चले जाओ, मैं कहता हूँ

मैं तुमसे विवाह नहीं करवाऊँगा।

[जेक्स, टचस्टोन तथा औड्री का प्रस्थान]

सर ऑलीवर मा० : कोई बात नहीं। क्या ऐसे मूर्ख और धृष्ट मनुष्य के इस तरह बकने से मैं अपना कार्य्य छोड़ दूंगा ?

दृश्य ४

[वन-प्रान्त]

[रोज़ालिन्ड और सीलिया का प्रवेश]

रोज़ा० : मुझसे कभी बात मत करना। मैं रो दूंगी।

सीलिया : अवश्य, मैं और इसके लिये प्रार्थना करती हूँ पर यह भी सोचा है कि ये आँसू तुम्हारे इस पुरुष-वेश पर कहाँ तक अच्छे लगेंगे ?

रोज़ा० : लेकिन, क्या मेरे रोने के पर्याप्त कारण नहीं हैं ?

सीलिया : हाँ-हाँ, क्यों नहीं ? जितने चाहो उतने ही, इसलिये रोओ।

रोज़ा० : उसके बाल तक इस रंग के हैं कि अपना भेद नहीं बताते।

सीलिया : शायद 'जूडास' के लाल बालों से भी अधिक गहरे। अच्छी

वात है, उसके चुम्बन भी तो जूडास के बच्चों की तरह हैं।

रोज़ा० : नहीं, मेरा विश्वास है कि उसके वाल अच्छे रंग के हैं।

सीलिया : क्या ही अच्छा रंग। तुम्हारी कल्पना में तो सिर्फ़ एक सुपारी का भूरा रंग ही है।

रोज़ा० : और उसका चुम्बन ऐसा ही पवित्र है जैसे यसुमसीह से अन्तर्मिलन के लिये छुई हुई पवित्र रोटी[1]।

सीलिया : उसके ओठ 'डाइना' के-से पवित्र ओठ हैं, 'ऑर्डर ऑफ सेन्ट विन्टर' की देवदासी (nun) भी इतनी पवित्रता के साथ चुम्बन नहीं करती। उसके ओठों में तो वर्फ़ की तरह उज्ज्वल पवित्रता के सिवाय और कुछ है ही नहीं।

रोज़ा० : लेकिन क्यों तो उसने सौगन्ध खाकर कहा था कि वह प्रातः-काल आयेगा और फिर क्यों वह नहीं आया ?

सीलिया : निस्संदेह, सत्य का तो लेशमात्र भी उसमें नहीं है।

रोज़ा० : क्या तुम ऐसा सोचती हो ?

सीलिया : अवश्य, मैं यह नहीं कहती कि वह कोई जेबकट है या घोड़ा-चोर है पर हाँ, जहाँ तक प्रेम में स्थिरता का प्रश्न है वहाँ तो मैं यही कहूँगी कि वह ऐसा खोखा है जैसे ढका हुआ कटोरा या घुनी हुई सुपारी।

रोज़ा० : क्या प्रेम में सच्चा नहीं है ?

सीलिया : हाँ, बनावट में तो अवश्य लेकिन हृदय से प्रेम में नहीं।

रोज़ा० : लेकिन तुमने तो सुना ही है कि जो कुछ भी वह था वह सव उसने सौगन्ध खाकर कह दिया है।

सीलिया : वह 'था' 'है' नहीं है अव। इसके अतिरिक्त एक प्रेमी की

---

१. Touch of holy bread—ईसाइयों की एक तरह की धार्मिक रीति।

सौगन्ध तो एक शराब बेचने वाले की सौगन्ध जैसी होती है। दोनों झूँठी बात पर सौगन्ध खाने में पक्के होते हैं। यह इस वन में तुम्हारे पिता ड्यूक की सेवा में ही रहता है।

रोज़ा० : मैं कल ड्यूक से मिली थी और मैंने कितने ही प्रश्न उससे किये। उसने मुझसे मेरे माता-पिता और कुल के बारे में पूछा। मैंने उससे कहा कि मेरा कुल उतना ही श्रेष्ठ है जितना उसका। इस पर वह हँसने लगा और मैं आ गई। लेकिन यह क्या हम कुल की और पिताओं की बात लेकर बैठ गईं जब ऑरलेन्डो जैसा व्यक्ति बातों के लिये है।

सीलिया : ओह, सच वह एक वीर पुरुष है। वह वीरता भरे हुए गीत लिखता है, वीरता भरे हुए शब्द बोलता है, वीरता भरी हुई सौगन्धें खाता है और उतनी ही वीरता से उन्हें अपनी प्रेयसी के हृदय में होकर इसी तरह तोड़ देता है जैसे कोई नवसिखुआ भाला-बरदार एक तरफ़ से ही अपने घोड़े को उकसाने के कारण अनिश्चित स्थान पर लगा कर अपने भाले को तोड़ लेता है जैसे सीधा-सादा हंस अपनी चोंच तोड़ लेता है। लेकिन, छोड़ो यह युवावस्था ऐसी है कि इसमें कोई मूर्खतापूर्ण काम करो तो भी सब प्रशंसा करते हैं। अरे, यह कौन आ रहा है यहाँ ?

[कोरिन का प्रवेश]

कोरिन : मेरी स्वामिनी और मेरे स्वामी ! आप उस चरवाहे के बारे में जो प्रेम को बुरा कहता है प्रायः पूछते थे न ? वही मेरी बगल में वहाँ घास पर बैठा था। और उस अभिमान से भरी हुई, घृणित भेड़ चराने वाली स्त्री की प्रशंसा कर रहा था। वह उसकी पत्नी थी।

सीलिया : अच्छा, तो कुछ उसके बारे में बताओ।

कोरिन : यदि आप सच्चे प्रेम की पीली मुखमुद्रा और क्रोध और अभिमान से भरी घृणा की लाल चमक के बीच एक अच्छा-सा खेल खेलना चाहती हैं तो आप थोड़ा हट जाइये। अगर आपकी यह देखने की इच्छा होगी तो मैं आपको बुला लूंगा।

रोज़ा० : तो चलो, आओ, यहाँ से हट जायें। जो स्वयं प्रेम में संलग्न होते हैं उन्हें प्रेमियों का दर्शनमात्र भी अत्यन्त संतोपप्रद होता है। चलो, हमें इस खेल को दिखाओ और यदि तुम कहोगे तो मैं भी एक पात्र की तरह इस खेल में भाग लूंगा।

[प्रस्थान]

दृश्य ५

[वन का दूसरा भाग]

[सिल्वियस और फीबी का प्रवेश]

सिल्वियस : मेरी फीबी, मुझसे घृणा मत करो, नहीं फीबी, नहीं। तुम चाहे यह कहो कि तुम मुझसे प्रेम नहीं करती हो लेकिन घृणा के भाव से यह न कहो। वह जल्लाद जिसका हृदय नित्यप्रति मौत देखकर अत्यन्त कठोर हो जाता वह भी विनम्र व्यक्ति की गरदन पर कुल्हाड़ा नहीं चलाता है बल्कि उसके लिये क्षमा की प्रार्थना करता है, तो क्या तुम उससे भी अधिक कठोर हो जो रात-दिन खून के ही बीच मरता-जीता है।

[रोज़ालिन्ड और सीलिया का प्रवेश। कोरिन पीछे]

फीबी : मैं तुम्हारे लिये जल्लाद नहीं बनूंगी। मैं कहती हूँ कि तुम मुझसे दूर चले जाओ क्योंकि मैं तुम्हारे कोई चोट नहीं पहुँचाऊँगी। तुम कहते हो कि मेरी आँखों में तुम्हें मौत दीखती है। ठीक है, बहुत सुन्दर, यह भी क्या असत्य है कि वे आँखें जो सबसे अधिक कोमल

और नाजुक होती हैं जो छोटे से छोटे मिट्टी के कण तक के लिये अपने सभीत पलकों को मूंद लेती हैं वे ही जल्लाद, और अत्याचारिणी कहलायें ? अब मैं अपने पूरे हृदय से तुमसे घृणा करती हूँ और यदि मेरी आँखों में किसी को चोट पहुँचाने की शक्ति है तो वे अवश्य तुम्हारी मौत का कारण हों। अब तुम मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ने का बहाना क्यों नहीं करते हो। यदि तुम नहीं कर सकते हो तो ओह, कितनी शर्म की बात है। कम से कम कुछ भी शर्म रख कर अब यह झूंठ मत बोलना कि मेरी आँखें कोई जल्लाद हैं। लाओ, बताओ तो कहाँ मेरी आँखों ने कोई घाव किया है ? यहाँ तक कि शरीर पर एक पिन के खुरचने तक का निशान बच रहता है और कितनी भी पतली नरसल को हाथ पर दबाने से कुछ क्षणों तक उस तक का निशान बन जाता है। तुम्हीं कहो, क्या क्रोधपूर्ण आँखों से देखने पर भी मैंने तुम्हें कोई चोट पहुँचाई है ? नहीं, और यह मैं निश्चयपूर्वक कहती हूँ कि आँखों में किसी को चोट पहुँचाने की शक्ति ही नहीं होती।

सिल्वियस : ओ प्यारी फीबी ! यदि कभी ऐसा हो, और वह समय निकट आये जब किसी के सुन्दर मुख को देख कर तुम्हारे हृदय में प्रेम की भावना जाग पड़े तब तुम्हें मालूम होगा कि प्रेम के ये पैने बाण कितने छिपे हुए घाव करते हैं।

फीबी : लेकिन उस समय तक मेरे पास न आओ और जब ऐसा समय आये तब चाहे मेरी कितनी भी हँसी उड़ाना। जिस तरह मैं उस समय तक तुम्हारे साथ कोई सहानुभूति नहीं दिखा रही हूँ तुम भी उस समय मत दिखाना।

रोजा० : अरे, ऐसा व्यवहार क्यों ? मैं पूछता हूँ। किस माँ की

सन्तान हो तुम, जो एक गरीब और दुःखी मनुष्य का इस तरह अपमान करती हो और उस पर विजय का-सा गर्व अनुभव करती हो। क्या हुआ कि तुममें कुछ सुन्दरता है और सच पूछो तो तुम इतनी कोई अधिक सुन्दर भी नहीं हो कि अन्धेरे में तुम्हें देखने के लिये कोई प्रकाश लेकर आये। तव क्या तुम्हें इस तरह क्रूर और अभिमानी होना चाहिये ? क्या मतलव है इस सवका ? मेरी ओर क्यों घूरती हो तुम ? मुझे तो तुम प्रकृति की वनाई हुई अत्यंत साधारण वस्तु लगती हो। पर हे ईश्वर ! मैं सोचता हूँ कि वह तो मेरी आँखों को वाँध लेना चाहती है। नहीं, ओ झूठे अभिमान पर पलने वाली स्त्री, इसकी तनिक भी आशा न करो, ये तुम्हारी काली भौंहें, ये काले चिकने वाल, ये मोती जैसे तुम्हारी आँखों के काले विन्दु और ये तुम्हारे पीले चिकने गाल मुझे इसके लिये वाध्य नहीं कर सकते कि मैं तुम्हारी प्रशंसा करूँ। ओ मूर्ख चरवाहे ! तुम क्यों दखिनी हवा की तरह जो वादल और वर्षा साथ लेकर चलती है, इसके पीछे आहें और आँसू लिये फिरते हो ? जैसी यह स्त्री की तरह है उसकी अपेक्षा मनुष्य की तरह तुम इससे हज़ार गुने अच्छे हो। तुम जैसे ही मूर्ख होते हैं वही तो इस संसार को मैले-कुचैले और वदसूरत वच्चों से भर देते हैं। कांच में अपनी मुखमुद्रा देखकर उसे इतना गर्व अनुभव नहीं होता होगा जितना तुम उसके पीछे-पीछे फिरकर उसे कराते हो। तुम्हें इस तरह करता देख वह अपने आपको जितनी अच्छी नहीं है उससे कहीं अधिक अच्छी और सुन्दर समझने लगती है। लेकिन भद्रे, थोड़ा अपने आपको पहचानो। घुटनों के वल गिर कर ईश्वर को धन्यवाद दो, इस प्रसन्नता में व्रत करो कि तुम्हें एक अच्छे मनुष्य का प्रेम मिला

है क्योंकि मैं तुम्हारे कान में मित्र-भाव से यह कह देता हूँ कि समय आ गया है तो अब इन्हें (नजरों को) बेच डालो क्योंकि हर बाज़ार में तुम इन्हें नहीं बेच पाओगी। उस मनुष्य से दया की भीख मांगो और उससे प्रेम करो। उसकी प्रार्थना को स्वीकार कर लो। जब किसी घृणा करने योग्य प्राणी में गन्दगी दीखती है तो वह गन्दगी साधारण मनुष्य के साथ से कहीं अधिक गन्दी दीखती है। इसलिये ऐ चरवाहे, इसे अपने साथ ले जाओ। अच्छा, अलविदा।

फीबी : प्रिय नवयुवक, मैं प्रार्थना करती हूँ कि एक वर्ष तक मेरे साथ रहकर इसी तरह मुझ पर क्रुद्ध होते रहो। इस मनुष्य के प्रेम-वाक्यों को सुनने की अपेक्षा मैं तुम्हारे क्रोधपूर्ण शब्दों को सुनना अधिक चाहती हूँ।

रोज़ा० : वह तो तुम्हारी गन्दी आदतों से भी प्रेम करता है। (सिल्वियस से) और वह मेरे क्रोध से प्रेम करती है। यदि ऐसा है तो जैसे ही वह क्रोधपूर्ण दृष्टि से तुम्हारी ओर देखकर कुछ कहे तो मैं अपने कटु शब्दों से उसे गरमा दूंगा। (फीबी से) इस तरह तुम मुझे क्या घूर रही हो ?

फीबी : मैं तुम्हें कोई भी नुकसान नहीं पहुँचाऊँगी।

रोज़ा० : मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ, मुझसे प्रेम न करो क्योंकि शराब पीकर मतवाले लोग जैसी झूठी सौगन्ध खाया करते हैं उससे भी कहीं अधिक झूठा मैं हूँ। इसके अतिरिक्त मुझे तुम पसन्द नहीं हो। यदि तुम मेरा घर जानना चाहो तो यह पास ही इस जैतून के पेड़ों के झुरमुट की बगल में है। क्या तुम चलोगी बहिन ? चरवाहे, जैसे भी हो सके उससे प्रेम करो। आओ बहिन! ओ चरवाहिन, उसके ऊपर कुछ अच्छी दृष्टि रखो और घमण्ड न

करो। चाहे सारा संसार तुम्हें देखे पर जितना भ्रम इसे तुम्हारे बारे में है वैसा किसी को न होगा। चलो आओ, चलें।

[रोजालिन्ड, सीलिया और कोरिन का प्रस्थान]

फीबी : ओ स्वर्गीय चरवाहे (मारलो) अब मैं तेरे कथन की महत्ता समझ गई[1] कि 'ऐसा कौन है जिसका यदि प्रथम दृष्टि में प्रेन नहीं हुआ हो, तो उसने कभी भी प्रेम किया हो ?'

सिल्वियस : ओ प्यारी फीवी,—

फीबी : हाँ, क्या कह रहे हो तुम सिल्वियस ?

सिल्वियस : ओ मेरी प्यारी फीवी, मुझ पर तरस खाओ।

फीबी : मुझे तुम्हारे लिये दुःख है श्रेष्ठ सिल्वियस।

सिल्वियस : लेकिन जहाँ दुःख होता है वहाँ दुःख से मुक्ति पाने की राह भी होती है। यदि तुम्हारे प्रेम में मुझे दुःखी देखकर तुम्हें दुःख होता है तो प्यारी फीवी तुम मुझसे प्रेम क्यों नहीं करतीं जिससे तुम्हारा और मेरा दोनों का दुःख एक साथ मिट जाय।

फीबी : मैं तुमसे प्रेम करती हूँ। क्या यह मित्रता का प्रेम नहीं है ?

सिल्वियस : पर मैं तो तुम्हें चाहता हूँ।

फीबी : यह तो तुम्हारा लालचीपन हुआ सिल्वियस ! क्या तुम्हें वह समय याद है जब मैं तुमसे घृणा करती थी और अब भी यह बात नहीं है कि मैं तुमसे प्रेम करती हूँ। मैं तो इसलिये तुम्हारा साथ चाहती हूँ क्योंकि प्रेम के सम्बन्ध में तुम बहुत

---

१. Dead Shepherd—यहाँ चरवाहा शब्द वन और खेतों-सम्बन्धी प्रेम-काव्य (Pastoral Poetry) लिखने वाले कवि के लिये प्रयोग किया गया है। मारलो (Marlowe) से ही यहाँ का संकेत है, जिसके काव्य की ही अगली पंक्तियाँ हैं।

अच्छी-अच्छी बातें करना जानते हो। तुम्हारे साथ से जहाँ पहले मैं ऊब जाया करती थी अब उसके लिये अपने चित्त में कोई आपत्ति नहीं लाऊँगी और मैं तुम्हें अपने साथ रखूँगी। लेकिन इससे आगे किसी अन्य वस्तु की आशा न करना। केवल इसी बात पर प्रसन्न हो लेना कि मैंने तुम्हें अपने साथ रहने का अवसर दिया है।

सिल्वियस : तुम्हारे प्रति मेरा प्रेम इतना पूर्ण और पवित्र है कि मेरी इस दीनावस्था में यदि मुझे इतना भी तुम्हारे उस प्रेम में से, जो पूर्णतः किसी अन्य पुरुष के लिये है, मिल गया, जितने खेत की पूरी फसल कटने के बाद कुछ तितरे-बितरे दाने पड़े रह जाते हैं और उन्हें कोई पा लेता है, तो मैं इसे बहुत अधिक समझूंगा। कभी-कभी मेरी ओर एकाध मुस्कराहट बिखेर देना प्यारी फीबी ! और मैं इसी पर अपना निर्वाह कर लूंगा।

फीबी : क्या तुम उस नवयुवक को जानते हो जो थोड़ी देर पहले मुझसे बातें कर रहा था ?

सिल्वियस : अच्छी तरह से तो नहीं पर मैं उससे प्रायः मिलता रहा हूँ और उसने ही उस बुड्ढे किसान से वह झोंपड़ी और अन्य वस्तुएँ खरीदी हैं।

फीबी : यह मत सोचना कि मैं उससे प्रेम करती हूँ। मैं तो वैसे ही पूछती हूँ। उस नवयुवक का स्वभाव बहुत चिड़चिड़ा है लेकिन फिर भी वह बातें अच्छी-अच्छी करता है। पर मुझे उसकी बातों से क्या ? फिर भी यह तो मैं कहूँगी कि शब्दों का सद्उपयोग उसी समय होता है जबकि उन्हें कहने वाला उनसे दूसरों के चित्त को प्रसन्न करता है। अच्छा सुन्दर नवयुवक है वह पर इतना सुन्दर भी नहीं। लेकिन हाँ, घमण्डी तो अवश्य वह बहुत ही है,

फिर भी उसका यह घमण्ड उसके लिये शोभा देता है। बड़े होने पर वह अत्यंत श्रेष्ठ मनुष्य बनेगा। सबसे अच्छी बात तो उसके मुख और शरीर का सुन्दर रंग है और जैसे वह अपने शब्दों से किसी के हृदय पर आघात पहुँचाता है उससे भी पहले उसकी आँखें उसकी मरहम-पट्टी करके उसे ठीक कर लेती हैं। वह अधिक लम्बा नहीं है फिर भी उसकी उम्र देखते हुए तो वह अधिक लम्बा ही है। उसका पैर तो साधारण ही है फिर भी बहुत सुन्दर है। उसके ओठ पर एक सुन्दर लाली थी जो उसके गालों की लाली से कहीं अधिक पकी हुई और मनमोहक थी। उनमें ठीक उतना ही अन्तर था जितना एक सदैव स्थिर रहने वाली लाली तथा 'डैमास्क' गुलाब के फूल की-सी हल्की और मिली हुई लाली में होता है। सिल्वियस, मैं सच कहती हूँ कि जैसे मैंने उसके अंग-प्रत्यंग के सौन्दर्य्य को देखा है इसी तरह अगर अन्य स्त्रियाँ देख पातीं तो अवश्य ही वे उससे प्रेम करने लग जातीं। लेकिन मुझसे पूछो तो मैं न तो उससे प्रेम करती हूँ और न ही घृणा करती हूँ फिर भी कारण तो मेरे पास उससे घृणा करने के ही अधिक हैं बजाय उससे प्रेम करने के क्योंकि मुझे इस तरह कटु शब्द उसे क्यों कहने चाहिये थे? उसने कहा था कि मेरी आँखें काली हैं और मेरे बाल भी काले हैं। मुझे अब याद आ रहा है कि यह कहते हुए उसने क्रोध में आकर कितनी ही बुरी बातें मुझे सुनाई थीं। मुझे आश्चर्य्य हो रहा है कि उस समय मैंने उसे कोई उत्तर क्यों नहीं दिया। लेकिन कोई बात नहीं, एक बार की भूल का अर्थ यह थोड़े ही है कि मैं उसका पीछा छोड़ दूंगी। मैं उसे एक व्यंगपूर्ण पत्र लिखूंगी और तुम उसे ले जाओगे। क्या तुम ले जाओगे सिल्वियस?

सिल्वियस : ओ फीबी, अपने पूरे हृदय से ले जाऊँगा।

फीबी : मैं अब सीधी चलकर लिखती ही हूँ क्योंकि सारा विषय तो मेरे मस्तिष्क और हृदय में है। मैं अत्यंत संक्षेप में कटु से कटु बात उसे लिखूंगी। आओ, चलो सिल्वियस।

चौथा अंक

दृश्य १

[वन-प्रान्त]

[रोज़ालिन्ड, सीलिया तथा जेक्स का प्रवेश]

जेक्स : ओ सुन्दर नवयुवक, मेरी तुमसे यह प्रार्थना है कि तुम मुझे अपने आपसे और भी अच्छी तरह परिचित हो जाने दो।

रोज़ा० : लोग कहते हैं कि तुम सदा खिन्न बने रहते हो।

जेक्स : मैं ऐसा ही हूँ क्योंकि हँसने से कहीं अच्छी मैं इस खिन्नता को समझता हूँ।

रोज़ा० : जिन मनुष्यों की किसी भी बात में अति होती है उन्हें घृणित समझा जाता है और शराबियों से भी अधिक प्रत्येक आज-कल उन्हें बुरा कहता है।

जेक्स : पर दुःखी रहना और कुछ न बोलना अच्छा ही है।

रोज़ा० : यही क्यों ? फिर तो एक गढ़ा हुआ लट्ठा होना भी अच्छा है।

जेक्स : मुझमें न तो विद्वानों की-सी खिन्नता है जो एक दूसरे की प्रतिद्वन्द्विता से ही पैदा होती है, न संगीतकार की-सी जो हास्यास्पद होती है, न राजदरबारी की-सी जो दम्भ से ही होती है, न सैनिक की-सी जो महत्त्वाकांक्षा के कारण होती है, न एक वकील की-सी जिसमें राजनैतिक चाल होती है और न एक प्रेमी जैसी जिसकी खिन्नता में ये सभी चीज़ें मिली रहती हैं। यह तो मेरी स्वयं की उदासी और खिन्नता है जो बहुत-सी जड़ी-बूटियों से मिलकर बनी है, बहुत-सी चीज़ों में से यह निकाली गई है और निस्संदेह मेरी यात्राओं के

वारे में आये अनेक तरह के विचार जब अधिक देर तक मेरे मस्तिष्क में ठहर जाते हैं तो मैं अवश्य वहुत दुःखी और उदास हो जाता हूँ।

रोज़ा० : एक यात्री ! तव तो मेरा विश्वास है कि तुम्हारे दुःखी होने का वहुत वड़ा कारण है। मुझे तो यह डर है कि तुमने दूसरों की ज़मीन को देखने के लिये अपनी स्वयं की ज़मीन बेच दी है ! तव खूब देख लेना और पास-पल्ले कुछ न रखना ऐसा ही जैसे किसी की आँखें तो धनी हों और हाथ निर्धन हों।

जेक्स : हाँ, मैंने अनुभव तो प्राप्त किया है।

रोज़ा० : और तुम्हारा अनुभव ही तुम्हें दुःखी वनाता है। ऐसा अनुभव जो दुःखी वनाता है उसके वजाय तो अपने को खुश करने के लिये मैं किसी मूर्ख को ही रख लेता और फिर इस अनुभव के लिये यात्रा और करता।

[ऑरलेन्डो का प्रवेश]

ऑरलेन्डो : प्यारी रोज़ालिन्ड, मैं तुम्हें अभिवादन करता हूँ और तुम्हारे सुख की कामना करता हूँ।

जेक्स : तव ईश्वर तुम्हारी सहायता करे। तुम तो अतुकान्त काव्य में वातें करते हो।

रोज़ा० : अच्छा तो विदा यात्री। देखो, तुम कुछ हकलाते हो और विचित्र तरह के कपड़े पहनते हो। यहाँ तक कि तुम्हारे गाँव में अच्छी से अच्छी वस्तु में तुम्हें दोष दीखते हैं तो फिर तुम्हारी जन्मभूमि की किसी भी वस्तु से प्रेम न करो और ईश्वर को इसके लिये गाली दो कि उसने तुम्हें ऐसा क्यों वना दिया, नहीं तो सच मैं तुम्हें इतना साधारण यात्री भी नहीं समझूँगा जो कभी वेनिस तक जाकर गोन्डोला नाम की नावों में वैठा हो। (जेक्स का प्रस्थान)

हाँ कहो, कैसे हो ऑरलेन्डो ! अब तक तुम कहाँ थे। तुम एक प्रेमी होकर ऐसी दूसरी चाल खेलते हो कि मेरे सामने तक अधिक नहीं आते।

ऑरलेन्डो : ओ मेरी सुन्दर रोज़ालिन्ड ! मैं तो मेरे वचन देने से एक घंटे के भीतर ही भीतर आ गया हूँ।

रोज़ा० : प्रेम में एक घंटे की देरी करना ! वह जो एक मिनट के हज़ार भाग करे और उस मिनट के हज़ारवें भाग तक भी प्रेम में अपने वचन से देर में आये तो उसके बारे में यह कहा जाता है कि कामदेव सावधान रहने के लिये उसका कन्धा थपथपा देते हैं लेकिन यह मैं निश्चय से कहती हूँ कि उसका घाव छोटा ही होता है।

ऑरलेन्डो : मुझे क्षमा कर देना, मेरी प्यारी रोज़ालिन्ड !

रोज़ा० : नहीं, तुम यदि ऐसे सुस्त हो तो अब अधिक मेरे सामने न आना। इससे तो यदि मैं किसी रेंग-रेंग कर चलने वाले लारवे से प्रेम करती तो अधिक प्रसन्न रहती।

ऑरलेन्डो : लारवे से ?

रोज़ा० : हाँ लारवे से। चाहे वह धीरे-धीरे चलता है पर अपने घर को सिर पर लेकर चलता है और जैसा तुम सोचते हो उससे विरुद्ध स्त्री से कहीं अधिक स्वतंत्र सम्पत्ति का उपभोग करता है। इसके अतिरिक्त अपने भाग्य का निर्माता वह स्वयं होता है।

ऑरलेन्डो : वह क्या है ?

रोज़ा० : क्यों, सींग ?

ऑरलेन्डो : गुण सींग बनाने वाला नहीं होता और मेरी रोज़ालिन्ड गुणशील है।

रोज़ा० : और मैं तुम्हारी रोज़ालिन्ड हूँ।

सीलिया : तुमसे इस तरह कहने से उसे प्रसन्नता होती है। लेकिन उसकी कल्पना की रोज़ालिन्ड तो तुमसे अधिक सुन्दर है।

रोज़ा० : तो आओ, मुझसे प्रेम करो क्योंकि अब मेरा चित्त अवकाश-काल के अनुकूल प्रसन्न है और मैं तुम्हारी बात स्वीकार करना पर्याप्त रूप से चाहूँगी। यदि मैं तुम्हारी वही रोज़ालिन्ड होती तो तुम मुझसे इस समय क्या कहते ?

ऑरलेन्डो : इससे पहले कि मैं कुछ बोलता मैं उसे चूमता।

रोज़ा० : नहीं, तुम्हें सबसे पहले उससे बातें करनी चाहियें और जब तुम समझो कि बात करने का अब कोई विषय नहीं रहा है उस समय तुम्हें उसे चूमना चाहिये। बड़े अच्छे-अच्छे वक्ता जब बोलते-बोलते किसी विषय पर अटक जाते हैं तो उसी समय थूकने लगते हैं और इसी तरह, ईश्वर बचाये, जब प्रेम करने वालों के पास विषय समाप्त हो जाता है तो उससे सबसे अच्छा बचाव चुम्बन करना ही है।

ऑरलेन्डो : लेकिन यदि चुम्बन करने से कोई मना कर दे तब क्या होगा ?

रोज़ा० : तब वह तुम्हारे लिये विनम्र प्रार्थना का मार्ग खोलती है और वहाँ से नया विषय प्रारम्भ हो जाता है।

ऑरलेन्डो : ऐसा कौन है जो अपनी प्रियतमा के सम्मुख बैठकर विषय की किसी आपत्ति में पड़ जायेगा।

रोज़ालिन्ड : यदि मैं तुम्हारी प्रियतमा हूँ तो सच तुम इस आपत्ति में पड़ जाओगे नहीं तो मैं अपनी ईमानदारी को अपनी वाक्-पटुता से नीची वस्तु समझूँगी।

ऑरलेन्डो : क्या अपनी प्रार्थना[1] (suit) के वीच।

रोज़ालिन्ड : हाँ, वस्त्रों (suit) के वीच नहीं, प्रार्थना (suit) के वीच। क्या मैं तुम्हारी रोज़ालिन्ड नहीं हूँ ?

ऑरलेन्डो : तुम्हें इस तरह कहने में मुझे कुछ प्रसन्नता मिलती है क्योंकि मैं उसके बारे में बातें कर सकूँगा।

रोज़ा० : यदि मैं अपने आप को वही मान लूं तो मैं कहती हूँ कि मैं तुम्हें नहीं चाहती।

ऑरलेन्डो : तब मैं अपने आपको ऑरलेन्डो ही समझकर सचमुच मरता हूँ।

रोज़ा० : नहीं-नहीं, बनावटी ढंग से मर जाओ। यह ग़रीब दुनिया ६००० वर्ष पुरानी है पर इसमें कोई भी मनुष्य सचमुच प्रेम के कारण से तो कभी नहीं मरा। ट्राइलस ने अपने सिर पर वह 'ग्रीसियन' छड़ दे मारी थी फिर भी उसने इससे पहले भी मरने की जितनी कोशिश हो सकती थी, की थी और वह प्रेम के आदर्शों में से एक है। लेन्डर, चाहे 'हीरो' देवदासी बन गई तो भी वह बहुत दिनों तक जीवित रहता यदि वह गरमी की ऋतु की गरम रात न आई होती क्योंकि वह नवयुवक 'हैलिस्पौन्ट' में नहाने गया और वहाँ एक साथ बहुत थक जाने के कारण उसमें डूब गया। उस समय के मूर्ख इतिहासकारों ने समझा कि यह 'सैस्टस की हीरो' के लिये मरा है। लेकिन ये सब झूठ है। समय-समय पर मनुष्य मरते हैं और कीड़े उन्हें खाते हैं लेकिन प्रेम के लिये नहीं।

---

१. Suit—इस शब्द पर शेक्सपियर ने 'पन' का प्रयोग किया है। इसके दो अर्थ हैं—(१) वस्त्र (२) प्रेम-प्रार्थना। ऑरलेन्डो तो इस शब्द को प्रार्थना के ही अर्थ में प्रयोग करता है लेकिन रोज़ालिन्ड दोनों अर्थों में इसे ले जाती है।

ऑरलेन्डो : मेरी वास्तविक रोज़ालिन्ड इस स्वभाव की नहीं होगी क्योंकि मैं सच कहता हूँ, उसकी क्रोधपूर्ण दृष्टि से मैं जीवित नहीं रह सकता।

रोज़ा० : मैं इस हाथ की सौगन्ध खाकर कहती हूँ कि इससे तो एक मक्खी भी नहीं मरेगी। लेकिन आओ, अब और भी अच्छी तरह से तुम्हारी रोज़ालिन्ड बन जाऊँगी और अब मुझसे कहो कि तुम क्या चाहते हो। मैं तुम्हारी प्रार्थना को स्वीकार करूँगी।

आरलेन्डो : मुझसे प्रेम करो रोज़ालिन्ड।

रोज़ा० : हाँ अवश्य करूँगी। शुक्र, शनिश्चर और प्रत्येक ही दिन।

ऑरलेन्डो : और क्या तुम मुझे अपने साथ रखोगी ?

रोज़ा० : हाँ-हाँ, ऐसे बीस मनुष्यों को।

ऑरलेन्डो : यह क्या कहती हो तुम ?

रोज़ा० : क्या तुम अच्छे नहीं हो ?

ऑरलेन्डो : मैं सोचता हूँ, अच्छा हूँ।

रोज़ा० : तब तो क्यों किसी अच्छी चीज़ की इतनी अधिक मात्रा में इच्छा करनी चाहिये ? आओ बहिन, तुम पादरी की तरह हमारा विवाह करा दो। मुझे तुम्हारा हाथ पकड़ाओ ऑरलेन्डो। क्यों क्या विचार है बहिन ?

ऑरलेन्डो : मैं तुमसे विनय करता हूँ, हमारा विवाह करा दो।

सीलिया : मैं कोई शब्द नहीं बोल सकती।

रोज़ा० : तुम इस तरह से प्रारम्भ करो, 'क्या तुम इसे चाहते हो ऑरलेन्डो'—

सीलिया : अच्छा तो चलो। 'क्या तुम रोज़ालिन्ड को अपनी पत्नी बनाना चाहते हो ऑरलेन्डो ?'

ऑरलेन्डो : अवश्य।

रोज़ा० : पर हाँ, कब ?

ऑरलेन्डो : अभी-अभी ।- जितनी शीघ्रता के साथ वह विवाह कर ले ।

रोज़ा० : तब तुम यह कहो, 'ओ रोज़ालिन्ड, मैं तुम्हें अपनी पत्नी बनाता हूँ ।'

ऑरलेन्डो : ओ रोज़ालिन्ड ! मैं तुम्हें अपनी पत्नी बनाता हूँ ।

रोज़ा० : मैं तुमसे यह पूछ सकती हूँ कि किसकी आज्ञा से ? पर ओ ऑरलेन्डो ! मैं तुम्हें अपना पति स्वीकार करती हूँ । यह एक लड़की है जो पादरी से भी आगे चलती है और यह तो निश्चित ही है कि एक स्त्री के विचार उसके कार्य्यों से पहले भागते हैं ।

ऑरलेन्डो : ऐसे तो सभी विचार हैं । उनके पंख होते हैं ।

रोज़ा० : अब मुझे यह बताओ कि यदि वह तुम्हें मिल जाय तो इसके बाद कितने समय तक तुम उसे रखोगे !

ऑरलेन्डो : सदैव और एक दिन ।

रोज़ा० : इस सदैव को हटाकर एक दिन ही कहो । नहीं-नहीं ऑरलेन्डो, जब मनुष्य प्रेम करते हैं तो अप्रैल मास की तरह होते हैं, जब विवाह करते हैं तो दिसम्बर की तरह; इसी तरह जब लड़कियाँ कँवारी ही होती हैं तो मई मास की तरह होती हैं लेकिन जब किसी की पत्नी बन जाती हैं तब तो आकाश ही बदल जाता है । जितनी अधिक ईर्ष्या एक 'बारबरी' कबूतर अपनी कबूतरी से करता है उससे कहीं अधिक मैं तुमसे करूँगी; वर्षा आने पर जितना अधिक शोर तोता मचाता है उससे कहीं अधिक मैं मचाऊँगी । एक बिना पूँछ वाले बन्दर से भी अधिक नई-नई वस्तुओं का चाव रखूँगी और एक साधारण बन्दर से भी अधिक अपनी इच्छाओं में चंचल और नटखट हूँगी । जैसे 'डाइना' झरने

पर विना किसी कारण रोई थी वैसे ही मैं भी रोऊँगी और यह मैं उस समय करूँगी जब तुम अत्यंत प्रसन्न होगे। जब तुम सोने जाने लगोगे तभी मैं 'हियाना' की तरह हँसूंगी।

आॅरलेन्डो : लेकिन मेरी रोज़ालिन्ड क्या ऐसा करेगी ?

रोज़ा० : अपनी सौगन्ध खाकर कहती हूँ वह ऐसा ही करेगी जैसे मैं करूँगी।

आॅरलेन्डो : ओ, लेकिन वह तो समझदार है !

रोज़ा० : नहीं तो ऐसा करने की वात ही उसे नहीं सूझ पड़ती। जितना अधिक कोई समझदार होता है उतना ही वह अभिमानी होता है। किसी स्त्री की सूझ को वन्द करने के लिये दरवाज़ा बन्द कर दो, वह तो खिड़की में होकर निकल जायेगी। उसे भी बन्द कर दो, तो ताले के छेद में होकर निकल जायेगी। और उसे भी वन्द कर दो तो चिमनी से वाहर जाती धुँआ के साथ निकल जायेगी।

आॅरलेन्डो : इन दो घंटों के लिये रोज़ालिन्ड, मैं तुमसे अलग हूँगा।

रोज़ा : हाय ! मेरे प्रियतम, मैं तुम्हारे विना दो घंटे नहीं रह सकती।

आॅरलेन्डो : मुझे ड्यूक के पास सायंकाल के भोजन के समय अवश्य उपस्थित रहना चाहिये। दो वजे तक मैं फिर तुम्हारे पास वापिस आ जाऊँगा।

रोज़ा : ठीक है, यही करो, यही करो। मैं जानती थी कि तुम क्या निकलोगे; मेरी मित्रों ने भी मुझसे इसके वारे में वहुत कहा था और मैं भी कम नहीं सोचती थी। तुम्हारे मीठे और वहलाने वाले शव्दों ने मुझे जीत लिया। यह समझ लो कि एक और इस संसार से उठ गया, इसलिये ओ मौत, आ। तुम्हारे आने का समय तो दो वजे है न ?

ऑरलेन्डो : हाँ प्यारी रोज़ालिन्ड।

रोज़ा० : ईश्वर मुझे सौभाग्य प्रदान करे। मैं सच विश्वास के साथ कहती हूँ और उन अच्छी सौगन्धों के बल पर कहती हूँ जो धर्म और ईश्वर के विपरीत होने का कोई भय नहीं रखतीं कि यदि तुमने अपने वचन को लेशमात्र भी तोड़ा और निश्चित समय से एक मिनट भी पीछे आये तो मैं तुम्हें सबसे अधिक दुख:दायी वचन तोड़ने वाला और खोखला प्रेमी मानूंगी और उस रोज़ालिन्ड के सर्वथा अयोग्य मानूंगी जिसे तुमने ग़ैर वफ़ादार औरतों के झुण्ड से चुना है। इसलिये मेरे आक्षेपों के लिये सावधान रहना और अपना वचन निबाहना।

ऑरलेन्डो : इतनी ही पवित्रता के साथ जितनी यदि तुम मेरे वास्तविक रोज़ालिन्ड होतीं। अच्छा विदा।

रोज़ा० : ठीक है, समय ही वह पुराना न्यायाधीश है जो सभी ऐसे अपराधियों की जाँच करता है। अब भी मैं समय के ऊपर छोड़ती हूँ। विदा।

[**ऑरलेन्डो का प्रस्थान**]

सीलिया : तुम्हारी इन प्रेम-सम्बन्धी मूर्खतापूर्ण बातों में तुमने हमारी स्त्री-जाति का अनुचित उपयोग किया है। हमें तुम्हारी यह पुरुष की वेश-भूषा हटा देनी चाहिये थी और संसार को यह दिखा देनी चाहिये थी कि चिड़िया ने अपने घोंसले का क्या हाल बनाया है।

रोज़ा० : ओ बहिन, मेरी अच्छी और प्यारी छोटी बहिन ! तुम तो जानती ही हो, मेरा प्रेम कितना गहरा है, लेकिन इसकी गहराई नापी नहीं जा सकती। पुर्तगाल की खाड़ी की तरह मेरे प्रेम की तह किसने आज तक पाई है ?

सीलिया : या यों कहो कि उसके कोई तह ही नहीं है। ज्योंही प्रेम उसमें गिराओ वह बाहर निकल जाता है।

रोजा० : नहीं, चाहे 'वीनस' का वही दुराचारी वर्णशंकर जो विचार (खिन्नता) से पैदा हुआ, तिल्ली (चंचलता) से गर्भस्थान में रहा और पागलपन से जिसका जन्म हुआ, वही अन्धा बदमाश लड़का जो कि प्रत्येक की आँखों को बुरा कहता है क्योंकि उसकी स्वयं की नहीं हैं, वही यह निर्णय करे कि मेरा प्रेम कितना गहरा है। मैं तुमसे कहती हूँ ऐलीना, मैं ऑरलेन्डो को बिना देखे नहीं रह सकती। मैं चलकर कोई छाया ढूंढूंगी और जब तक वह न आयेगा तब तक उसके लिये निश्वास भरती रहूँगी।

सीलिया : और मैं सोऊँगी।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[वन-प्रान्त]

[सरदारों, वनवासियों तथा जेक्स का प्रवेश]

जेक्स : कौन है वह जिसने हरिण को मारा है।

एक सरदार : मैं था श्रीमान्।

जेक्स : चलो एक 'रोमन' विजेता की भाँति इसे ड्यूक के सामने उपस्थित करें और विजय-चिन्ह के लिये इसके सिर पर इन सींगों को लगा देना ठीक रहेगा। ओ वनवासी, क्या इस सम्बन्ध में तुम्हें कोई गीत नहीं याद है ?

वनवासी : हाँ-हाँ श्रीमान्।

जेक्स : तो गाओ। यह कोई बात नहीं कि वह स्वर में हो, बस उससे शोर खूब मचना चाहिये।

वनवासी : —गीत—

[मूलगीत का अर्थ—क्या हरिण के वधिक को बुलायें ?
हम हरिण के चर्म और सींगों को ओढ़ें ?
उसे बुलाओ ।

(टेक को सब गाते हैं ।)

सींग पहनने में तुम घृणा मत करो ।
तुम्हारे जन्म से पूर्व यह भृंगवत् था ।
तुम्हारे पिता के पिता ने इसे पहना था ।
और तुम्हारे पिता ने भी ।
सींग, सींग, यह सतृष्ठसींग,
यह कोई हँसी की बात नहीं,
न घृणा करने की ।]

हरिण का हुआ शिकार,
भृंग लो, ले लो चर्म समस्त,
हरिण का हुआ शिकार !
घृणा करो मत इससे प्यारे,
यह परंपरा रही सदा रे,
हरिण का हुआ शिकार !
देखो यह कैसा सुंदर है,
इसमें हँसने को क्या कुछ है,
हरिण का हुआ शिकार !

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[वन-प्रान्त]

[रोज़ालिन्ड और सीलिया का प्रवेश]

रोज़ा० : अब तुम क्या कहोगी ? क्या दो से अधिक नहीं बज गये हैं ? और ऑरलेन्डो कितना आया है !

सीलिया : मैं यह निश्चयपूर्वक कहती हूँ कि वह अपने सच्चे प्रेम और विक्षुब्ध चित्त से धनुष-वाण लेकर गया है—सोने के लिये। वह देखो, कौन आ रहा है यहाँ ?

[सिल्वियस का प्रवेश]

सिल्वियस : ओ सुन्दर नवयुवक । मैं तुम्हारे ही पास संदेश लेकर आया हूँ। मेरी प्यारी फीवी ने मुझे इसे तुम्हें देने की आज्ञा दी थी । मैं नहीं जानता कि इसमें क्या लिखा है लेकिन जैसा पत्र लिखते समय उसकी चढ़ी हुई भौंहों तथा क्रोधपूर्ण कृत्यों से मैं अनुमान लगा सकता हूँ इसमें कोई क्रोधपूर्ण बात ही लिखी होगी। मुझे क्षमा करना क्योंकि मैं तो एक निरपराधी संवादवाहक हूँ।

रोज़ा० : स्वयं धैर्य्य भी इस पत्र को पाकर विचलित हो उठता और न जाने किस बुरी तरह व्यवहार करता। यदि मैं इसे सहन कर लूं तो संसार की किसी बुरी से बुरी चीज़ को भी सहन कर लेना चाहिये। वह कहती है कि मैं सुन्दर नहीं हूँ, मुझमें शिष्टाचार की कमी है और कहती है कि मुझमें अभिमान बहुत है और इसीलिये वह मुझसे प्रेम नहीं कर सकी। काश, फोनिक्स की तरह पुरुष भी एक-दो ही होते। हे ईश्वर ! तुम जानते हो उसका प्रेम किसी खरगोश की तरह नहीं है जिसका मैं शिकार

करता हूँ, तब वह मुझे ऐसा क्यों लिखती है? ठीक है, अच्छा चरवाहे! इस पत्र में तो तुम्हारी चाल मालूम होती है।

सिल्वियस : नहीं, मैं सच कहता हूँ। मुझे कुछ पता नहीं है कि इसमें क्या लिखा है। फीबी ने ही इसे लिखा था।

रोज़ा० : आओ, आओ, तुम तो मूर्ख हो और प्रेम की अति में बँधे हुए हो। मैंने उसका हाथ देखा था। वह तो बिलकुल चमड़े का है, ठीक ईंट के-से रंग का । यह देखकर सच, पहले मैंने समझा था कि वह कोई पुराने दस्ताने हाथों में पहन रही है लेकिन ये तो उसके नंगे हाथ ही थे। उसका हाथ तो घरेलू काम-धंधे में लगी रहने वाली स्त्रियों जैसा है लेकिन यह कोई बात नहीं, मेरा तो कहना यह है कि यह पत्र उसकी सूझ का है ही नहीं। यह तो किसी पुरुष की सूझ और हाथ का है।

सिल्वियस : नहीं, निश्चित ही यह फीबी का है ।

रोज़ा० : कौन, यह पत्र तो व्यक्त करता है कि यह क्रोधावेश में पूरी तरह निर्दयता के साथ लिखा गया है। ऐसा तो अपने प्रतिद्वन्दियों को लिखा जाता है। क्यों, जैसे तुर्क ईसाइयों को वैर का संदेश भेजते हैं क्या उसी तरह उसने यह भेजा है? स्त्रियों के नम्रता-भरे मस्तिष्क से ऐसी दैत्यों की-सी कठोर बातें नहीं निकल सकतीं । ऐसे हवशियों के शब्द जो प्रभाव में वैसे देखने से अधिक काले हैं। क्या तुम यह पत्र सुनोगे ?

सिल्वियस : आपकी कृपा होगी क्योंकि मैंने अभी तक इसे नहीं सुना है फिर भी फीबी की निर्दयता के बारे में तो बहुत ही सुना है।

रोज़ा० : जितनी क्रूरता उसमें हो सकती है उससे यह लिखती है। अब देखो उस अत्याचारिणी के शब्दों को।

[पढ़ती है।]

क्या चरवाहे[1] के प्रति तुम ऐसे निष्ठुर देवता हो गये हो।
कि तरुणी का हृदय दह्यमान होगा ?
क्या स्त्री ऐसा कर सकती है ?

सिल्वियस : क्या यह ऐसा ही है ?

रोज़ालिन्ड : (पढ़ती है।)
देवता दूर क्यों है ?
तुम स्त्री के हृदय से लड़ते हो ?
कभी ऐसा सुना था तुमने ?
पुरुष के नयन जब स्नेह करते हों, तब क्या वे
प्रतिहिंसा से भर सकते हैं ? मुझे पशु समझ सकते हैं ?
यदि तुम्हारे उज्ज्वल नयन की घृणा मुझमें प्रीति
जगाने की शक्ति रखती है, तो उनमें क्या जादू
होगा, जब वे प्रेम से मुझे देखेंगी ?
तुमने मुझे डाँटा, मैंने प्रेम किया,
तुम प्रार्थना करोगे तो न जाने क्या होगा।
जो मेरी प्रेम-कथा तुम तक ले जाता है,
वह मेरे हृदय के प्रेम को क्या जाने ?
अपना विचार उसे बताओ कि तुम्हारा यौवन
और तुम्हारी दया मुझे स्वीकार करेगी या नहीं ?
मैं जो कर सकती हूँ वह तुम्हें प्रिय होगा ?
अन्यथा कह दो उससे कि तुम्हें स्वीकार नहीं,
तब मैं सोचूँगी कि अब कैसे मरूँ !

सिल्वियस : क्या तुम इसे बुरा कहना समझते हो ?

---

१. चरवाहा अंगरेज़ी काव्य में ग्रीक काव्य की परंपरा की भाँति रोमान्स का द्योतक है। उसका जीवन आनंदमय, चिंताहीन समझा जाता है।

सीलिया : हाय ! ग़रीब चरवाहे।

रोज़ालिन्ड : क्या तुम्हें उससे सहानुभूति है ? नहीं, वह सहानुभूति के योग्य नहीं है। क्या तुम ऐसी स्त्री से प्रेम करोगे ? क्या, अपने आपको एक ऐसा वाद्ययन्त्र बनाने के लिये जिस पर वह झूंठे गीत बजाती रहे ? यह सहन नहीं किया जा सकता। अच्छा, तो अब अपने रास्ते उसी के पास जाओ क्योंकि मैं देखता हूँ कि प्रेम ने तुम्हें एक पालतू साँप बना दिया है और यह उससे कह भी देना कि यदि वह मुझसे प्रेम करती है तो मैं उसे तुमसे प्रेम करने की आज्ञा देता हूँ। यदि वह इसका पालन न करेगी तो मैं कभी भी उसे अपनी नहीं बनाऊँगा जब तक कि तुम उसके लिये प्रार्थना न करोगे। यदि तुम सच्चे प्रेमी हो तो अब आगे एक भी शब्द न बोलना क्योंकि यहाँ कुछ व्यक्ति और आ रहे हैं।

[**सिल्वियस का प्रस्थान**]

[**ओलिवर का प्रवेश**]

ओलिवर : ओ सुन्दर प्राणियो ! मैं आपको अभिवादन करता हूँ और यह प्रार्थना करता हूँ कि क्या आप जानते हैं कि इस वन के किनारे जैतून के वृक्षों से घिरा हुआ वह एक भेड़ों का बाड़ा कहाँ है ?

सीलिया : इस स्थान के पश्चिम में, नीचे पास की घाटी में। यदि तुम इस बहते हुए झरने के पास वाले इन देवदार के वृक्षों को अपनी दायीं तरफ छोड़ दोगे तो ठीक उसी स्थान पर जा पहुँचोगे। लेकिन इस समय तो वह घर सूना है। कोई भी अन्दर नहीं है।

ओलिवर : यदि दृष्टि को वाणी से लाभ प्राप्त हो सकता है तो मुझे पूरी तरह तुमसे तुम्हारा परिचय प्राप्त करना चाहिये। ऐसे वस्त्र और यह उम्र। युवक एक स्त्री की तरह ही सुन्दर है और इस तरह से व्यवहार करता है जैसे मानो यह इस स्त्री की बड़ी बहिन हो और यह स्त्री छोटी है और अपने भाई से कुछ भूरे वर्ण की है। जिसके लिये मैंने पूछा था क्या तुम्हीं वह घर की स्वामिनी नहीं हो ?

सीलिया : तुम्हारे पूछने पर यदि हम कहें कि हम ही हैं तो कोई अत्यधिक प्रशंसा की बात नहीं होगी।

ओलिवर : ऑरलेन्डो तुम दोनों को अपना अभिनन्दन भेजता है और उस नवयुवक को जिसे वह रोज़ालिन्ड कहकर पुकारता है, यह रक्त से भींगा रूमाल भेजता है। क्या तुम वह हो ?

रोजा० : मैं ही हूँ लेकिन इससे हमें क्या समझना चाहिये ?

ओलिवर : यदि तुम मेरे बारे में यह जान पाते कि मैं कौन हूँ और कैसे, क्यों, और कहाँ यह रूमाल रक्त से भींगा है तो तुम जान जाते कि इसमें मेरे लिये बहुत कुछ शरम की बात है।

सीलिया : मैं प्रार्थना करती हूँ कि हमें यह बताइये।

ओलिवर : जब वह नवयुवक ऑरलेन्डो तुम्हें एक घंटे में वापिस आने का वचन देकर तुमसे बिछुड़ा था और इस वन के बीच कल्पना के मधुर और कटु फलों का रसास्वादन करता हुआ जा रहा था तो ओह, क्या घटना घटी! उसने अपनी दृष्टि इधर-उधर घुमाई और देखो, क्या वस्तु उसके सामने दिखाई दी ? एक देवदार के वृक्ष के नीचे, जो इतना पुराना था कि उसकी डालियों पर काई छा गई थी और चोटी इतने अधिक पुरानेपन और सूखा से पूरी तरह फूल-पत्तियों के बिना नंगी हो गई थी, एक आपत्तियों में

खोया दुःखी मनुष्य अपनी पीठ के वल सोया पड़ा हुआ था। उस-की दाढ़ी और सिर के वाल वहुत वढ़े हुए थे। उसकी गरदन के चारों ओर एक हरे रंग का चमकदार साँप लिपटा हुआ था जो फुसकार मारता हुआ ठीक उसके ओठों तक आ पहुँचा था लेकिन यकायक ऑरलेन्डो को देखकर वह छूट गया और रेंगता हुआ एक झाड़ी में घुस गया। उसी झाड़ी के नीचे एक भूखी शेरनी अपना सिर धरती में रखकर एक विल्ली की तरह यह प्रतीक्षा करती हुई पड़ी थी कि कव यह सोया हुआ आदमी फिर से जागे क्योंकि यह शेर की एक राजसी प्रकृति होती है कि जो वस्तु मृत जैसी मालूम हो उसपर वह कभी शिकार नहीं करता। यह देखकर ऑरलेन्डो उस मनुष्य के पास पहुँचा और उसने पाया कि वह उसका वड़ा भाई ही था।

सीलिया : ओह, मैंने उसे उसी भाई के वारे में वातें करते सुना है और वह तो उसे सम्पूर्ण मनुष्य-जाति में सवसे अधिक अस्वाभाविक प्रकृति का वताता था।

ओलिवर : उसने ठीक ही कहा क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह ऐसा अस्वाभाविक ही था।

रोज़ा० : लेकिन ऑरलेन्डो की वात वताओ। क्या उसने उस मनुष्य को उसी भूखी शेरनी को खाने के लिये वहाँ छोड़ दिया ?

ओलिवर : उसने दो वार अपनी पीठ मोड़ी और ऐसा ही करना चाहा लेकिन ईर्ष्या से अधिक सहिष्णु दया ने और वदले के लिये आये उचित अवसर से अधिक उसके भ्रातृत्व-प्रेम ने उसे उस शेरनी से लड़ने के लिये वाध्य कर दिया जिसको कि उसने मार गिराया। इसी वीच यह कोलाहल-सा सुनकर मेरी नींद खुल गई।

सीलिया : क्या तुम ही उसके भाई हो ?

रोज़ा० : क्या तुम्हें ही उसने बचाया था ?

सीलिया : क्या तुमने ही उसे मरवाने का प्राय: षड़यन्त्र रचा था ?

ओलिवर : मैं ही था लेकिन मैं नहीं भी था। मुझे यह कहने में तनिक भी लज्जा नहीं है कि जो कुछ मैं था और जो बदलकर मैं हो गया हूँ इन दोनों स्थितियों की तुलना मुझे अत्यंत मधुर लगती है।

रोज़ा० : लेकिन उस रक्त से भींगे रूमाल का क्या तात्पर्य है ?

ओलिवर : धीरे-धीरे हमने, उस समय से जब कि हम एक दूसरे से अलग हुए थे, आजतक का अपना-अपना जीवन-वृत्तान्त रोते-रोते एक-दूसरे से कहा और यह कि कैसे मैं इस वन तक आया। संक्षेप में, वह मुझे उस उदार ड्यूक के पास ले गया जिसने मुझे भोजन और वस्त्र दिये और मुझे मेरे भाई के प्रेम के समर्पण कर दिया। वह मुझे तुरन्त ही अपनी गुफ़ा में ले गया और वहाँ उसने अपने वस्त्र उतारे तो यहाँ उसके हाथ से कुछ मांस शेरनी ने नोंच लिया था और तभी से उससे रक्त बह रहा था। आते ही वह मूर्च्छित हो गया और उसी अवस्था में रोज़ालिन्ड का नाम पुकारने लगा। संक्षेप में ही मैं कहता हूँ कि तब मैंने उसे स्वाभाविक स्थिति में लाया और उसके घाव पर पट्टी बाँध दी। कुछ समय पश्चात् ही हृदय में अत्यंत व्याकुल होते हुए उसने मुझे तुमसे अपरिचित होते हुए भी, अपनी यह कहानी कहने भेजा जिससे तुम उसको भंग किये हुए वचन के लिये क्षमा कर दो और यह रक्त से भींगा रूमाल उसने उस युवक चरवाहे को देने के लिये कहा है जिसे वह एक खेल में अपनी रोज़ालिन्ड कह कर पुकारता था।

[रोजालिन्ड मूर्च्छित हो जाती है।]

सीलिया : हाय, अब कैसे होगा। गैनीमीड़! ओ प्यारे गैनीमीड़।

ओलिवर : रक्त को देखकर अधिकांश को मूर्च्छा आ जाती है।

सीलिया : इसमें इससे कुछ अधिक कारण है। ओ भाई गैनीमीड़।

ओलिवर : देखो, वह ठीक हो रहा है।

रोजा० : अच्छा होता जो मैं अपने घर पर होता।

सीलिया : हम तुम्हें उधर ले चलते हैं। क्या तुम कृपा करके इसे अपने हाथ का सहारा दोगे ?

ओलिवर : साहस रखो नवयुवक, तुम एक पुरुष होकर पुरुष का-सा हृदय नहीं रखते हो।

रोजा० : ठीक ही है, मैं इसे स्वीकार करता हूँ। आह, कोई भी यह समझेगा कि मैंने कितनी अच्छी तरह किसी का अनुकरण किया? मेरी प्रार्थना है कि अपने भाई से कहना कि मैंने कैसी अच्छी तरह अपने आप को दूसरे रूप में प्रगट किया था। हाँ, समझे ?

ओलिवर : यह किसी का अनुकरण नहीं है। तुम्हारे मुख से यह स्पष्ट झलक रहा है कि यह तो तुम्हारा भावावेश था।

रोजा० : मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि यह अनुकरण मात्र था।

ओलिवर : अच्छा तो साहस रखकर एक पुरुष के-से व्यवहार का अनुकरण ही कर लो।

रोजा० : वही तो मैं कर रहा हूँ। सच, मुझे तो वास्तव में एक स्त्री ही होना चाहिये था।

सीलिया : आओ, तुम कुछ अधिक पीले दीख रहे हो। कृपया घर की ओर चलो। अच्छा श्रीमान्, हमारे साथ चलें।

ओलिवर : अवश्य चलूंगा क्योंकि मुझे वापिस उत्तर भी तो ले जाना

है कि ओ रोज़ालिन्ड, तुमने किस तरह मेरे भाई को क्षमा कर दिया।

रोज़ा० : मैं कोई उपाय सोचूंगा लेकिन यह मेरी प्रार्थना है कि तुम उससे जाकर कहो कि यह पुरुष-वेश में मेरा अनुकरणमात्र ही था। क्या तुम चलोगे ?

[प्रस्थान]

पांचवां अंक

दृश्य १

[वन-प्रान्त]

[टचस्टोन तथा औड्री का प्रवेश]

टचस्टोन : हम एक समय निश्चित कर लेंगे। धैर्य्य, मेरी नम्र औड्री।

औड्री : लेकिन विश्वास करो कि उस वृद्ध पुरुष के सब कुछ कहने के उपरान्त भी पादरी बहुत अच्छा था।

टचस्टोन : वह सबसे अधिक ढीठ सर ऑलीवर, सबसे अधिक नीच मारटेक्स्ट लेकिन औड्री, यहाँ इस वन में एक ऐसा नवयुवक है जो तुम पर अपना अधिकार बताता है।

औड्री : हाँ-हाँ, मैं जानती हूँ कि वह कौन है। इस संसार में उसका मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं है।

टचस्टोन : किसी मूर्ख से मिलना तो मुझे ऐसा अच्छा लगता है जैसे कोई प्रीतिभोज। सच कहता हूँ, हमारी जैसी अच्छी सूझ-बूझ है उसी तरह कितनी ही बातों का उत्तर भी हमें देना होता है। ऐसे अवसर के लिये तो हम लालायित रहते हैं, और किसी भी तरह अपने आपको नहीं रोक सकते।

[विलियम का प्रवेश]

विलियम : नमस्कार औड्री।

औड्री : ईश्वर को स्मरण करके नमस्कार करती हूँ विलियम !

विलियम : और श्रीमान् जी आपको भी नमस्कार करता हूँ।

टचस्टोन : नमस्कार मेरे अच्छे मित्र ! अपना सिर ढँको। कृपया

अपना सिर ढाँक लीजिये। क्यों मित्र, आपकी उम्र क्या है ?

विलियम : पच्चीस वर्ष श्रीमान् जी।

टचस्टोन : पकी हुई उम्र है। क्या तुम्हारा नाम विलियम है ?

विलियम : जी हाँ, विलियम।

टचस्टोन : सुन्दर नाम है। क्या इसी वन में पैदा हुए हो ?

विलियम : जी हाँ, इसके लिये ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ।

टचस्टोन : 'ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ।' अच्छा उत्तर है। क्या धनी हो ?

विलियम : जी, ऐसा ही साधारण हूँ।

टचस्टोन : 'साधारण' अच्छा है, वहुत अच्छा, वहुत ही अच्छा, वहुत-वहुत अच्छा फिर भी यह नहीं है। यह तो केवल साधारण है। क्या तुम वुद्धिमान हो ?

विलियम : जी हाँ, अच्छी-खासी सूझ-बूझ है।

टचस्टोन : यह तुम ठीक कहते हो। मुझे अभी एक कहावत याद आ रही है कि मूर्ख तो यह समझता है कि वह वुद्धिमान है और वुद्धिमान यह समझता है कि वह मूर्ख है। ईसाई धर्म से अन्य मत वाला दार्शनिक जव अंगूर खाने की इच्छा करता था तभी अपना मुँह खोल देता था और उसे अपने मुँह में रख लेता था। इसका अर्थ यह है कि अंगूर तो खाने के लिये वने हैं और मुँह खोलने के लिये वना है। क्या तुम इस स्त्री से प्रेम करते हो ?

विलियम : जी हाँ।

टचस्टोन : मुझे तुम्हारा हाथ दो जी। हम मित्र हो जायँ। क्या तुम विद्वान हो ?

विलियम : जी नहीं।

टचस्टोन : तव यह मुझसे सीख लो कि लेने का अर्थ है लेना क्योंकि

भाषण तथा वार्त्तालाप की कला में यह एक चिन्ह है कि कोई भी पेय वस्तु जब गिलास से प्याले में उँडेली जाती है तो एक को भर कर दूसरे को अवश्य खाली करती है क्योंकि तुम सब लेखक यह मानते हो कि 'इप्से' का अर्थ है 'वह'। अब तुम 'इप्से' नहीं हो क्योंकि मैं वह हूँ।

विलियम : कौन-सा 'वह' श्रीमान् जी।

टचस्टोन : वही, श्रीमान् जो, जिसको इस स्त्री से विवाह करना है। इसलिये ओ मूर्ख त्याग दो[1] जिसको गँवारू भाषा में छोड़ दो[2] कहते हैं। क्या छोड़ दो? सहवास[3] जिसको गँवारू भाषा में संग-साथ[4] कहते हैं; किसका? नारी-जाति[5] का जिसको साधारणतया स्त्री[6] कहते हैं। यह सब मिला कर हुआ नारी-जाति का सहवास त्याग दो नहीं तो मूर्ख, तुम नष्ट हो जाओगे या तुम्हारे अच्छी तरह समझने के लिये, मर जाओगे या नई सूझ के साथ कहूँ तो मैं तुम्हें मारता हूँ, अपने से दूर करता हूँ। अपने जीवन को मृत्यु में बदल डालो। अपनी स्वतंत्रता को परतंत्रता में। मैं तो तुम्हारे साथ अब विष से व्यवहार करूँगा या मोटी छड़ से, या फौलाद से। मैं षड़यन्त्र में तुम्हारे साथ काम करूँगा। कूटनीति में मैं तुमसे आगे रहूँगा। मैं डेढ़ सौ ढंग से तुम्हें मार दूंगा इसलिये भयभीत होकर काँपो और चले जाओ।

औड्री : मेरे अच्छे विलियम! करो।

विलियम : ईश्वर आपको प्रसन्नता प्रदान करे श्रीमान् जी।

[प्रस्थान]

[कोरिन का प्रवेश]

कोरिन : हमारे स्वामी और स्वामिनी तुम्हें खोज रहे हैं, इसलिये

---

1. abandon 2. leave 3. society 4. company 5. female 6. woman.

आओ, शीघ्र चलो।

टचस्टोन : चलो औड्री! चलो औड्री! मैं पीछे चलता हूँ। मैं पीछे चलता हूँ।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[वन-प्रान्त]

[ऑरलैन्डो तथा ओलिवर का प्रवेश]

ऑरलेन्डो : क्या यह सम्भव है कि इतना कम परिचय होते हुए भी तुम उसको चाहते हो ? कि केवल एक दृष्टिमात्र देखने से ही तुम प्रेम करते हो ? और प्रेम करते हुए तुरन्त ही उसे प्राप्त करना चाहते हो ? और तुम्हारी इस प्रार्थना को वह स्वीकार कर लेगी ? और क्या तुम उस समय तक अपने आपको सँभाले रहोगे जब तक उसे प्राप्त न कर लोगे ?

ओलिवर : इसकी अनिश्चितता, उसकी निर्धनता, सूक्ष्म परिचय, मेरे यकायक उसे प्राप्त कर लेने तथा उसकी यकायक मेरी प्रार्थना पर स्वीकृति पर कोई प्रश्न न करो लेकिन मेरे साथ यह कहो कि मैं ऐलीना से प्रेम कर करता हूँ और उसके साथ कहो कि वह मुझे प्रेम करती है। हम दोनों की बात को स्वीकार कर लो जिससे हम एक दूसरे के साथ प्रेम का आनन्द ले सकें क्योंकि मेरे स्वर्गीय पिता का घर और सारी भूमि से आई कर की सम्पत्ति जो सर रोलेन्ड की वसीयत में है, वह मैं तुम्हें देता हूँ । और यहाँ मैं एक चरवाहे की तरह जीऊँगा और मरूँगा।

ऑरलेन्डो : मैं तुम्हारी बात को स्वीकार करता हूँ । चलो तुम्हारा विवाह कल ही सम्पन्न हो। इधर मैं ड्यूक को तथा उसके सभी अनुचरों को निमन्त्रित कर दूंगा । तुम जाओ और ऐलीना को

तैय्यार कर लो क्योंकि वह देखो मेरी रोज़ालिन्ड यहाँ आ रही है।

[रोजालिन्ड का प्रवेश]

रोजा : भाई, ईश्वर तुम्हारी रक्षा करें।

ओलिवर : और तुम्हारी भी मेरी प्यारी वहिन।

रोजा० : ओ मेरे प्यारे ऑरलेन्डो, तुम्हारे हृदय को एक पट्टी से बँधा देख कर मुझे कितना दुःख हो रहा है !

ऑरलेन्डो : यह तो मेरा हाथ है ।

रोजा० : मैंने सोचा था कि शेर के पंजों ने तुम्हारे हृदय को घायल कर दिया है।

ऑरलेन्डो : घायल तो यह है लेकिन एक स्त्री की आँखों से।

रोजा० : क्या तुम्हारे भाई ने तुमसे कहा था कि जब उसने मुझे तुम्हारा रूमाल दिखाया तब मैंने किस तरह बनावटी मूर्च्छा का ढोंग किया था ?

ऑरलेन्डो : हाँ, उससे भी अधिक आश्चर्य्यप्रद बातें।

रोजा० : ओह, अब तुम्हारा तात्पर्य्य समझा। नहीं, यह सत्य है। सिवाय या तो दो मेंढ़ों की लड़ाई के या 'सीज़र' के 'थ्रसो' की तरह चलते हुए यह कहने के कि, 'मैं आया, मैंने देखा, और मैंने जीत लिया।' कभी भी ऐसी बात नहीं हुई क्योंकि तुम्हारा भाई और मेरी वहिन ज्योंही मिले वे एक दूसरे की ओर देखने लग गये और ज्योंही वे एक दूसरे से प्रेम करने लगे तभी से निश्वास भरने लगे। ज्योंही निश्वास भरने लगे तभी उन्होंने एक दूसरे से इसका कारण पूछा। ज्योंही उन्हें इसका कारण मिल गया त्योंही उन्होंने इसका उपचार ढूंढ़ लिया और इस तरह सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ते हुए वे अपने विवाह की सीढ़ी तक पहुँच गये हैं। उसे भी वे तुरन्त चढ़ लेंगे। वे इस समय प्रेम के आवेश में हैं और वे एक-

दूसरे के साथ विवाह अवश्य करेंगे। लोहे की मोटी-मोटी छड़ें भी उन्हें एक-दूसरे से अलग नहीं रख सकतीं।

ऑरलेन्डो : तो कल उनका विवाह कर दिया जायेगा। मैं ड्यूक को इस अवसर पर निमन्त्रित कर लूंगा। लेकिन ओह! किसी दूसरे की आँखों में होकर प्रसन्नता को देखना कितनी कटु और दुःख की वात है। कल तो मेरे हृदय का भारीपन और भी चोटी तक पहुँच जायेगा। जव मेरा भाई अपनी इच्छित वस्तु पाकर प्रसन्न होगा तो मैं इसको कितना सोच पाऊँगा!

रोज़ा० : क्यों, कल मैं तुम्हारे साथ रोज़ालिन्ड के रूप में व्यवहार क्यों नहीं कर सकती?

ऑरलेन्डो : अव मैं अधिक कल्पना के वल जीवित नहीं रह सकता।

रोज़ा० : मैं अव वेकार की वातों से तुम्हें परेशान नहीं करूँगा। तव मेरे वारे में जान लो। किसी कारण से ही मैं अव कहता हूँ। मैं जानता हूँ कि तुम अच्छी वुद्धि वाले भद्र पुरुष हो। मैं इसलिये यह नहीं कहता हूँ कि तुम मेरी वुद्धिमत्ता और ज्ञान के वारे में कोई अच्छी धारणा वना लो। जहाँ तक तुम्हारे वारे में मैं कहता हूँ तो मैं जानता हूँ कि तुम वुद्धिमान हो। मैं कोई अधिक सम्मान पाने के लिये भी परिश्रम नहीं करता हूँ, यदि करता भी हूँ तो केवल तुम्हारा थोड़ा-सा विश्वास प्राप्त करने के लिये जिससे मुझे कोई लाभ नहीं होगा वल्कि तुम्हें ही उससे लाभ प्राप्त होगा। तव यदि तुम चाहो तो यह विश्वास कर लो कि मैं विचित्र वातें कर सकता हूँ। जव मैं तीन वर्ष का ही था तभी मैंने एक ऐसे जादूगर से वातें की थीं जो अपनी कला में पारंगत था और किसी भी तरह उपेक्षा के योग्य नहीं था। जैसे तुम्हारे हाव-भाव प्रवल रूप में व्यक्त कर रहे हैं तो यदि तुम रोज़ालिन्ड को उसी तरह

अपने हृदय से प्रेम करते हो तो जब तुम्हारा भाई ऐलीना से विवाह करेगा उसी समय तुम रोज़ालिन्ड से विवाह करोगे। मैं उसकी भाग्य की कठिनाइयों को जानता हूँ और यदि तुम्हें यह कुछ असुविधाजनक न मालूम हो तो मेरे लिये यह असम्भव नहीं है कि मैं कल ही उसे तुम्हारी आँखों के सामने विना किसी ख़तरे के अपने सही रूप में उपस्थित कर दूं।

ऑरलेन्डो : क्या तुम गम्भीरतापूर्वक यह बातें कह रहे हो ?

रोज़ा० : मैं अपने जीवन की, जिसको मैं एक जादूगर होते हुए भी अत्यधिक प्रेम करता हूँ, सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मैं ऐसा कर दूंगा। इसलिये अच्छे से अच्छे वस्त्र पहन लो। अपने मित्रों को निमन्त्रित कर लो क्योंकि यदि तुम्हारा विवाह कल होना है तो तुम अवश्य करोगे और यदि करोगे भी तो रोज़ालिन्ड से।

[**सिल्वियस तथा फीवी का प्रवेश**]

वह देखो, एक तो मुझसे प्रेम करने वाली और एक उससे प्रेम करने वाला दोनों यहाँ आ रहे हैं।

फीबी : नवयुवक, जो पत्र मैंने तुम्हें लिखा था, तुमने उसे दिखाकर मेरे साथ अत्यंत असहिष्णुता का व्यवहार किया है।

रोज़ा० : यदि मैंने दिखाया है तो इसकी मुझे चिन्ता नहीं। तुम्हारे प्रति घृणापूर्ण तथा असहिष्णु दीखना तो मेरा उद्देश्य ही था। एक वफ़ादार चरवाहा तुम्हारे पीछे-पीछे फिरता है, उसकी तरफ़ देखो और उससे प्रेम करो। वह तुम्हारी पूजा करता है।

फीवी : ओ अच्छे चरवाहे, इस नवयुवक को बताओ कि प्रेम करना क्या होता है।

सिल्वियस : यह पूरी तरह आँसुओं और आहों से बना होता है। और वही मैं फीवी के लिये हूँ।

फीबी : और मैं गैनीमीड़ के लिये ।

ऑरलेन्डो : और मैं रोज़ालिन्ड के लिये ।

रोज़ा० : और मैं किसी भी स्त्री के लिये नहीं ।

सिल्वियस : यह पूरी तरह भक्ति और सेवा से बना होता है। और वैसे ही मैं फीबी के लिये हूँ ।

फीबी : और मैं गैनीमीड़ के लिये ।

ऑरलेन्डो : मैं रोज़ालिन्ड के लिये ।

रोज़ा० : मैं किसी स्त्री के लिये नहीं ।

सिल्वियस : यह पूरी तरह हास्यास्पद कल्पना से बना होता है । इसके अतिरिक्त प्रबल भावनाओं से, अभिलाषाओं से, भक्ति, कर्त्तव्य, और आज्ञा-पालन से, पूरी तरह नम्रता से, धैर्य्य और अधैर्य्य से, पूरी तरह पवित्रता से, परीक्षा तथा प्रेयसी की बात को स्वीकार करने की तत्परता से बना हुआ है और वैसे ही मैं फीबी के लिये हूँ ।

फीबी : और वैसे ही मैं गैनीमीड़ के लिये ।

ऑरलेन्डो : और वैसे ही मैं रोज़ालिन्ड के लिये ।

रोज़ा० : और वैसे मैं किसी स्त्री के लिये नहीं ।

फीबी : यदि ऐसा ही है तो तुम मुझे तुम्हें प्रेम करने की दोषी क्यों ठहराते हो ?

सिल्वियस : यदि ऐसा ही है तो तुम मुझे तुम्हें प्रेम करने का दोषी क्यों ठहराते हो ?

ऑरलेन्डो : यदि ऐसा ही है तो तुम मुझे तुम्हें प्रेम करने का दोषी क्यों ठहराते हो ?

रोज़ा० : तुम भी यह क्यों कहते हो कि, 'तुम मुझे तुम्हें प्रेम करने का दोषी क्यों ठहराते हो ?'

ऑरलेन्डो : उसके लिये जो न यहाँ पर है और न यह सुन सकती है।

रोज़ा० : ओह, मैं प्रार्थना करता हूँ, अब अधिक नहीं। यह तो ठीक 'आइरिश'-भेड़ियों का चन्द्रमा की ओर पुकारने जैसा है। (सिल्वियस से) यदि मैं कर सका तो तुम्हारी अवश्य सहायता करूँगा। (फीबी से) यदि मैं कर सका तो तुमसे अवश्य प्रेम करूँगा। कल सभी साथ-साथ मुझसे मिलना। (फीबी से) यदि मैं कभी स्त्री से विवाह करूँगा तो तुमसे करूँगा और कल हमारा विवाह होगा। (ऑरलेन्डो से) यदि मैंने किसी मनुष्य को कभी भी सन्तुष्ट किया है तो मैं तुम्हारी इच्छा पूर्ण करूँगा और कल तुम्हारा विवाह होगा। (सिल्वियस से) यदि जो कुछ तुम चाहते हो वह तुम्हें संतुष्ट कर सकता है तो मैं तुम्हें भी सन्तुष्ट करूँगा और कल तुम्हारा विवाह हो जायगा। (ऑरलेन्डो से) क्योंकि तुम रोज़ालिन्ड से प्रेम करते हो तो लो मिलो। (सिल्वियस से) क्योंकि तुम फीबी से प्रेम करते हो तो लो मिलो और चूंकि मेरे पास कोई स्त्री नहीं है इसलिये मैं मिलूंगा ! अच्छा, अलविदा। तुम्हें मैंने अपनी आज्ञायें निर्देशित कर दी हैं।

सिल्वियस : यदि मैं जीवित रहा तो मैं असफल नहीं हूँगा।

फीबी : न मैं।

ऑरलेन्डो : न मैं।

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[टचस्टोन तथा औड्री का प्रवेश]

टचस्टोन : कल ख़ुशी का दिन है औड्री। कल हमारा विवाह होगा।

औड्री : मैं अपने पूरे हृदय से यह चाहती हूँ और मैं आशा करती हूँ कि

विवाह की इच्छा करना कोई अनुचित इच्छा नहीं है। लो, निर्वासित ड्यूक के दो सेवक यहाँ आ रहे हैं।

[दोनों सेवकों का प्रवेश]

पहला सेवक : ओ सच्चे भद्रपुरुष, खूब मिले।

टचस्टोन : सच, अच्छे मिले, आओ, बैठो-बैठो और कोई एक गाना !

दूसरा सेवक : हम तो तुम्हारे लिये ही हैं। अच्छा, बीच में बैठ जाओ।

पहला सेवक : अच्छा क्या बिना खखारते, थूकते और यह कहते हुए कि हमारी आवाज़ खराव हो रही है, हम गाना शुरू कर दें ? ये सव वुरी आवाज़ की भूमिका में कहे जाते हैं।

दूसरा सेवक : निस्सन्देह ! तो आओ दोनों एक स्वर मिला कर इस तरह गायें जैसे दो 'जिप्सी' एक घोड़े पर वैठे हों।

—गीत—

[गीत का मूल अर्थ :
एक प्रेमी और उसकी वह प्रेमिका
वसंत के आनंददायक समय में
हरे-हरे खेतों में प्रसन्नता से
विचर रहे थे···
जव चिड़ियां गा रही थीं···
प्रेमियों को वसंत भाता है
जव वे राई के खेतों में चलते हैं···
गांव के लोग यहाँ वसंत में
लेटते हैं······
वे मीठे स्वर से गाते हैं···
वसंत में जीवन एक फूल सा
होता है······

वर्त्तमान का उपयोग करो, उसे
व्यतीत मत हो जाने दो···
वसंत में प्रेम अपने पूर्ण विकास
को प्राप्त करता है···]

—गीत—

अरे विचरते हरे-भरे खेतों की सुन्दर छाँह में
मधु में प्रेमी अपनी-अपनी प्राणप्रिया के साथ में,
जब खग कलरव करते कुलकुल,
आता है वसंत यह चंचल,
फूले खेतों में अति विह्वल—
मद से भूले दोनों प्रेमी हँसते हैं हर बात में।
यहाँ लेटती हैं छाया में
ग्रामीणों की टोली गाती,
जीवन एक फूल सा खिलता,
वर्त्तमान को लो हे साथी !
इस वसंत में प्रेम फूलता है मन के विश्वास में।

टचस्टोन : सच, नवयुवको, यद्यपि इस छोटे-से गीत में कोई अधिक विषय-वस्तु नहीं है फिर भी इसकी सरगम ऐसी है कि स्वरबद्ध तो हो नहीं सकती।

पहला सेवक : तुम्हारे साथ तो धोखा हुआ है श्रीमान् जी, हमने तो बराबर लय रखी थी और बिलकुल समय से इधर-उधर नहीं हुए थे।

टचस्टोन : निस्सन्देह पर मैं तो इसे एक मूर्खता भरे हुए गीत को सुनने में समय नष्ट करना ही मानता हूँ। ईश्वर तुम्हारी सहायता करे और तुम्हारी आवाज़ को ठीक करे। आओ औड्री।

[प्रस्थान]

दृश्य ४

[वन-प्रान्त]

[ज्येष्ठ ड्यूक, अमीन्स, जेक्स, ऑरलेन्डो, ओलिवर तथा सीलिया का प्रवेश]

ज्येष्ठ ड्यूक : क्या तुम्हें विश्वास है ऑरलेन्डो कि वह युवक जो कुछ वायदा कर गया है उसे पूरा कर सकेगा ?

ऑरलेन्डो : कभी-कभी तो मैं अवश्य विश्वास करता हूँ और कभी ऐसे नहीं भी जैसे वे लोग जो किसी वस्तु की आशा करते समय डरते हैं और यह जानते भी हैं कि वह डरते हैं।

[रोज़ालिन्ड, सिल्वियस तथा फीबी का प्रवेश]

रोज़ा० : जब तुम हमारे बीच समझौते की बात उठाओ तो एक बार और धीरज रखो। तुम कहते हो कि यदि तुम्हारी रोज़ालिन्ड को मैं ले आऊँ तो तुम उसे यहाँ ऑरलेन्डो के समर्पित कर दोगे ?

ज्येष्ठ ड्यूक : मैं यही चाहता हूँ। काश ! उसके साथ देने के लिए मेरे पास साम्राज्य होते।

रोज़ा० : और तुम कहते हो कि जब मैं उसको ले आऊँगा तो तुम उसे अपना लोगे ?

ऑरलेन्डो : मैं यही चाहता हूँ। काश ! मैं सभी साम्राज्यों का सम्राट् होता।

रोज़ा० : तुम कहते हो कि यदि मैं इच्छुक हूँ तो तुम मुझसे विवाह करोगी ?

फीबी : वह मैं अवश्य करूँगी चाहे मैं उसके थोड़ी देर बाद ही मर जाऊँ।

रोज़ा० : लेकिन यदि तुम मुझसे विवाह करने को मना करो तो तुम अपने आपको इस वफ़ादार चरवाहे को समर्पित कर दोगी ?

फीबी : ऐसा ही तो आपस का समझौता है।

रोज़ा० : तुम कहते हो कि यदि वह चाहेगी तो तुम फीवी को अपनी बनाओगे ?

सिल्वियस : यद्यपि उसको अपनी बनाना और मृत्यु दोनों एक ही वस्तु हैं।

रोज़ा० : मैंने सारी बात को तय करने का वायदा किया है। ओ ड्यूक ! तुम अपनी पुत्री को देने के वचन का पालन करो। ऑरलेन्डो ! तुम उसकी पुत्री को प्राप्त करने का अपना वचन पूरा करो। फीवी ! तुम मुझसे विवाह करने का वचन पूरा करो और यदि मुझसे मना करती हो तो इस चरवाहे से विवाह करो। सिल्वियस ! यदि वह मुझसे मना करे तो उसके साथ विवाह करने का तुम अपना वचन पूरा करो। अब मैं इन सब सन्देहात्मक बातों को तय करता हूँ।

[रोज़ालिन्ड तथा सीलिया का प्रस्थान]

ज्येष्ठ ड्यूक : मैं इस चरवाहे नवयुवक में मेरी पुत्री के-से हूबहू कुछ चिन्ह पाता हूँ।

ऑरलेन्डो : ओ मेरे स्वामी ! जब पहले पहल मैंने उसे देखा तो यही सोचा था कि वह तुम्हारी पुत्री का भाई होगा लेकिन मेरे अच्छे स्वामी ! यह युवक तो इस वन में ही पैदा हुआ है और इसके चाचा ने ही इसे यहाँ अनेक जादू-टोनों की शिक्षा दी है। वह अपने चाचा को बहुत बड़ा जादूगर बताता है और कहता है कि वह कहीं इसी वन में अदृश्य है।

[टचस्टोन तथा ऑड्री का प्रवेश]

जेक्स : फिर तो निश्चित ही एक दूसरी प्रलय की-सी बाढ़ इधर आ रही है और ये सभी दम्पत्ति 'नूह' की उसी नाव की तरफ़ आ रहे हैं। वह देखो, अत्यन्त विचित्र प्रकार के वनपशुओं का एक

जोड़ा आ रहा है जिनको सभी भाषाओं में मूर्ख कहा जाता है।

टचस्टोन : आप सभी को अभिवादन और अभिनन्दन।

जेक्स : मेरे अच्छे स्वामी, उसे बैठने के लिये कहिये। यह वही अनेक रंग से रंगे मस्तिष्क वाले भद्र पुरुष हैं जो प्रायः मुझे इस वन में मिला करते हैं। वे शपथ खा कर कहते हैं कि वे राजदरबारी भी रह चुके हैं।

टचस्टोन : यदि किसी को इसमें सन्देह है तो वह कहे जिससे मैं अपनी सफ़ाई दूं। मैंने अत्यंत गम्भीर प्रकृति का नृत्य भी किया है। मैंने एक स्त्री की चापलूसी की है। अपने मित्र के साथ कूटनीति का व्यवहार मैंने किया है और शत्रुओं से सरल व्यवहार किया है। मैंने तीन दर्ज़ियों को नष्ट कर दिया। मैंने चार झगड़े किये और एक में सचमुच लड़ाई लड़ी।

जेक्स : और वह कैसे हुआ ?

टचस्टोन : विश्वास करो, हम मिले और हमने पाया कि झगड़ा सातवे कारण पर हुआ।

जेक्स : सातवाँ कारण कैसे ? मेरे अच्छे स्वामी ! इस मनुष्य से प्रेम करो।

ज्येष्ठ ड्यूक : मैं उसको वहुत चाहता हूँ।

टचस्टोन : श्रीमान् आपको ईश्वर प्रसन्न रखे। मेरी भी आपके प्रति यही शुभ कामनाएँ हैं। मैं इन विवाह के इच्छुक वचे हुए ग्रमीणों के वीच शपथ लेता हूँ और उसे इसी तरह तोड़ता हूँ जैसे विवाह से एक दूसरे का सम्वन्ध जुड़ता है और रक्त उसे तोड़ देता है। वेचारी कँवारी कन्या श्रीमान् जी, वड़ी उपेक्षित वस्तु होती है। लेकिन मेरी स्वयं की तो है। श्रीमान जी, यह मेरी एक वहुत ही नीचे दर्जे की भावुकता है कि जिसे कोई स्वीकार न करे

उसे मैं अंगीकार करूँ। अत्यधिक सहनशीलता एक छोटे-से घर में एक कंजूस को तरह रहती है श्रीमान् जी, जैसे समझ लो आपके ख़राव मांस में आपका मोती।

ज्येष्ठ ड्यूक : सच, वह अपनी वातें कहने में अत्यंत तत्पर और पूरी तरह गागर में सागर उँडेलने वाला है।

टचस्टोन : श्रीमान् जी, मूर्ख के शब्द रूपी तीरों के तथा उसके मूर्खता-पूर्ण कार्य्यों के अनुसार।

जेक्स : लेकिन सातवें कारण के वारे में। सातवें कारण पर आपने झगड़ा कैसे किया ?

टचस्टोन : सात वार हटी हुई झूंठ के ऊपर। अपने शरीर को और अधिक स्पष्ट करो औड़ी ! इस तरह श्रीमान् जी। मुझे किसी राजदरवारी की दाढ़ी का कटान पसन्द नहीं था। उसने मेरे पास सन्देश भेजा कि यदि मैं कहता हूँ कि 'उसकी दाढ़ी अच्छी तरह कटी हुई नहीं है', वह मानता है कि यह अच्छी तरह कटी हुई है। यह कहलाता है, शिष्टतापूर्ण प्रत्युत्तर। यदि फिर मैं उसके पास यह सन्देश भेजूं कि 'यह तो ठीक तरह कटी हुई नहीं है' तो वह मुझे उत्तर भेजेगा कि उसने तो अपने आपको प्रसन्न करने के लिये इसे काटा है। यह शिष्टतापूर्ण व्यंग कह-लाता है। यदि फिर किसी तरह 'यह अच्छी नहीं कटी है' इस मेरे विचार को उसने पस्त कर दिया तो यह निम्न कोटि का उत्तर कहलायेगा। यदि फिर 'यह अच्छी नहीं कटी है' इसका उत्तर वह देता है कि 'मैं इसमें सत्य नहीं वोलता हूँ' तो यह वीरतापूर्ण दोपारोपण कहलाता है। यदि फिर 'यह अच्छी नहीं कटी है' इस पर वह कहे कि 'मैं झूंठ वोलता हूँ', यह कहलाती है

'झगड़ेपूर्ण हाथा-पाई और इस तरह परिस्थित्यानुकूल झूंठ और सीधी झूंठ के लिये।'

जेक्स : तुमने यह कितनी बार कहा कि उसकी दाढ़ी अच्छी तरह कटी हुई नहीं है ?

टचस्टोन : मैं परिस्थित्यानुकूल झूंठ से आगे जाने का साहस नहीं करता, न वह सीधी झूंठ कहने का साहस कर सकता है, और इस तरह हमने अपनी तलवारों को नापा और एक दूसरे से पृथक् हो गये।

जेक्स : क्या तुम क्रम से झूंठ के अंश निश्चित कर सकते हो ?

टचस्टोन : ओ श्रीमान्, हम तो पुस्तक में लिखे नियमों के अनुसार झगड़ा करते हैं, जैसे तुम्हारे पास शिष्टाचार सीखने के लिये पुस्तकें होती हैं। मैं इसके अंशों के नाम तुम्हें अवश्य बताऊँगा। सबसे पहला 'शिष्टतापूर्ण प्रत्युत्तर,'[1] दूसरा 'शिष्टतापूर्ण व्यंग,'[2] तीसरा 'निम्न कोटि का उत्तर,'[3] चौथा 'वीरतापूर्ण दोषारोपण,'[4] पाँचवाँ 'झगड़ेपूर्ण हाथा-पाई,'[5] छठवाँ 'परिस्थित्यानुकूल झूंठ,'[6] सातवां सीधी झूंठ'[7] और उसे भी तुम एक 'यदि' लगाकर टाल सकते हो जबकि मैं जानता था कि सात न्यायाधीश भी एक झगड़े को तय नहीं कर सकते लेकिन जब दोनों दल मिलाये गये तो उनमें से एक ने इस 'यदि' के बारे में सोचा जैसे 'यदि तुमने ऐसा कहा तो मैंने ऐसा कहा' और उन्होंने हाथ मिलाये और एक-दूसरे को भाई बना कर आपस में शपथ खाई। तुम्हारा 'यदि' ही शान्ति स्थापित कर सकता है। 'यदि' में बड़े गुण हैं।

---

1. Retort Courteous 2. Quip Modest 3. Reply Churlish 4. Reproof Valiant 5. Countercheck Quarrelsome 6. Lie with Circumstance 7. Lie Direct.

जेक्स : मेरे स्वामी ! क्या यह कोई विरला पुरुप नहीं है ? यह प्रत्येक बात में अच्छा है फिर भी मूर्ख है ।

ज्येष्ठ ड्यूक : वह अपनी मूर्खता को एक कपड़े के घोड़े की तरह प्रयोग में लाता है और उसके नीचे अपने आपको छिपा कर अपने वाक्-चातुर्य्य के निशाने लगाता है ।

[हिमैन, रोजालिन्ड तथा सीलिया का प्रवेश]

—गीत—

हिमैन :

[गीत का मूलार्थ :
स्वर्ग में होता है सब आनंद
जब पृथ्वी पर वस्तुओं का
मिलन होता है,
अच्छे ड्यूक ! अपनी पुत्री का
स्वागत करो,
हिमैन उसे स्वर्ग से लाया है,
यहाँ लाया है ।
तुम इसका हाथ उससे मिला दो
जिसका हृदय इसके वश में है ।]

—गीत—

देख मिलन इस पृथ्वी पर
होते हैं वे स्वर्ग सुखी !
आओ प्रियवर उन्हें मिलाकर
एक करो वे रहें सुखी !
एक वक्ष में जब रहता है
दोनों का दिल मिला हुआ,
उनको दूर करो तुम क्यों कर ?
उनको करना सदा सुखी ।

रोज़ा० : (ड्यूक से) मैं स्वयं को आपके समर्पित करता हूँ क्योंकि मैं तुम्हारा हूँ। (ऑरलेन्डो से) मैं स्वयं को तुम्हारे समर्पित करता हूँ क्योंकि मैं तुम्हारा हूँ।

ज्येष्ठ ड्यूक : यदि मेरी दृष्टि में सत्य है तो तुम मेरी पुत्री हो।

ऑरलेन्डो : यदि मेरी दृष्टि में सत्य है तो तुम मेरी रोज़ालिन्ड हो।

फीबी : यदि दृष्टि और आकृति सत्य हैं तो मेरे प्रेमी, मेरे प्रेम को अलविदा क्यों ?

रोज़ा० : यदि आप (ज्येष्ठ ड्यूक) वे नहीं हैं तो मैं किसी को भी अपना पिता स्वीकार नहीं करूँगी। यदि तुम (ऑरलेन्डो) वही नहीं तो मैं किसी अन्य को अपना पति नहीं बनाऊँगी न कभी किसी स्त्री का विवाह कराऊँगी यदि तुम (फीबी) वही नहीं हो।

हिमैन : शांत। मैं सारी उलझन दूर करता हूँ। मैं ही इसका उपसंहार करूँगा। कितनी विचित्र घटनाएँ हैं। हिमैन के दल में मिलने के योग्य यहाँ आठ हाथ हैं। यदि सत्य के भीतर तथ्य है, तो तुम दोनों में कोई व्यवधान नहीं रहेगा। तुम्हारे हृदय मिले हैं, प्रेम में एकता है, अपने स्वामी को स्त्री दिलाओ। तुम तो निश्चय एक हो, वैसे कुऋतु और रीति एक हैं। हम विवाह-गीत गाते हैं। सवालों की भरमार करते रहो, तर्क भी अपना विस्मय छोड़ दे कि मिलन कैसे हुआ और समस्या का अंत हो।

—गीत—

[गीत का मूलार्थ :

महान जूनो देवी का राजमुकुट
विवाह है,
परस्पर मिलन की प्रतिज्ञा, ओ
श्रेयस्कर प्रतिज्ञा !

यह हिमैन हर जगह रहता है,
विवाह का सम्मान हो,
महान् सम्मान हो इसका,
यश हो,
हिमैन, प्रत्येक नगर का
देवता है।]

—गीत—

परिणय ही सर्वोच्च मिलन का नाम है,
यही देवताओं को प्रिय अति काम्य है,
काम ! काम ही तो सर्वत्र निवासता,
गाओ उसका यश अगजग में भासता,
सम्मानित है यह मर्यादा प्राप्त है,
परिणय में ही स्वर्ग-धरा-सुख प्राप्त है।

ज्येष्ठ ड्यूक : ओ मेरी प्यारी भतीजी, आओ स्वागत, मेरी पुत्री से किसी भी तरह कम तुम्हारा स्वागत यहाँ नहीं है।

फीबी : मैं अपने वचन को नहीं तोड़ूंगी। अब तुम मेरे हो। तुम्हारे विश्वास ने मेरे प्रेम को जीत लिया है।

[जेक्स डी बॉयस का प्रवेश]

जेक्स डी बॉ० : मेरे एक-दो शब्द सुनिये। मैं सर रोलेन्ड का द्वितीय पुत्र हूँ जो इस सुन्दर समुदाय में ये समाचार लाया हूँ। ड्यूक फैड्रिक ने यह सुन कर कि बड़े-बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति नित्यप्रति इस वन को जा रहे हैं एक शक्तिशाली सेना को आदेश दिया था और वह उसके सेनापतित्त्व में उसके भाई को यहाँ पकड़ कर तलवार के घाट उतारने के लिये पैदल आ रही थी तो इस वन के किनारे ही उन्हें एक वृद्ध धार्मिक वृत्ति वाला मनुष्य मिला।

उससे कुछ बातचीत करने के पश्चात ड्यूक अपने इस विचार से और संसार से भी पूरी तरह बदल गया। अपना राजमुकुट वह अपने निर्वासित भाई को समर्पित करने आ रहा है और जो भी उसके साथ निर्वासित हैं उन सबको उसने उनकी जमीनें वापिस दे दी हैं। मैं अपनी सौगन्ध खा कर कहता हूँ, यह सब सच बात है।

ज्येष्ठ ड्यूक : स्वागत है नवयुवक ! तुम अपने भाइयों के विवाहोत्सव पर अच्छी भेंट लेकर आये हो। एक को अपहरण की हुई उसकी सारी भूमि और सम्पत्ति-जयायदाद और दूसरे को एक बड़ा भूभाग, एक शक्तिशाली साम्राज्य। सबसे पहले हमें उन सभी कार्य्यों को पूरा कर लेना चाहिये जो इस वन में ही अच्छी तरह प्रारम्भ हुए तथा संचालित हुए हैं और इसके पश्चात हममें से प्रत्येक जिसने भी आपत्ति-भरे दिन और रात हमारे साथ बिताये हैं, अपनी-अपनी जागीरों की स्थिति के अनुसार हमारे पुनः प्राप्त हुए भाग्य में से अपना-अपना भाग बटायेगा। कुछ समय के लिये इस पुनः प्राप्त हुए ऐश्वर्य और मान को भूल जाओ और अपने उसी ग्राम्य जीवन के आनन्द में विभोर हो जाओ। खेलो, गाओ और तुम सभी वर और वधु पूरी तरह आनन्द में अपने आपको खो कर नाचो।

जेक्स : श्रीमान् जी, आपकी आज्ञा से ही कहता हूँ। यदि मैंने सच सुना है तो ड्यूक ने एक संन्यासी का जीवन धारण कर लिया है और राजदरबार की शान और दिखावे को उसने त्याग दिया है।

जेक्स डी बॉ० : हाँ, उसने ऐसा ही किया है।

जेक्स : मैं उसके पास चलूंगा। इन परिवर्त्तनों से तो बहुत कुछ सुनने और सीखने को मिलेगा। (ड्यूक से) मैं आपको अपना पूर्व

गौरव लौटाता हूँ। तुम्हारा धैर्य्य और तुम्हारे गुण इसके अधिकारी हैं। (**ऑरलेन्डो से**) तुम्हें तुम्हारी प्रेयसी देता हूँ क्योंकि अपने सच्चे विश्वास के कारण तुम उसके अधिकारी हो। (**ओलिवर से**) तुम्हें तुम्हारी भूमि, प्रेयसी और सभी साथियों को। (**सिल्वियस से**) तुम्हें एक लम्बे और तुम्हारे योग्य बिछौने को। (**टचस्टोन से**) तुम्हें विवादपूर्ण झगड़े को। क्योंकि तुम्हारी सुन्दर समुद्री यात्रा में केवल दो मास के लिये ही भोजन की व्यवस्था है, इसलिये अपने-अपने आनन्द में मग्न हो जाओ। मैं तो नाच के सिवाय अन्य आनन्द की वस्तु के लिये हूँ।

ज्येष्ठ ड्यूक : ठहरो जेक्स, ठहरो।

जेक्स : मैं किसी मनोविनोद की वस्तु देखने के लिये नहीं ठहरूँगा। जो कुछ तुम करोगे उसे जानने के लिये मैं तुम्हारी उस छोड़ी हुई गुफ़ा पर ठहरूँगा।

ज्येष्ठ ड्यूक : आगे आओ, बढ़ो। हम विवाह की इन रीतियों को प्रारम्भ करेंगे क्योंकि हमारा विश्वास है कि इनके समाप्त होने पर हमें सच्चा आनन्द प्राप्त होगा।

—उपसंहार—

रोजा० : किसी स्त्री को नाटक के अन्त में उपसंहार के अवसर पर प्रगट होने का कोई प्रचलित नियम नहीं है लेकिन यह पुरुष के नाटक के प्रारम्भ में प्रगट होने से कोई अधिक भद्दी बात भी नहीं है। यदि यह सत्य है कि अच्छी शराब के लिये कोई सिफारिश की ज़रूरत नहीं रहती तो यह भी सत्य है कि एक अच्छे नाटक के लिये किसी उपसंहार की आवश्यकता नहीं रहती, फिर भी अच्छी शराब के लिये वे अच्छी सिफारिशों का प्रयोग भी करते हैं और इसी तरह अच्छे नाटक भी अच्छे उपसंहार की

सहायता से और भी अच्छे सिद्ध होते हैं। तब मैं किस स्थिति में हूँ जो कि न तो अच्छा उपसंहार ही हूँ और न नाटक की स्वयं सिफारिश करके मैं आपका कृपापात्र बन सकता हूँ। मेरे वस्त्र भी एक भिखारी जैसे नहीं हैं इसलिये भीख माँगना मुझे शोभा नहीं देगा। मैं तो केवल आपसे प्रार्थना कर सकता हूँ और मैं स्त्रियों से प्रारम्भ करूँगा : 'ओ स्त्रियो ! उस प्रेम के लिये जो तुम पुरुषों के लिये रखती हो मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम इस नाटक को जितना अधिक पसन्द कर सको करो। और ओ पुरुषो ! उस प्रेम के लिये जो तुम स्त्रियों के प्रति रखते हो मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ क्योंकि तुममें से कोई भी, जैसे तुम्हारी मुस्कराहट व्यक्त करती है, उनसे घृणा नहीं करता, कि तुम्हें और स्त्रियों को यह नाटक प्रसन्न करे। यदि मैं होता तो मैं तुम में से अधिकांश को जो दाढ़ी रखते हैं और जो मुझे अच्छे लगते अवश्य चूमता और साथ में उनको भी जिनका रूप-रंग मुझे पसन्द आता तथा उनको भी जिनकी श्वासों को मैं पसन्द करता और मेरा विश्वास है कि जितनों के भी अच्छी दाढ़ी है, या अच्छा रूप है या मीठी श्वासें हैं वे मेरे नम्र निवेदन पर मुझे विदा देंगे।'

[प्रस्थान]